मैकती काया : मुळकती धरती

मैंकती काया
मुळकती धरती

अन्नाराम 'सुदामा'

प्रकाशक धरती प्रकाशन, गंगाशहर, बीकानेर (राज०)
मुद्रक माहेश्वरी प्रिंटिंग प्रेस, बीकानेर-३३४००१
संस्करण (द्वितीय) १९७६/मूल्य सोलह रुपया/आवरण सान्

Maikati Kaya Mulakati Dharti (Rajasthani NOVEL)
By Anna Ram Sudama Price Rs 16/- only

दूजै संस्करण रै बारै में

—उपन्यास

'मैकती काया मुळकती धरती' रो पैलो संस्करण १९६६ में छप्यो। देढ दो बरसा मे, आधी नैडी किताबा तो, यार-दोस्त अर जाणचीणआळा नै बटगी अर आधी नैडी बिकगी। धणी नैं तो मिलग्यो मूळ, अर मुनाफ मे खरचलिया सैंपा अर साईंना। दोनूं ही राजी, ई सू बढिया बापार और काई हुवै है, पण मजै री बात आ हुई, कै माल नीवडता ही, माग जोर चढगी। महीनै मे दो पांच कागद ता, राजस्थानी प्रेमी पाठका रा नैडै अळगै सू आवता ही अर ओजू ही आवै इक्का दुक्का। एक दो जागा पोथी, पाठचक्रम मे भी लागी कठै ही, पण पोथी ही हुवै कठै ही? बात लारलै आसरा जाणी ही, बा गई। लाचारी अर सूकै जवाब र सिवा चौंनै ही भेजू तो भेजू हीं काई? हाथ पग समै, जद छपै पोथी, बा बिध बैगी सी बैठ को सचीनी। मनसूबो करता करता बरस रा बरस निकळग्या, तो ही पाठका री माग ता आवती ज्यू ही आवै। बारी भावना रो सत्कार तो बरसा पैला ही करणो चाईजै हो पण अणहूत आठै सू ही काठी हुवै है। चलो अवै ही पार पडी तो ही ठीक व ता राजी ही हुसी, म्हार मने ग्याने, उदारता वारो सभाव है। आ सोच'र ही ओ दूजो संस्करण छापणो पड्यो। आशा है, बानै, ओ दाय आसी।

—लेखक

पैलै सस्करण सू

थोडी म्हारी ही

पोथी लिख्या नै साढी तीन साल सू ऊपर हुग्या पण छपाणी किसी म्हार बाबैजी रै सारै ही। लिख परा, पाना पैला तो केई दिन लट्टाण पर एक छावडकी म राख्या। बोदी अर कच्ची माळ ही, ऊपर सू मुरड अर माँकर भरता बा पर। इक्यांतरै दूजै बांन इया भडकावतो, जिया दियाळी नै कोई दुकानदार साव पोचै माल नै हाळै होळै भडका'र, अधर सै राखतो हुवै। तो ही दो एक पाना तो ऊजड ही ग्या। कुण जाणै कियाँ ऊजडया, किस्यो पोरो थाडो हो बैठायोडो हा पण मनै वैम आवै, कै घर म कण ही, की टीगर रो सीढ साढ पूछण रै काम ही लिया है बानै। कीन कैऊँ अर कुण म्हारी सुणै, लोगा न आपरी सू ही फुरसत को मिलनी। चोखो, हुई सा सिर पर।

बठै सू पाना न सावळ निकाळ, एक बोदी सी मटकी मे मेल, ऊपर एक ढकणी देदी। अब हूँ इया निरमै अर नचीता हुग्या जियाँ कोई बूढी बिणीयाणी तसानै री तिजूरी म तवटो राख'र हुव।

छोरा एक वारवी म पढ़ हो, वीनै मैं गुरसराप साम्या वाल्या, 'कोई पोथी लिखी है कोई ?'

तस्सियो लियो ता है, पण किसो पार पड़ै है र ?'

लिया ही कर छपावा जद हुवै ।'

कोई कैवूं वीनै ? मन मे सारूं मण्टी मे ता जुंमां ही को लाधनी, माथै म दियो फीचो बोल अर इनै चाईजै पोथो—वैगोसी छपी छपाई। पैला घर म राजगो लाऊँ का पाथी छपाऊँ। पोथी तो नहीं छपायां ही मर है अर सर ही चोक्सी, पण परसाद दिन म तीन बार चाईजै, बो जे मिष्ट हो नहो हुवै ता टीगर पाडास्यां री हांडी काढ़ण त्यार। पोथी छपायां वा वीरै बावजी रो आसो अर पाथी वापडी किसो पांवती ही बाजरी री बोरी जण दमी।

तिणसा कानी मू साव हूरहूर है। इत्ती मिलै कै न तो सास ही नीरळै अर न मोरा ही मावै। जे छठै छमास कदेई दस पांच ज्वरै तो अगळै मईन सागै ही वीस तीस रो दरडो त्यार। जियां हीजडां री कमाई मूंछ मूंडाइ म जाव, वियां ही म्हारी यचत तो छोर रै एक टैरैलीण रै टी-सट म कठै ही आवै जावै, सीडाई भळै उधार राखणी पडै। छोर एकर कैयो, हूं आप टैरलियन री पैण्ट करास्यूं, अजकाल सै छोरा करान।

'करा भला ही मैं कैया, 'पण पैण्ट रा आधो पाखा ईं साल इ अर आधा, अगल साल करणा पडसी। म्हार सूं तो एक साल म एक ही पाखो पार पडसी अर वोरैलीण[1] री करावै जदस भला ही आज ही दरजी कन चाल।' छोरा पछ काई कवतो मूं मिरकली सो कर, वोईजा।

म्हारो म ओ हाल है कै मारकल री पिचर कढावण नै नुवो पइसो ही कन लाधै किसी पोल पडी है घणा सोध्या गू जो भला हीं फाटो पण

---

१ टाट, बोरी।

पड्सो मठै ? दादी रै चस्मै रो एक काच टूटग्यो ग्रर एकै कानती डाडी। डाडी री जाग्या तो बापडी डोरडी घालली पण काच री जाग्या रिपियै जितो काचरो पाधरा ही पडयो हो। उडीकता उडीकता बीं ग्रांख ग्राडो काच फिरण लागग्यो पण चस्मै मे काच वो घलाईज्योनी। ग्रा हाला मे पोथी ग्रबै च्यानणैं मे किंयां ग्रावती ?

वारै मईना डोढ बरस भळे इयां ही नीकळग्या। मैं नही कैयो तो हो एकाध भाएलै पापल नैं की ठा लागग्यो। वां ही खासा कान खाया, "भाईडा, पोथडी तो जियां किंया छपांणी ही चाईजै, देखा तो म्हे ही।" "वाता मू तो" मैं कैयो 'की वट्ंनी, भाएला हो की मदद थे ही करो।"

"पक्की रई तूं पोथी छपामी जद एक एक पोथी म्हांनैं तो इयां ही देसी ही—छेकड भाएला हा—म्हे वीन खूब प्रेम सू पढ परा, लोगां नैं थारी सुपारस करदेस्यां। इ सूं बेसी ग्रौर तो म्हे कांइ मदद करां थारी ?'

मन मे तो मैं कैयो 'मुपारस नैं हूं कांइ चाटूं सैंत लगा'र, बाघ माठो र कुग्रैं मे वो पडोनी थे, था जिसा भाएला स ही मिलग्या तो ऊघ-डग्या म्हारा तो" पण मूंढ सूं ग्राही कैई, 'साची पूछो तो थे म्हारो जी सोरो कर दियो, मैंगाई री ईं वेळापुळ मे ग्रा इत्ती मदद थोडी है थारी, म्हारै भाग रा ये जीवता रैया, ठण्डो वायरा ग्रावै थांनैं भाएला हुवै तो था जिसा ही हुवै।

गामदेजी नैं मिल्या जिका सैं ग्रेक ही डोळ रा ग्रै भागग भागवानी मे मूं दो पग ग्रागीनैं ही हा। 'वठा राधा नैं याद करा छपगी हुग्रा पोथी।' ता ही म्हार मांयली ममता ग्रापरो काम करणो बन्द की दियोनी। उल्टी ही जिकै सूं ही घणी खायी पडगी। छपता ही हजारी परसाद ही हुग्यो समझो।

एक दिन मोच्यो पाना न सावळ जचार ता राखा कदास गूंगळा री ही कदेई बान बठण री वळा ग्रावै ? लिलाड तो था पूंछ र त्य र रागा

काई ठा कुण कद टीके नै हेनो मारनै ? बस, फट बिना सरोवै ही ढकणी परियाँ कर पानां काम्प नै हाथ घालो ही हो का बिहवै मोरचै ही बिहूनी रै काई लिगनर चैंठग्यो जाणू मनै वासीजवारी खातर उडीक्तो हो हो। लिलाड री नाडाँ डोका मी खडी हुगी अर हाथ रै माळ लागी तो इसी जाणै कोई कीरो नी वेध दियो हुवै। तुळी लागगी पोथी रै, बणग्यो हूँ तो हुणुँ हीं हजारी परसाद। ढगगी है जिया ही ऊपर धरदी। रोऊ तो ही किया ? ठा पडसी तो हुसइ तो प्यारी हुसी घर काम्हो भळै लागस्यूँ। मा ऊपर सूँ कैमी 'मटकी कै घड काई धाका देवै हो मनै जीवती न ही।, ग्रांख्या ग्राडी रात प्रावै ही बूरियो एकाही तरडावै हो। दांत भीच'र बारै दौडयो। मांय रो मांय रा कूक कियाँ ही रात काढी। कदेई चूडी[1] लगाई कदेई वांचळी[2]। ग्रबै पाथी कानी सू दुधे मन फाटचा जिया भुग्राजी न मरता देख मौत सू। ग्ने ढाई मईना बीतै जावण री जी मे ही को ग्राईती।

इया पडी पडी नै तीन बरस सू ऊपर हुग्या पोथी नै। नाना एक दिन कैंगे हो 'बामण बोरो वतेरी हुवै रे, काम बीं सूँ का हुवैनी। मनै मा सोढूँ प्राना ठीक लागो। वाता वाता में तीन बरस सू घणा टिपा दिया। ग्रोजू लिख्याडी पोथी को छपाई जी नी। पळगोड म ता पढँ मणा है। जी नै जरू कर मटकी नै ऊँधी करी तो सरी पण सिध नाव सू ही बिच्छू रो डर घणो लाग्यो। छेकड बोदी जळेवी रै छोटै खोटळै सी बिच्छू री पोथी काया दीसी जद जी मे जी ग्रायो।

एक एक पानों घपर घपर उठार भडकायो तो ग्राख्या है जिया ही रैयगी, जी दोरो हुयो तो इमी कै काळजो बारै ग्रासी। कम सूँ कम दस पाना तो ग्राघा घर दा तीन सगचा ही कमारयाँ इयाँ चाटगा जिया छोटो छोरो रावडी रा हाथ चाटै। दो एक पाना कोई एकाध ऊदग्डो कतर दिया गीवे हा। मनम कयो ग्रो माटो ढूळन रो ही है। ज वई दिन भळ

---

[1] चूगी —चूगी वाज गी [2] वाचळी—साप री

नही सभाळतो तो पोथी छपी छपाई त्यार लाधतो । अवार एरर केई दिन मटकी नै खोनणी नही ही। बाळचा आनै झडका झडका करदई कठ ही रारया करदेई कठै ही । आंनै इयां जाग्या बदळाई जिया घण बेमार नै हीडो करणियां पसवाडा बदळावै । इसा ठा हुता तो क्यो फाडा देखतो ?

घरआळी पर आंग्यां लाल करी मसळ'र । आपेही लाल हुवै अब थे आंग्या ही कठै ? 'मटकी उघाडी राख दी कसारचा अर उन्दरचां कनै सू किरा उजाड करायो है-ओ ही की ठा है- चौपट कर दियो मनै तो ।'

'इत्ता तो आधी राड ही जाणै कै ढकणी रो जावतो हीं नाइ जाबतो हुवै—हूं रसोई रै ताळो राखू मारो दिन अर कूंची तागडी रै, तो ही गयै जिता जिता ऊ दर वडया बिना की मानैनी—थे कसारचा री वात करो ।"

मा नै ठा लाग्यो बोली, 'खाया तो रांडरा पाना ही है का लोट हा मी सौ रा जिको इतो जी उपाडै । घर रा पूर खाईजता जिकै मू तो अ पाना खायोडा आछा ।"

हू अवै काइ बोलता ? मसळ'र लाल कियोडी आरया इया ही गई वेभाव म्हारी तो, चोखा ।

अब म्हारै मे नै वो जाम हा अर न विस्या कोड अर कल्पना ही । ता ही ममता आजू को मरी ही नी, पागर ही बोकरी, खायोडी बेल विरगा सू बगी-बगी पागर जिया ? पाना नै किया पूरा किया किया बताऊं, भाटा अर उबासी लेवता कोई बूढो जपियो बिना मन, वगो बगो माळा रा मिणिया पूरा करतो हुवै जिया । वणाऊ तो चाव हो सीरा, वणनी गुडराबडी अर वा ही भळै भागरी जाग्या-जाग्या जिपगी, गुठला न्याग बंधग्या कठै कठै ही । न सीर रो स्वाद अर न गुडराबडी री गटक । कार उपाव । चासणी है बिगडी र बिगडी ।

पाधा मन ध्यान पूरौ करती, पण छपावती वेळा भठै विचार भ्रायो क ग हजार पन्न सौ मार्थ गटी कर, पोथी ग्रापा छपावली अर बीन रुपियें री दो ढाई सर री नावड दिया हो, पण ही नही भाली ता मुन्न वांर घणा मुश्कल हुसी। किताब चाटी री हुसी या नही पण ग्रापणो चानो लाग पक्कायत गचसी। यादी चाटी है पैलें हिचकै ही सूस'र हाय म श्रायगी तो पेर उगणो ही घासी है, अर फर हा मुण जाण लागा न दाम ग्रावक नही ग्राव। रोग रिस्या एक है पण गर, देग दाता, करसी ठाकुरजी।

दूबळ न कित्ता दुग्व है, इ रा मनै कॉई ठा? पाधी है जिसी ही छराग्या ग्रागी ग्रा म्हारै, लाताचुट जचगी। छापाखानै ग्राळै रै गयो। घर गिसो जाणे हो। वाई वूढी ठेरी बिना मनस्या बैवती 'जावरो जावरा ग्रगली गळी म वाइ क, पैली छाट दूसरी म।' एक जवान सी नारया फुला र वोती मनै भ्रोग ही ठा नी, हूँ थोरी नीग निगे राखती फिरूँ।"

मन मे करघो पाथी पडी कुग्रै मे, इसी नागी ग्रर नकचढी रण्डार ग्रावैनी चप्पत वाढ र कठ पुरसणा सुरु नहा करद-रीस की पर ही उतारसी कठ ही नु वी चप्पल ह, पैली ग्रजमास ग्रापा पर ही सही। ग्रापणा भीडू ग्रठै कोइ, माइक पर बोलया ही को लाध लोनी। घणखरी गळी उल्टो हाथाँ रा बट ग्रापा पर ही काढली। शिरो म राघव पातु म ता पाछा घिर लारीन नळे ग्राज ताइ को देख्योनी। एक गळी मे एक लट्टी गाभा वत लेवती। मिनखा नाव सूँ ही गळी ग्रर गुवाड रा ग्रै सिंघ तक्डा।

ढू ढता ढू ढता निठ घरिया ताध्यो। घर गाँई घरकालिया हा—एवं राम्डी सी गळी मे। गण्डक री घु'गी सू ही माडो पण ग्रापान इ सूँ काँई? गाइसन्स गार छाड हता मार माय गया। म्हार दाद साइना एक उँणिया हा। पाचक मिण्ट वात करी, वारया डाडेक हजार नडा

वैठसी । मनम क्या, जे आपा दाना नै बेचै अर बच ही बोकरै त री इता वा बट्टनी । पोथी रा पनर सा । छपगी हुआ चाला ।

वारै आयो तो एक सूगली अर दूढी सा ढाढी साइक्ल पर पडयै येलै नै चिपळ ही । थेल म च्यारेक थेला हा टाबरा खातर अर पोथी री ही पाण्डुलिपि । ढाँढी चिगळ चिगळ केळा री तो किना च्पए री लेई सी करदी । देखता ही म्हारा तो गोटा सा टूटग्या, लै भई जीवडा फिरता फिरता आज पाथी छपगी । ाढी जीमगी है जद ता भळै पोथी पाठा म ही की लाधैनी पण भगवान भली करी की तो ढाढी वाखी लागी की थेला जाडो हा । फाईल रा खाली ऊपरलो गत्तो ही खराब हुयो । पोथी अवै छपाणै मे ही फायदो है आ म्हारै जचही पण ई खातर फोडा मनै इता पडया जिता की राणी अर कोभी छोगी खातर बीन ढूँढण मे ही वा पडैनी । आ बात मूळ पोथी सागै इया जुडयोडी है जिया एक नवरू सागै दो चोरिया ई खातर मन लिखणी पडी ।

नानी एक दिन पूछ्या मन 'अच्छया बता गोरधा आपा नै घणा डर की सू ?'

चीण सूं ।'

'जा रे जा, तता माचेली वामण सपमपाट आळी ही कर दिखाई, हूँ पद्, इत्ती ताळ म्हारै माईता नै इयाँ ही रोई ?'

कियाँ नानी ?

'रिया वाई म्हारा मिर, आपानै, न डर चीण गे अर न बापडै पाकिस्तान रा ही—अर भळै जूँ गितो ही नही । आपा नै तो जद कद सगळा सू मोटी डर है एर आपा सू ही ।'

'आपान आपा सू ही डर, नानी म्हारै तो की समझ म आईनी ।

'नहीं समझ मे आई तो चोखी ही बात है   लारै सू लगा'र अबार ताईं तो देखलै आख खोल'र अर आगै टैम आवै ज्यूं ज्यूं देखतो जाए अर समझतो जाए।'

नानी एक दिन साढी तीन च्यार साल पैला कै परी आख मायली पण बीरी बात जिती आज म्हारी समझ म आवै, बी बळा इत्ती की आईनी अर लक्खण देखता आगै और घणी आसी ।

देस नै सुतन्तर हुया आज बीस बरस नैडा हुसी आजूं प्राता रो फैंटवाड़ ही तावैं को आयोनी, आए साल की न की फोर बदळ हुव, कोई न कोई नुंवो प्रा त वणै, बण्यां ही किस्यो पिण्डो छूट, भळै नुंव खातर बा ही खैंचाताण सुरू। लाघ लाधगी लोगा नै, अबै की रैं सारू ?

भासा री भूतणी'स इसी बडो है लोगा मे कै पूछो ही मत ! फोडा घाल ही बोकरै। आए दिन भिर फूटै खून खिण्डै बाळनो, बूरणा काईं ठा काईं काईं हुव ? ईं धरती री ऊगती उठती पौध मैक बिखेरण सू पैला ही ईं धरती र मानखै सू कटै—मिटियामट हुवै, हद हुगी। नुक्साण रा आकडा छापा मे भला ही देखो आपणै आख ही समझ मे आवै आ किया ?

हूँ सोचूं भासा बापडी कीनै काईं कैवै। पढता लिखता कुण कौन ही पाले ? जरमनी, फ्रांस अर इगलण्ड मे ता लाग सस्कृत रा इसा इसा पिण्डत हुवै क आपा आळा टीपणबाज बां आगै भरसमारै। अठै म बारखडी नही जाणै वै ही भासा र रोळै म तो बूरिया ठाक'र त्यार। अब इ रा काईं इलाज ? कीं रो ही समझण रो मता ही नहीं हुवै ता कुण काई कर ? सै सागै चाला सै सागै बोलां (संगच्छध्वं, संवदध्वम्) वेद कैइ, बन रो बाप कवै तो आपा किस्या माना। कुण जाण ओ रोळो कठै जा र रुकसी अर काइ ठा किस्योक बोझो फळ भागणा पडसी इ रो आपानै ? पन अर पन्गो जितोक नीच आपान लगासी, अन्दाज म ही का आवनी।

कुरसी वधै दफ्तर साँकड़ा हुवै, फाईला रा पेट ऊँचा उठै, मानखे रा चिपै अर चुसै, कागदा मे साख सागीडी जमानो चोखो, जमीन मे पटक्या काम मरै, प्रेम कम परचार घणो, विधान मे जात पांत रा जोर कम, चौडै बी विना पार ही को पडैनी मिनख दवै पौसाक उठै, भागवान घणा भागवान हुवै, गरीब और गरीब, पिरथीराज बापडा दुखी दोरा, जैचन्द बैठा चूम्मा करै गूँजा भरै, नागा रा प्रान्त वणै सूधा नै गिण्डक्जी ही को पूछैनी सिख दरसण नै ही को राधैनी, गुरु सगळा ही।

लखण माडा कांइ धाप'र माडा, तो दोसी कुण ? आपा-आपा खुद ही। सगळा एक पट्टी दौडै। धरती री अवाज कुण सुणै—कुण पिछाणै ? फुरसत ही कीनै ? नानी री बात अवै म्हारै सावळ समझ मे आवै। काइ ठा तो लोग, जाण'र को सोचैनी अर कांइ ठा, वै धरमादै री दवाया अर धरमादै रो धान खा-खा पळगोड बामण आळै दाई पूरा पूग्योडा हुग्या।

तो ही सफा नास्ति का है नी। है माई रा लाल ओजूं इसा घणा ही, जिका इ जलमभोम री आसीस नै दौडै रात दिन, जीवै बी खातर अर मौको आया मरै बी खातर हँस हँस र। वाँरी काया सूं मैक उठै पारिजात सूं वेसी, फेर धरती मुळकै अणमावतै मोद सूं। वाँ रो साथ देणो ई धरती री मूळ भावना पिछाणनो है। धरती रो उपगार भूलणो मा रा हाँचळ वाढणै सूं ही माडो, घणो माडो है। जलमभोम री आसीस मे ही आणन्द है-आणन्द मे ही ईस्वर है अर ईस्वर आवी धरती रो सुख-दाता है। इ खातर पला श्रीगणेस जलमभाम री आसीस सू ही करणो चाईजै। 'उपमप मातरम् भूमिम्' जलमभोम री सेवा कर जलमभोम सू जगत जुडयोडो है, इ सूं ही जगत अर जगदीस्वर दानूं राजी हुसी ओ ही पोथी रो मूळ है। हूं समझूं पोथी राजस्थानी जाणनिया नै इ धरती रै प्यार खातर को न की ऊँचो ही उठासी। उठासी तो समझो, न मैनत ही अकारथ गई

अर नैं वेली सनैया गे मैंयोग ही । पोथी किसीक है, भा हूँ किया कैऊँ, आ तो पोथी रा प्रेमी अर पारखी, निरमळ अर निरापेखी जन ही जाणसी ।

हा आ बात जरूर है क, पोथी म जित्ती माछी अर ओपती बात है वो गुरु रो आसरीवाद समझो अर माडो है वा म्हारी, आ बात समझण री जादा अर ढोल पीटण रो कम । बस, इतो घणो

अन्नाराम 'सुदामा'

उदयरामसर (बीकानेर)
२३-१०-६६
विजै दसमी

एक

"टींगर इमा मिजळा मरै है क वाढी ग्रागळी पर ही को मूतैनी। काम खातर बतळावा भीत बोल तो ग्र बालै—माठा ठीकरा ग्रर गिट्टण नै दिरूग सूणा त्यार—जाणौ ग्रागानर म काई डूम ढाढी बळना हा। कोरा दळिय रा ठाव बळै बाळनजोगा। घर म इत्तो मीठा—चूठा बापरै पण ग्रा वैठां दूसरो कोई भोरो ही चाखल किसी पोल पडी है—सगळो ग्रा रै पेटां मे ही बळ ऊरीजै—इचरज रा ईण्डा करसी ग्र 'याल। सऊर सीढ काढण रो ही कोयनी नास्यां भरती रैव छाटा छिडकै म कादै री मोख्यां भरै ज्यू। डाळियो ग्रा ग्रो है तो ही शोखीनाई नै पानी ही को ग्रावण दै नी, तेल थेथडसी इत्तो कै भैरूंजी हुया रैव—भोड चासणी रै गळनै सो चिपचिप कर तो ही सीचणो किस्यो भूल, खरचै रा खोगाळ! रामरूसै जिक र ग्रा फाको जरामै। खायम्या मनै तो सेक'र ग्रै! घर मे एक बा सूं ता की सक ही है वाकी मनै ता ग्र जूं जितो ही की गिणैनी—राबडी रोटी कर राखी है।"

मा रो भासण पूरा हुयो ही—इत्तै मे हो ग्राठ नौ साल रो म्हारा छोटो भाई *हरियो ग्रायो। देखता ही बोली, 'हरि तूं ग्रा बेटा—थाडो*

सुथारी वडिया रै घर ताई जाणा है ।"

'अबार म्है सू' का जाईजैनी", लिलाड म सळ घाल बेटै इ जुगती रो जवाब दियो जाणैं अबार ही ईन बचेडी पूग'र कोई इनवम टवस रा खातो विसाणो हुवै का इ रै चॅवरी री वेळा टळती हुवै ।

आव बेटा ! आव हरी तो भळे ही स्याणी है–क्यो कर बावा ता कुत्ता न नाखै जिस्या है । आव तनै मूँगफळी दस्यूँ ।"

मूँगफळी थारी काठी राग मनै को भावनी ।'

चूल म एक शक्करकन्द ओट राखी ह–ओवतै पाण तन दस्यूँ–दूसरो लेजै ना ओ ।"

आगी वाळ शकरकन्द थारी का चाईजनी मन', कह'र बो टीगरा सागै दाडग्या ।

ठीक है मत आ ना तूँ, घर मे वडै पाछो, चूल आगै आए तू, जे बेलण रा भाड रै सुर्यं विचाळै न मचकाई, तो मनै कैए । सरायोडो खीचडी दांता चड–बाळनजागै नै सरा दियोनी । है तो बा रूवां रो छोडो ही–आछो कठै सूँ हुसी ।"

अ सगळी बातां हू डागळै बिण्डी सारै खडो देखै अर मुण हो । अदीतवार हा । पाळ री मौसम ही । तावडो लेव हो । आभै पर कठ-कठ ही भिणदर मलमल सा हळका पतळा वसवाड तिरै हा–कदे-कदे सूरज आडा आवता जद, आक मा सारा लागता । टम टम री पाप है–जड वैसाख म आंन अडीकता अडीकता आंख्यां थाकी ज्वै अर अबार अ वसवाड ही को सुवावैनी । हू नीच आयो–बोल्यो 'कांइ बात है मा ?'

"क्यांरी बात है रे ! पडी टीगरा सू छानी छालू हू ।'

"ला, थांरै काम है–हू करद्यू ।'

"तूं बूढो सारो कांई म्हारा करम करमी–कोई टीगर नै गुद्दी पकड़'र लावैनी भेजूं भागड़ो ही। वा ..नाणा मेर मेर धान रो नाम रर की काम रा न करदा रा।"

"ता हो जना तो मरी मनै ही–कांई काम ह थारा ?"

"बताऊं कांई–वा गुडकी सुथारी श्रावा कर है–जिकी तीन च्यार दिनां सू की वापरीनी–जठ बेमार दीसै ह। घा रठ पट पर्री लागगा हुवला। पाच-पांच, सात सात पूर पैर गर्या, तो नी ती तो बारो ही वा उटग ै नी। वा वापडी गरीबणी कठै बीरै माजा कठै उगी गूटर। गांठणी सी भेटी हुयोड़ी दीस्या कर है। घणी भ्रापा रै भ्रठ ही भ्राया करै है। ग्याराण भ्रर भणीगुणी यारी। वाठनवाणी हरजम इम्या सातरा गाव है क भम्ममारै थारो चूडीवाजो ही थी रै भ्रागै। सगत सातर सैची-खची फिरती, भ्रबार कोई डेढ़ दो साल सू तिजर की माठी पडन मांरर भ्रावाजाई कम ही करै। म्हारै सागै बदरीजी गया पछै पूरो हेत रागै है। भ्रबार मैं देख्या खीचडी काफी ऊबरगी–हू देपूं वापनै याई-त्याई दो कौवा ले लेवै कट्टी ग घी नै करडो कोड है। भ्रातमा मो परमात्मा–तूं तो भण्योडो है–भ्रातमा पोख्य रो कित्तो पुन है ?"

हू बोल्यो "छोरां नै पडन दै कुग्रै मे–ना हू भ्रबार त्याऊँ।" थाळरियै म खीचडी, कटोरी म कड्डी, गमछै सू ढक, हू टुरचो। गाँव रै न्खिणादै पासै–छेनै नी छेनै एक पकरी साल ही। टैगा री खिन्न। माय मोटी बारऊ। मोकळी जमी घेर्याडी। च्यारा कानी कदई भ्राठी बाड ही। भ्रबार'म कठ कठै नी गळचोडी भ्रर काठी फ़ुग्रसा रा सैनाण दीसता हा। बोदी बाड न टैम सू पला ही डांगरां, गरता घात घाल तोल नाखी ही जियां भ्रांख मीची रावणियै राजा री काकड ग मैं गण काई नाणो पाडोसी राज, सफा करण री चेस्टा राखै। गरता म कठै-कठ ही मोटी गोपा उगगी ही जिकै सू सागण सीव एक नुंवा रूप ले लियो जाणूं दयालु धरती बाड

ग बुढ़ापा चूस वीन नुंवा जमारो देवण मे लाग्योडी हुवै ।

काळ री मिटावण री चेस्टा अर कुदरत री रावण री चेस्ठा म मन कुदरत री जीत लागी । म्हारै जची, क अणगिण वौटा जद आपरै नीग्यापण रा गुमान रा क आपरी जलमभोम धरती मा र सरण हुया, ता उपगारण धरती राजी हू आपरी कूख सू वां नै एक नुंवा ही जमारा दे बार काढ्या—आं पीपा रै रूप म । जित्ती कॅवळी—जित्ती हरी । गुमान गट्यां री जीवण म कॅब, पण अटर । थाड वठै ही इयां गिणगी जियां काई नौजो लेणायत की कमजार करजायत न ऊंचो को आवण नी ।

एक कानी गाव अर तीना कानी गीरै रोही ही । रात रो भाई चार तो कठ मोस र मारया भला हो ठा ही का पडैनी । खिडक री बिलाई मोली माय गया हना मारयो, सुथारी दादी ! सुथारी दादी !" साळ रो बारणा आढाळथाडा । हल रै साग ही एक गडक मुसतो सुणीज्यो

'कुण हुसी ? बेटा ! मांय आवरा कुत्तो को खावैनी माय आवरो मन सुणिज्यो । हू आगीन गयो–किवाड खाल्या । एक खटोलडी पर डोकरी सूती ही । एक गूदडनी ऊपर नाख राखी ही । कुत्तो मनै देखता ही पूछ हिलावण लागग्यो । गडक काळो भौफरो अर चोखा मातो मोटो हो बाको हो म्हासो बूढो । म्हार हिसाब सू डोकरी साग ई री खास बरसा रा मळ मुळाकात हुणा चाईज ।

कुण है बटा '' डाकरडी थोडो मूं काढ्यो ।

'ओ ता हू गारधन'

गारधन ! त किया फाडा देख्या बटा ? '

'फोडा कपारा है दादी—आज छुट्टी ता ही—दफ्तर जाणो को हानी । मा कया सुथारी दादी नै थाडी सीवडी पूगाणी है । हू बोल्या ला हू खाली बठा काई करूं हू दिपाऊं ।

उठण लागी का पाछी पडगी । मैं सायरो दियो का उठी । घूजती हो जिया साथी पून मे थमैं रो कोई लेडवार धूजैं ।

"दादी भावै जितो ही—एक ग्राध गासियो ले ल ।"

'बेटा खीचडो तो की भावैती-थाडो न्याया-न्यायो बढडी रा गुटको तो लेवए गी जी मे है । थारी मा कड्डी करडी स्वाद कर । मू डो मिछळो-मिछळो पड्यो है की ठीक हुवै तो कदास, थारी मा लुगाई कांई सारयात लिछमी है—भागए है बापडी भज'र आई है । तू बा रुखाँ रा छोडा है—माडो क्या हुसी बेटा ! इसी ही थारी बीनणी है बापडी सूधी देवता ! गाय रा ऊपरला दात । सासू रो जिनो कायदा रायै, बीसू सवाया म्हागै । मैन मे समझै—स्याणी है बापडी । भाग सू मिलै भाई भाग सू ।

'दादी थारी दया हैं ।"

"बेटा ! म्हारी दया री मा रो काई लेणो देणा [illegible]
नियोडी है, वीरा ! कैंवले पाए ही वो दुरथानी, राग/ [illegible]
चोखी तर सू धीरै-धीरै आया, अर म्हेस करण न [illegible]
फटकारो, जिको हा जिसा ही आ बैठा—[illegible]
म का घालीनी—अ देखन तू । म्हानै ता [illegible]
म्हारी जाग्या काई दूजो न रूघलै—[illegible]
इसी रूनाजी है क मरा न मांचो तूटै । [illegible]
कमाई चोडे आयगी, वा तनै दीसै ही [illegible]
मू ही माडी—काच म पडी दीसै मन [illegible]
राया राज कुण देसी ? देवै ही नदा [illegible]
डोभा खराब करू ही क्या ? [illegible]
ऐसी जिका हँस-हँस सिर पर [illegible]

धीरै धीर कड्डी पीदडी—[illegible]

मस्ता काया

ग्रा जची कै दादी खासी भली म्यानएा तो है ही पएा सागै बा बातरएा ग्रर सभाव री हुसाड भळै है । ठेळो नाखै जिको वडो फवता ग्रर मिठास इसो कै रू रू मीठो करदै ।

वन एक छोटो सो घडियो पडयो हो–ठीवें सूं ढकघाडा । गिलास भरदी कुरटो कर परी पाछी सोयगी–इया जिया काळबेलिय री कावट म कोई बूढी सिसक्ती सापएा गरमी म गळूण्डिया मारलै ।

धोला केश । मूं ढ पर सळ जिया सूक पापठियाँ पर हुव का काई अबोध बाळक कोर कागद पर पमसल सूं आटा टूटा लीक लिकाळिया करै । पएा काळ री खैंच्योडी ग्राँ लाम्बी ग्रोछी लीका मे मनै, सुख दुख रा मोकळा पाना भरघोडा दीस्या । चाडो लिलाड ग्राडी लीका सूं इया भरया जिया हळक पीळै गार्थाटिय पर कोई सीखतड छोरी रा उलटा सीधा गोह करगा डोरा बायोडा हुव । तरक सो तीखो ग्रर जस सो ऊचा नाक, मनै इया लाग्यो क ग्रए सायत ही कठ ग्रापरो नाक नीचा हुवएा दियो हुव । ग्रास्या मनी काडा सी माँय बैस्योडी जिया जुगत सूं कएा ही थाड दिना खातर खावचाइ सू जचा राखी हुव पएा ग्रा ग्रास्या मे भेप ग्रर झिझक का ही नी–बडी निरभै–एकर पाळ ग्रावै तो ही का मीचीज नी इसी । दाँत दो च्यार ही हा पएा भला ग्रर सूगला नही–कारी मूं डो स चिडकली र ग्राळै सो पड्यो हो, पएा ग्रदाज लागतो हो क यदं ग्रा जवान ही जद ग्रा मूं इवसार ग्रोपता, ऊजळै मियै मोत्या सूं पोईज्योडो हो ग्रा द वेळा, काळरी ग्राँगी मे, न घएाकरा मोनी सिरम्या हुव तो कोई मएाो को होनी । डगठिया दख्या ग्रा जचै ही कै हवेली कदेई ग्रालीशान ग्राछी ग्रर ग्रोपनी ही ।

हूं दो तीन मिण्ट वठा रयो । माच्या भळै कएा ही बात करस्या धाला ग्रनार तो ।

इत म गा मुदळतो नीचै सूं वाली सुगोनी क दू जा बटा–

थारो भोए भोए भलो हुया । हू तो आ ही माला फेरू हू कै आगोतर म थानै दूधरी तळाया हुवै ।"

"हू जासू परो दादी–थरे इसा काँई जबाई जिमाणा है ? तूं सो भलाही । हू दो मिण्ट बैठो हू थारै कनै ।"

"मौज थारी भाई ।"

साळ मे एक चरखो दीस्यो । दो च्यार बरतण भाण्डा पडया हा–ढगसर जचायोडा । बी सू अन्दाज पडै हो कै लुगाई साफ-सफाईआळी अर चतर हुणी चाईजै । सिराणै खूटी पर एक तुळछी री माळा पडी ही । बी रै कन ही आळै मे, काच सू मँढयाडो मीरा रा एक मोटो फोटू जिक मे मीरा एक हाथ मे खरताळ अर दूजै म इकतारो लिया कीरतन करै ही । पलका बन्द । मस्त इसी कै बारली दीन दुनिया री सुध बुध सू बिलकुल ही बेपरवा । जाणु इ री आपरी आख्यां रो सुख इ री मायली पलका पर थिरक थिरक परा, इया नाचै जिया सुरगै सावण री मेघमाळ रो मस्त मारियो । ई खातर ही आ मायत आख खोलणो को चावनी कै आरया री मुटठी मे पकडयोडो ओ सुख आख खोलता ही कोई चालबाज चिडकली जिया कठै हा उड नही जावै ? सिर पर इन बीनै स्यामसुन्दर रा बन्ना भीणा भीणा केई फूठरा फोटू जिका जाणू बीरी कल्पनासाम आभै सू उनर उतर बीरी भावा री पून पर लो रै आगै तिरता हुवै । बा फोटूवा पर काई चित राम कारीगरै किती कारीगरी सू कूँची फेरी ह–फोटू म आ ही देखण री चीज ही । फोटू रै नीचै फूठरै हरफां मे लिखयोडो हो म्हारै तो गिरधर गोपाल दूसरो न कोई । फोटू हाथ रो हो अर नाथद्वार रो हो । सामन ही मीरा रो एक भळै सादो फोटू हो । म्हारै जची कै मीरा सूँ ईंनै घणो नह हुणो चाहीजै । एक आळै मे दो तीन पोथ्यां पडी ही—'मीरा भजनावली अर ब्रह्मानन्द भजनमाला । एक पोथी अन्दाजै सू गीता हुणी चाहीजै ही बीरां ऊपरला केई पाना फाटयोडा हा—बारै नीचै दो तीन कल्याण रा

पुराणा छापा पड्या हा ।

तो दादी हू जाऊँ हू—कोई दवाई पाणी ?"

"बेटा जाणू हू—दो च्यार दिन म इयाँ ही ठीक हुज्यासू रै। मरदी री हडफोड़ी है गीसँ मिटज्यासी' गूदडी सू मूंढो उघाड बोली, 'तनै फोडा पड्या बेटा ।

'फोडा क्यांरा न दादी—तास नही बूटी इन आयर्यो । दादी ! किताक बरस आयग्या तन ?'

'बटा आया जिका तो गया कावर बोरा सट्टै, अर अब आगै जिका बेअरथा है ।

'तो ही ?'

'छप्पनै म दस बरसाँ री हीं ।"

'जणा तो मास्ळा बरस आयग्या बवोत्तर तवोत्तर नैडा पण अब आसी जिका बअरथा किया दादी ?"

अै तो आंधी राण्ड न ही दीसै है चोड पड्या—न भजन हुव न शरीर रा किरिया धरम ही सावळ निर्मै—जिका दिन दूक-दूक कान्णा पडसी बै बअरथा नही ता काइ ब्याज ऊपजावणआ ठा है ? घुरडको जूण्याँ पछ भजन कर तिरता मैं ता का न ही दख्यानी ।'

हू मळै म बट्या गमायाड जातरी रा सो मू ढो किया-काई ताळ बाला वाता वी रै मू ढ सामी दखता रैया । 'दादा थारै कोई बेली ढब्बी ?' बात री लैंण चान् राखण खातर, थाडा ठैर र हू बोल्यो ।

घणा ही है वना ! राम राजी है'

'कुण'

"थ सगळा म्हारा ही ता हा । हो जणा ही अठ आवो हा ।"

"बात तो ठीक है दादी, पण तो ही लागती पागती मे कोई तो हुवैला ही थारै ?"

"म्हारो वेली ढब्बो एक सावरिया है जिकै नै हू इत्ती बूढी हुय'र ही, चोखी तरै सू आपरो को कर सकी नी पण जोर काई ? लारला पाप आडा फिरै, जियाँ आपरै अर अणमें घै गडक वारकर दूसगी गळी रा गडक। लोकाचार म थे सै म्हारा ही हो जिका जीवती नै मनै गुटका पाणी पावा अर मरयाँ पछै दो मुट्ठी लकडी देस्या ।"

"तनै इ रा काई ठा पडया दादी के साँवरियो आजू थारा को हुयोनी ?"

हू ओजू मीरा आळै जिया जगती रो जैग हँसती हँसती को पी सकी नी—मनै इ गोवडै रो आजू खासा मोह है रे ।'

बात तो लाख रिपियाँ री कही दादी, पण हू कावळ पजग्या—की उजाड पडग्यो, हू बोल्यो—"दादी आ ता ठीक कई तै पण हू तो तनै पूछ हा क नैडो आगो कोई तो थारै हुवलो—मूळ बात नै तै छोडदी बता दादी, लुको मत ।"

"पडन दै कुयै म बात—क्या कुचरै ओटयोडा वीरा—हू तो आगै ही सिकू हू, इ ऊपरलै ओग सू ही ।"

मैं बीरै चैरै सामी देख्यो आख्या री बाड भीजगी ही जाणै कोई लारलै इतियास रो दुख दोराई री स्याई सू सीच्याडो पानो अचाणचको ही बीरी आख्या आग आयग्यो हुवै । वण ओढणिय सू बी बळा ही आख पूछनी जाण मन की ठा ही न पडयो हुवै ।

कुत्तो समझदार गवाह सो म्हारी बाता सुणै हो । दादी बोली, 'अरे भाई ! हू तो भूल ही गी, इ नै ही थोडी आ खीचडी बारै चौकी पर

नाखदै । बापडा काल रो मरतो है—माडो सो टुकडो नांख्यो हो—नांव झोळी वायरो फकीर है बापडो ।"

'दादी सगळो नांख दू ?"

"नांखदे—भला ही नाखदै बेटा, वापडो दिन भर सोरो रसी।"

हू समभग्यो म्हारै काम लायक डोकरी कनै खासी भली गुरचण है, पण आ बतावै ही कठै–खैर देखी लागसी । धीरै सुस्त कद ही तो पावस ली ही ।

हू उठ्यो–कुत्त नै खीचडी नांखी । कुत्त सन्तोषी साधु सी बीन जीमली अर पाछो मचली कन जाय वैठ्यो जाणै कोई एकासणी बूटो साधक हुवै ।

"दादी जाऊँ हू—भळे कणा ही मिल सू ।'

"मा नै माकळा रामा सामा देई भला ।'

"भलो भलो' कह'र हू निकळग्यो ।

△

पारदार वी ताळ न जरू झाले बठो हुवै अर खोलए सू सफाही राजी नहीं हुव —आ म्हार जची । जे आछी ही वात हुती, तो आपर गुएा रो वखाण कुगा नी करता नी दुनियाँ इमो भोटी वद री ?

हू साचू वदास कैए सू इ रा की भार हळको पड पए आ परवास जद हुवनी । काइ ठा इमो कोट करचो हुव जिक न हू काढ सकू अर वठ श्री सार न भरए खातर कोई ठण्डा मलम नगा मदू तो ई री मौन सोरी मुख सू हुव अर जिय जिता दिन सोरा सास लेवै । जियाँ किया ही ई न पूछगो जरूर है आ म्हार रू रू म वठगी इमत्यान मे आवए आळ सवाल दाई ।

पाछो अनीतवार आया । सात दिन गिए गिए काढचा तो सरी पए करडा दार—मान वरस सा । अडीकतै न एक मिनट ही ओखो अ नो सात दिन हा ।

डोकरी री वावत मा न एक दिन पूछचो । मा बोली, "हू खोट नोद क्या पूछ ही क ई रै लार आगै कुए है आपा नै किस्यो ई साग सगपए करएगो हो ।

आपा र अठ आ किनाक वरसा सू आव है ?"

मैं ता परण्या पछ ई न अठै ही देखी । ईयास वार तरै साल सू म्हारै ईर घगा गाढा हेत है । बडरीजी गया पछ आ मनै वेटी वेटी कव । आ वात जरूर है क है आ वारली आयोडी—थारी दादी वताया करती—पए आपा नै ई सू काई मुतलव ?

जद म्हार मानी लागा ?

और नहीं ता ?

ता त पला तो मन बता को कईनी ?

मकती काया

'तै मनै पूछी ही कद ? अर इयास म्हारो आप चेतो आजकाळै इस्यो की रैयोनी । थोडो घणो हो, बो टीगरा काढ लियो।"

"खर जावण दै अब ठा लाग्यो जिको ही आछो ।" जची ग्रौर बीनै ही पूछ्र गाव मे मन को मा यो नी । सोच्यो जद स्याम धणी मौजूद ह तो पाखरिया नै पच घाला ही क्यो ? हू खीचडी कढ्ढी ल पैलकै सू की बगा ही टुरया । सीधो साळ कानी गयो–बारणो खुलो पडयो हो । डोन्री ईस पर अकूणी दिया बैठी ही । मचली रै सिराणै माळा पडी ही । धीरै-धीरै रागळी करै ही । मनै सुणीज्यो 'मीरा के प्रभु गिरधर नागर'। अवस्था देखता आजू कण्ठा म लोच हा अर गावण रो हो तरीको । मौ मण धान री पाव भर ही तो बानगी हुवै । म्हारै पग रो खडको सुणना ही, ही जठै ही ठरगी । किसो भजन हा मनै ठा को पडीनी । सिर उठायो बोली—

'गोरघन ?"

'हाँ नानी ! पण थारै सू अबै लडाई करणी पडसी ?"

"बिना लडाई ही काम निकळनो हुव जणा ता बूढी सारी नै क्यो फोडा घालै ? अर लडाई मे ही जे लाडू बटता हुवै जणास बात न्यारी है" नानी की मुळक'र बोली । बाता मे ई क नै कोई काई सोधै-अगली सीधो चूर परो, इसो पुरस कै भळै दूसर कोई माँग ही क्यांन लै ? ई न हू समझै हो तो ही हू बोल्यो,

"तू म्हारै नानी लाग, आ बात तै मनै बी दिन को बताई नी ? नानी भळै मुळकी–पतळा-पतळा होठ पोपनै मू डै पर थोडा छीदा हुया, बडा श्रोपता अर आछा लाग्या । जाणू बडै दिना सू ग्राँ होठा नै ओ इस्या मौको मिल्यो ह । बोली, "थारी मा ही तन कदेई बंजनी हुसी क हू थारै मा लागू हू—बनायाँ बिना तन किया ठा पडै टाबर नै ? म्हारैस बियाँ नानी, दादी मैंया किसो फरक पड है रे पण तो ही हू किसी, छोटै बाप री बजू हू, नहीं बताई ता म्हारी भूल ही सही, बस, अबै तो राजी है ?"

नानी मुळक परी इसी वात कँई कै चूट ही लियो अर रोवरा वा दियोनी । म्हारी डिग्री अर स्याणप नँ तो आ थडै पागड ही का लावरा दैनी । आगै वधू तो किया वधू ? मोरचो इस्यो माडै है कै नही वरा री वात । दस पन्दरै वरसा सू आ म्हारै नानी लाग अर मनै ठा ही नही जरा सोळै मुट्ठी लप म म्हाँ मे भळै क्सर है ? हू बोल्यो, 'ई मे खासी भूल तो म्हारी ही समझ नानी, परा साव सूकी त् ई का है नी । खर राड अर वाड तो वधाव जिता ही वधैं । छाड थारी म्हारी । अबै की काम री बात कर ।'

मै वीरै मूढै कानी एकर इयाँ देख्यो जियाँ कोई वैरो, वारणिय रै वाक कानी देखतो हुवै ।

"तू लडन न आया है जद मैं ता कँई है रे ।"

'बस लडलिया हूँ तो ? वता शरीर री सोराई दोराई कियाँ है थारैं ?"

'किया बताऊँ ? पैला बिचै ता मोकळो फरक है रे, इयास तन किसो दीसै को है नी ?"

'दवाई पाणी ?'

'दो च्यार बिरामी री गाळी ली ही ।'

"वस ?"

"और नही तो ?"

"अर खावरा नै ?"

'की नी—खाली बाजरी रो दळियो—वाकी मूल वात श्रा है कै खावरा नै जी ही को करै नी ।'

"शनी अर तेजपता घाल्योडी चट्टी लायो हू—मेथी रो ल्योडा

है बधार, दा च्यार गुटका लेवै ता ?'

नानी सावळ बैठगी । चाय श्राळै दाइ पीवरण लागगी । बोली, "तू बामरण रो बेटो है—म्हारै पर पाड चाढै ।"

"नानी श्रा बाता मे काई पडयो है ? तू पाड रो कैवै म्हारै सू पत्थर ही को चढैनी । तू की बात रो विचार ही मत कर । नानी दाईतै रो मेळ, देख साँवरियै किसोक साँतरो मिलायो ह । बी दिन तू कैवै ही कै मौक पर जिको कनै हुव बो ही श्रापरो—श्रर श्रापरो ही जद थोडी घरणी चाकरी नही कर तो बारलो थोडो श्रासी ? का नही ?"

"बात ता ठीक ही है बटा । ठीक न तो ठीक ही कैरणी पडसी ।'

"नानी ! जे श्रबार ही तू पौढ जावै ता थारै ई श्रोरियै रो घरणी धारी कुरण ?"

"श्राप मरया जग परलै—म्हारै भावै पछै कुरण ही हुवो । मन काँई ? हूँ किसी देखरण न श्राऊँ ? इयाँ हिसाब सर तो तू ही हुवै–दोईतो है–ई सातर ।"

"खैर हूँ तो हूँ ही–तो ही कोई न काई तो थारै नैडो श्रागा हुवैलो ही ?"

"दोहितै सू नैडो श्रौर कुरण हुवै तू ही बता ?"

"बेटा पोता, देवर, जेठ ।"

"श्रे जे कीरै हुवै ही नही तो ? फेर तो हकदार तू ही हुयो नी ? तू म्हार भाव श्रठै गायाँ बाँधे–भला ही घरमसाळ चिरणाए श्रर भला ही थारा मैल-माळिया भुकाए । म्हारै भावै की करे, हूँ तो म्हारै मने ग्याने ई नै थारो थरप चूकी । दूसरा कोई मू ढा धोवै तो सात वार धोवो भला ही ।"

खैर नानी ! थारी मानी परण एक बात मन तू बता कै "मनै तू

ममनी गान बनाणा क्या को चावनी ? पूछू जणा ही म्हाटी बात घालूं। हाठा कन लार गात नैं गिट ज्यारै–छेरड कांई न कांई वठै ही–पीर सासर चारूं हुवैला तो सरी ही। ऊपर सू थाडी ही पड़ी ही ? हां म्हा मन ठा है क इ गाव मे थारो न पीरो है अर न सासरो ही।"

'तो ई रो मुतरब तो म्हा ही हुया कै हूं ऊपर सू ही पडी" कह र नानी थोडी मुळकी।

नानी जे तू वठै हो म्हाछै पठगै सर हुती अर कानून री पगाई करतो तो एक इस्या तगडा उकील हुती कै म्हाछै म्हाठै फन्नैखा उकीला री म्हाग्या घोळी करा नाखती–बा न भागना) गनी को लाधतीनी। 'तनै यू० ऐन० म्हा० म लोग बुलावता अर थारो म्हाज रुनबा ही न्यारो हुतो' म्हा बात हूँ भळे कैणो चावता हा पण को कई नी माय रो माय गिटग्या" मनमै सोच्यो कादरा जिता छूतका उनारा विता ही निकळ बाकरसी। नानी मनै बाता मे की पार घालतो लागीनी। म्हैं केस म्हण तावडै मे थोडा ही धोळा किया है। कइ ठा मैं जिसी कितो घोळै मूढ रै छोरा नै चरा चरा छाडया है ? हूं बोल्यो, 'नानी सासतराथ मैं तो हूँ हारचो अर तू जीती पण जिसी बात है, बतावण म थार काई लागै ? कम सू कम म्हार जी रा सकळप विकळप तो मिटसी अर म्हारो जी सोरो हुणै सू थारो काई नुकसाण है– म्हा बता ?

"तू तो म्हाप जिद्दी तो पछै राज रै घर रा दीस है। छेकड पूछ परा करसी काई तू ? देख जिका नै मैं म्हारा बणाणा चाया है बै म्हारा को बण सकयानी अर जिका न मैं नहीं चाया बै म्हारा बणग्या–घर म्हाळा सू बैंसी। उल्टी गत गोपाल री है भाई–काई बताऊँ बता ?"

'हुवै हो ली–पण थारी कैणावट सू म्हार म्हाजू की पल्लै को पडयानी कैवै जिकी सावळ तो कह बाळ।'

ना नीचलै होठ नीचै आगळी राख'र बोली ।

"तू जे न बूझतो तो चोखो हो । काळजै री घूंईं मे कदेन रा ओटयोडा दुखा रा छाणा जुगा सू ढकया पडया हा । वां रै ऊपर मणाब ध भूल री घणी मारी राख पडी ही । वजळाइज्योडा समभ बा नै मैं कदेई कुचरया ही कोयनी अर म्हारै क्रियो अणसीरो पडयो हो वांन कुचरया विना ? मैं ऐसो ऊमर र सागै साग आपे ही बुझ ज्यासी । तू वानै आज, नु वैं खिरै मू राख छेडै कर वारनी पून लगाणी चावै नो लगा भला ही —मनै तो की लाभ लाग्योनीं । आ ग्रौर हुमी कैं इ पापण रण्डार री बाता सुण'र तू छठै छमास कङ्डी रो पाणी पावैं हो बो ग्रौर बन्द करमी । तू ता करसी जिको करसी ही, भळै सुणत गिणैं न ईंन ग्रौर मूढो की करण दैंती । पण चोखो मैं रण्डार रा घोळा भण्डणा ही लिख्योडा है तो कुण टाळसी ? आछो है अठला अठै ही भोगीज ज्यासी । कुण जाणैं गोपाळ री आ ही मरजी हुवैं । वे ठा इ जीवण पोथी रो इध्याव ओजू भळै अधूरो ही रयोनै हुवैं, हुवण दै पूरो ।"

"नानी तू इत्ती डर मत अर ना दोरी हू । ओ मिनखा शरीर है—गिन्नी काया जिकैं मे आछी माडी सगळा सागै हवैं । इमी किसी वेल है जिक न माडी मट्टी ताती पून न लागी हुवै ? एक बात ग्रौर है नानी, त थारी आछी माडी थारैं सांवरियैं आगै तो घणी बार ही सुणाई है ला—वो तीन लोक रो नाथ है—वी नैं वह भलाही दुनिया मे डको पीट—जद वी नैं कवतो को सकी नी तो मैं टीगर सूं तू डरगी—लोक लाज रो विस भळै लार हा रैयो—वाह् नानी, वाह् ।'

मैं सोच्या जरूर ई री कोई वात ऊंडी है अर दुख दाराई सू हला—हला भरी है । आ वीनैं वतावती इत्ती दुख पावैं जाणैं इ कनैं सू कोई इरी उमर भररी भेळी करयाडी अमोल निधि नै घिगाण खासतो हुवैं । जाणू इ र मन मे कोई इस्या अळूभो पडयो हुव जिकै नै खालती आ साम्परतक

सरमावै । भ्रा वीनै है ज्यू ही राखण मू राजी है । बीर चर पर मैं एक सागै सुख दुख रा किता ही सळ बणता बिगडता देख्या ठाक द्या ही जिया पिरागराज मे गगा जमना रा पाणी आपस म रळता हुवै । नानी न दुविधा मे देख, भळै बोल्यो, "नानी ! पैली बात तो हू थारा दाईता—दूसरा हू वामण । बामण विराट रो मू ढो हुवै भलो, तू नैचो राख मन बताया थारो तीन भौ मे ही बुरो को हुवैनी चावै त की री हत्या ही की हुवै पण थारी राम कथा सगळी तू मनै सावळ अर साची मुणा । मपन म ही सका मत कर नानी । तन आँधी म ही हलको को लागनी । अब ही जे तू नही बतावैली ता तन म्हार नी री सौगन है अर सागन है भळै तनै थार मावरिय री ।"

अबक नानी रा हथियार पडग्या—वाली, लै भई ! थारै आ ही जचगी ता सुण भला ही । तू विराट रा मू टा है आ समभ परी ही तन साच ही कसू—इ ऊमर म, क लक्डा जद मसाण पूग्या है वूड भळै क्या खातर ? म्हारी बात हू बठ सू पोळाऊँ जठै सू मैं म्हारा नै छोडया अर अठै हू आइ ।

नानी जद हा भरली तो म्हारो इसो जी सोरा हुयो जिया काई गढ फत कर लियो हुवै का निजळा नै कोई ग्यारसियै वामण नै धपाऊ रा आम्बा आला अर सागै एक ठण्डाई रो लोटो मिल्या हुवै । अबै हूँ बीर अठ छुट्टी छपाटी का थोडी घणी और टैम काढ द्या पूगतो जिया हिल्याडी लौकी अहक मतीरा पर—का काई फीचरियो खुलतै बाजार कानी टुरतो हुव ।

X

तीन

"म्हारै पी र म दो काक' रा बेटा भाई हा । दस इग्यारै बरस री हुई जद ताई एकेक कर म्हारा मा-बाप दोनू पूरा हुया । बाकी भाई हा भाया जिसा–तीज तिंवार बुलावना–सज्य सारू काट काचनी देवता । इस्यो मन राखता कै सागी ही काई राखै । आ ही चाईजै–लिया दिया तो डूम राजी हुवै ।

भाग री वात सासरै ही भळै न सासू अर सुसरो । एक वेवा नणद बरस पैंतीस चाळीसेक री । म्हार पर ठण्डी टीप–तरफ मू वेसी । माय रा माय तूण बरसतो—मनै हँसनी मुळकती देखती जन । एक म्हारै देवर री बहू, बा ही विधवा । म्हारै साईनीसी हुमी कोई बरस दा बरस छोटी मोटी हुवै तो ठा नही । धणी बापडो सूधा देवता–दिनूगै नाम लेवै जिस्यो वारी हो की भोळै अगा ।

घर मे करतमकरना वा नणद ही म्हारी । आ नणद बी म्हारी देवर री बहू नै म्हारी जाम्या चूडी पैराणो चावती–इ वात न हूँ जाणती ही, पण ईं नै म्हारै मन मे ही हूँ राखती जिया चूल्हो ओटधाडै बामतै नै । दाता विचाळै जीभ आळै जिया हैं अठै रैवती । सोचती ओ सोदो किया

पार पडसी ? पण ग्रावा इमो मौरा ही तो को देवानी । का तो ग्रो दोना नै परोटसी का हू ही रस्यू । बी वेळा नाड जात म ई ढग मू दो दो नही राखता हुव इसी बात को ही नी ।

कुदरत रा खेल देख तू । ग्रादमी सोचै की ग्रर हुव कीं । गादड रा ऊधा दिन ग्राव जद वो गाव कानी दौड ग्रर ऊधा दिन ग्रावण रो जे कीन ठा ही पड तो बान ग्रावण ही कुण द । ग्रादमी री ग्रा कमजोरी कुण जाणै कद मिटमी ?

म्हारो पी र बठै सू पाचेक कोस हो । मन कण ही समाचार दियो क थारी बडोडी भोजाइ घडी पलक पडी है मिलीजै तो मिलल—कुण जाण छेकडला राम राम न्ह । सुणता ही म्हार काळजै दू धड चिन्ता लागी ता इसी लागी मत पूछना—मै देख्या सास रा किसो बिसास—एक ग्रायो दूजो न ही ग्रावै । ग्राजोग्राज हा चालणो चाईज ग्रापान । मैं म्हारी नणद नै पूछयो, 'कनो तो म्हारी भोजाइ सू मिल ग्राऊँ-घडी पलक पडी बतावै है ।"

'हूँ क्यो पाडू छू । मन ग्राडो क्यां वास्त लै ? सगळा काम मन पूछ'र ही करती हुसी ?"

'मैं देरग्रो गाड क्यो बधाऊँ ? ग्रापणो काइ लै । कैवै जिया ही कैवण दो । म्हार तीनेक वरस रो छोरो हो । एक सतमासणी छोरी हुई ही कदेई, जिकी चालती रही । हूँ बोली, "तो छारो थारै कनै है ही-हूँ सिझ्या ताइ पाछी ग्राय ही जास्यू । छारा इसो हो कै मौक पर म्हारै सू दा दिन छेडो रवता ता ही ठगायो पोटायो मान ज्यावतो ।

जेठ रो महीनो । इग्यारै सवा इग्यारै बजा हुसी । लाय पडन लागगी ही । पाणी रा लोटा एक भर लियो । दुरगी । सागो हो । रस्त म कोस दा एक पर एक पौ ही—कोई डर ग्राळी बात का ही नी ।

वळती बाज तो इमो क चरडका सा चिप । पूरा काई ही खीरा

उछले हा । जमीन भोभर सी ऊकळ हो । फोग, खीप, खेजड़ां, सिणियां भर सरवना भ्राधी रै सू साट सागै साथ-साथ करता सुणीजै हा । म्हारै सागै एक डागरड़ी ही । जूं चालै ज्यू चालै ही । छोड तो ठीक को ही नी— चालू तो पासावै कोयनी । बडी दुविधा ही । काई तीन माढी तीन दजी सी म्है ठाइयैसर पूगी । म्हारी जीभ कलराइजरण लागगी । ताळवा सूकग्यो । जी भ्राकळ धाकळ हुवं हो भर भ्रास्या जगै ही । पूर पसेव सू भ्रालागार हुग्या हा । डोकरडी रो हाल मत पूछना, मरी ता का ही नी, भळे भागणा टूवला इ सातर पण बाकी को रईनी । काळजै दाह उठगी बापडी रै । सिसर्के ही ऊनाळ म कार्ने म पडी कोई बूढी कुत्ती सिसकती हुवै ज्यू । चोखा जीवती जागती पूगगी जिको ही न्याल हुई ।

घरै गई । भाई राजी हुयो । भौजाई सावळ बठी ही—हँसती-खेलती सी । ईंढगी पोवती ही । 'भ्राभ्रा बाईसा । भ्रबार बेटैमा किया ?" मनै वडो भ्रचूम्भो हुया भर सोच न्यारा कै गाडी पर भ्रा बात किया घडीजी ? साव भूठी । म्हारै जीं मैं जची क जरूर इ म म्हारी बी नरणद री ही कोई जाळ गूथ्योडो हरणो चाईजै पण ठौर, करमी ठाकुरजी देखी जासी हुसी जिकी ।

करणी ही जिकी मैं कैयनी । भाई बोल्या, 'मोडो हुग्यो—रात रात बैठी है—दिनूग जाए परी पण मनै तो बी डाकरण रा इस्या डर लागतो हो निया नु वै छारै नै कूटरिणयै मास्टर रो । जे टैममर नै पूगीज्यो तो रण्डार भ्राधी ही को रवनी । घडी भ्राधी घडी ठर परी मागी पगा ही पाछी टुरगी दौन्ता नौडता पौ कनै मी न्नि बीसीनग्यो, पौ पर भ्राई पण भ्राधी बिया हो नग्णाट करही—ताती भर ऊकळती ।

'गाव भ्राजू दो सवा दा कोस पडचा हो । भ्रधारी रात । हू देखू भ्रँधर पख गी दूज हुन्ली बी दिन ।" नाना मनै चालीस पैतालीस साल पैला री भ्रापरी भर जवानी री बात सुणावै ही जिक पर काठ री भ्राँधी, भ्रोकळी

रा अरणगिरए घोरा चाढ दिया पण नानी बीं ो इया सुणाशे ही जिया काल री सी बात हुी । बी दिन श्रेवेर पतरी दूज हुवैली श्रा सुण गैं सोच्यो क देखो अण श्रापरैं काळजो र खण मे घटनावा री लडा किया लेण सर लगा राखी है । वाी श्रा किसी जुगन सू काढै है जिया काई स्याणा विसायती श्रापरै भरघोड खूमचे सू मिणिहारी रो माल काट-काढ गाहक ो दिखावता हुवै ।

"हूँ एकलपी ्यारी । बडी मुस्कल हुइ । पाच सात मिण्ट पौ पर बैठी रही । पाणी पियो एक मन कैवे रात रात श्रठै ही डाकर डोकरी वन बैठी रह दिनूगे चाले परी वेगा थर्वी । एक मन कैवे जे ठा पडग्या तो रण्डार खाई ही का घापैनी । जी ो वडा सासो हुया । ईं दुघड चिन्ता म बैठी ही का एक वटाऊ ढूकया वठै । घाटो मारण ो-ऊँट पर चटचोडो ।

"म्हाराज पाणीडो भनाया ता ?

ल्यायोड्सा-सिघ पधारस्यो श्राप ?" डोकरैं पूछ्या ।

"थानै इसू मुतळब वावा ?

'पूछ्रू हू सा ।

'श्ररे तो ही बता तो सरी म्हाराज ?"

"ईं गाव नैं जावण सानर एक लुगाई वठी है-थापडी वटम ्ुगा कडप है । जावती डरैं-ज उतार सका तो वठीन जावना ।"

"थारैं भाऊँ थाड्पाडे तिल्लां म जाउँ-थार पूगायण सू मुनळब का श्रौर कीं ?'

' माईतांळी करस्यो मा ।"

ऊँठ जैंकायो । पाणी पी बान्ना 'ल श्रा बैंर वारा ।'

हू पाणी ही दुर्सा मघाणुणरी बठगो गो धांवनी हो नीं पग भावी!

बी डाकरा रै दुख सू डरू-फरू ड्योडी बैठगी । कीस होएाजाग नै निमस्कार। टाळै घडी घडी रा विघन ठाकुरजी। चढता ही ऊँठ न ढाए घाल दियो बरा। म्नै मे इत्ता ही पूछ्यो मनै, काई जात ह भई थारी ?"

"सुथारी।'

"गई कठै ही ?

"पी रै ।'

हू तो बी री की पूछ सकी नी श्रर म्हारै पूछरा सू मुतळव ही काईं ? म्हारो तो काळजो एकाही फडक फडक करै हो– जे कीनैं ही श्रो नै लम्यो हुयो तो ?' जी मे श्रणगिरा गाट उठ श्रर मिटै हा जिया ववतै पाणी मे बुलबुला वगै'र मिट । श्रधघण्टे सू पैला ही वरा गाव मे ला उतारी मनै ।

"श्रव जासी परी ?" मनै पूछ्यो ।

"हां।" मैं कयो ।

वो श्रापरै ऊँठ पर चढ कीन गयो टा नी, करम री बात देख तू, हू ऊतरी बठ म्हारी वा नणद भाग री सामी क्यो मिलैनी–कुश्र सू गाय पायर लावती ही। मैं ध्यान वा दियानी–हूँ घर म बडी वा लारै सू वा ही श्राई श्रावती ही होळै सै वोली।

'हैं ए तू की साग श्राई इती रात गए ?"

"पी ताइ तो पाळी।"

"पछै ?"

मैं सोच्यो श्रण श्रापा नैं देस तो इयां ही लिया–श्रवै कूड करणै म कांई लाभ ? हूँ बोली ।

"एव ऊँठ ग्राळै सागै ।"

"कुण हो वा ?"

"ठा नही ।'

'ठा–नही तो वो कुणकैयाडो' थार वाप लाग हो—तू इ ग्रोपर ग्रादमी सागै चढ विया गई–मनै ता इ री रैर ग्राव ।"

"पो ग्राळै वाव कैयो ।'

"वा कैसी कुग्र मे पड–वोन पडसी ?"

हूँ की का वोलीनी–जाणै तारो जड दियो हुवै मू ढ ग्राडो का कण ही होठ सीड दिया हुव म्हारा । "साची बता वो कुण हो ? थारो पग वा र निकळन लाग्यो हो, जणा ही हू जाणै ही क ग्रब ग्रो वाटो ढुळन ग्राळो है । काळो मू ढो करासी इ म फरक नही ग्रर वा ही पगा ग्रायगी–सिणगारू घाडी सी नाचही जणा ही हू जाणगी ही पण कीन समझाऊँ काई माथा माडै ही तो । ग्रोखरडो डागरो खू टै पर टिकै तो ग्रा टिकै । चोवो–ग्रापरी करणीर काठ "ग्राई जठै ही जा भला हो । 'परल पास ग्रापरो भाई बैठो हा बोली सुण है नी ? देख थार तो घोळो घोळो सो ही दूध है–गोरी कैयाँ ही ढीकै तू तो, ग्रर काळी कया ही । पण इया साव घाळी ग्रास्याँ रास्याँ किता दिन काम चालसी ? मैं ई रा लच्छ स दख लिया, ग्रा डाळी डाळी फिर पण हू ग्राप इ री ऊपरली उस्ताद हू—पत–पत फिरू हू भला ! ग्रा खाइ फिर कीर भरोसै ? मन पूछ जणा तो दिनूगै सूरज ऊग्या सू पैला ही इ न घाळो उढा र सीख दे–नही जणास मन मीख द जिनो हू कठै ही मू-मायो ले र म्हार एढै लागू । म्हार मू रोज ग्रै केवा का देखीन नी । गाँव म वर्मा हाँ–भाई परसगी है, यात मे नाक कटा र को बसीज नी ।"

ग्रापर ल रा दा तीन ग्रादमी–एक दा लुगाइ ग्रौर बुला लाई । बा न सा वात समझाई–खूब मठार मठार–सागीडी घड परी । बा र ग्रगोग्रग

पी गी । मिनखा मे मू एक दो बोल्ला, 'राण्ड पग री जूती है—जची तो राखी नही तो पइसा पटक्या दूसरी ली—मरजी मोटचार री कुरम्तै है ता काढोना साठी नै ।"

एक अध बूढी सी लुगाई बानी, 'बाई ! इसी दीसती नो को ही नी पण की र ही जी री साखी कुण भरै । समझ जणा तो इ्याव काई छाने सो को है नी । तै जिमी सूधी नणद अर इसो देवता सो माटचार— भळै जोया लाधसी पण भावी अगली री—आपा काई करस्या ?

'अ सै बाता बैठी बैठी हूँ सुण बोकरी—भीत सी—काना मे डूजा दियोडी सी । म्हारै एक उनरती ही अर एक चढती ही पण मिनखाँ मे वी वळा बोलण गी हिम्मत को ही नी । बो जमाना ही इस्यो हा बीरा क लुगाई डरनी मास ही को काढ मकती नी ।"

ई वेळा नानी ा पूछण खातर एक नान्हो सो सवाल, म्हारी जीभ पर नाच हो क "लुगाई नै जूनी समझण आळा वै मोटयार जे आज थारै सामा हुता ता तू काई करती नानी ? तो हू सोचू हू नानी जवाब दवती वै हू बाँरी मू छया रै भाठा बाध देवती अर का बादी डवावडी सी बै मू छया, हू जडामूळ सू ही उपाड परिया फैंकती पण काइ हुगी गई बाता नै अबै धोडा ही को नावडनी । मै ही सवाल कियो अर मैं ही बीरो जचता सा समाधान कर लियो बात आ की अणओपती सी है पण मैं माच्यो जे थाडा सो ही सवाल कर लियो ता बात रा मजो जासी परो आ सोच मन जचत स जवाब सू ही म सन्ताप कर लियो । चावै की हुवै बात रै मजै नै हू सवाल री सिगडी म का नाखू नी । नानी कवै ही—

"लोग बाग गया जणा हू उठी-कन गई-बीरा पग पकडया अर बोली 'माता ! हू थार पगा पड्ू—धिगाणै तू म्हार पर पाप मत चाढ । तू कह तो हू तुळछी र हाथ लगा'र तनै कऊँ । मनै ठाकुर द्वारै मे बाडर भला ही, तू म्हारी मा गिण चावै सासू पण म्हारो जीवण मत विगाड । म्हारा

आसरा मत छुडा—म्हारैं बचिय न लिया पडी हू । म्हारैं ई चिडियँ री तनैं हाय लाग ज्यासी—तू मनैं म्हारो आळो मत छुडा–थारी किरपा री डाळी माथै मैं बरा राख्या है–तू ई न बसमझ री धधूरणी सू नीचैं मत पटक— पडता ई आ चिडियो फीस ज्यासी अर थारैं हाथ की को आवनी । मावडी ! दया कर म्हारै पर । मरस्यू जितै हूँ थारा गुरा को भूदू नी ।' बा सुरा बोकरी–हूँ बोली 'तू म्हारैं ओ कूडा कळक मत चाट–भला ही तू जिक न म्हारी जाग्या बसाणो चावै–राजी खुसी बसा परा म्हारी आसरी मत छुडा– म्हारो हिरिणया मरज्यासी, बाबा ! हू थारा अर बी दोना रो ऊमर भर गोलीपा कर लस्यू –हँस हँस नाक मे सळ घाल्या बिना परा म्हारा प्राण मत खीच–म्हारैं बचियैं पर किरपा कर तनैं दूघ री तळाया हुसी, तू म्हारी सासू री ठौड ह ।

मैं दरयो इ बेञा नानी र पापनैं मू ढ पर दुग्गी केर लरा बरणी अर बीगडी । बीरा पतञा पतळा होठिया धूज्या अर आख्या म चौमरा चालग्या । मैं दरयो बरसा रो भेळो हुयोडो इ र बचिय रो प्यार आज इरा मायला अरागिरा पटता न फोड बारै निकळयो जिया भाठै गी काया नैं बीघ कोइ विवळ भरणो बह उठै ।

एक दा मिण्ट बोली रही–दुख रैं अयाग सागर मे डूयोडी सी । हूँ बोल्यो 'नानी फेर थारी बा नरणद तैं इत्ता कैयो तो ही की को वालीनी

"इसी बोली कै आक सू ही खारी अर काद सू ही कोमी ।' क्या क 'थार सू बात करैं बीरो छन मईना छात को जावनी । पुग्राई छीरा करणी हुव जिका थार सू बात करैं । म्हा सू क्या सातर माथा लगाव–– आपा र ता लाम्बी चाडी टसी ही बात है क का ता इ धर म तू रमी अर का हूँ ही । फेर थारा भरतार जाण का तू । मन विचारैं क्या खातर तैं माता–हूँ ता तन हाथ जाडू–मनूणी ताई रा । तू हुव न ऊज०ा कर म्हान । खानी ही ह तू–टट पितग ताई पाणी पा दिया त । हूँ तो बाळ रांड हुगा

हो–नातै गई तो ही मिनखा दाई । सुख तो खैर करम म नही लिख्योडा टु तो की रै बाप रो मिनै पण जे कीने ही पीरै मासगै भण्डाया हुवै–थारै जिया काळो मूढो करायो हुवै तो बता–जे असल बाप री बटी है ता ? हूँ तो तऊँ थारो काळो मूढो लीला पग–आधडी हो नाए कठ ही कुअ खाड मे म्हार भावै तू ।"

'बेटा ! हूँ रात भर रो बोकरी–पडी रही । दिन भर री मरती ही आखै दिन ताय म फिरधाडी–माथै म भभकी चढगो–घरे आवती न रोटो आ मिली । मरती री आँतां कुरळावै ही । पडी ही मरघोडी सी । हूँ मोचती ही कै लुगाई जात काळजै री कवळी हुवै—पण आज मनै ठा लाग्यो कै जिती लुगाई हया दया बायरी हुसक ह–जिता ँसक रा ओग बीम धुरै बितो भळे सायत ही कठै ।'

जिया दिन म ऊकळनी आवी चालती हा अर बण ऊगनी नीसरती नान्ही–नान्ही कँवरी कामळ फूल पाखडया नै मसळ दी–ठीक विया ही म्हार काळजै मे आखी रात बी ठण्डी निरमळ रात मे एक ऊकळती पीग ऊछाळती आँधी बाज ही–बण म्हारी ऊगती ऊँची आवती बोनो नै कोभी तरे मोस नाँखी–बीरो गळो दूप दिया–फेर ही हूँ जीवती पडी ही–विधाता री मौज देख तू । आँख्याँ म नींद कठ ? फूटघोडी कोडया सी खुनी पडी ही बैं । रू-रू मुळै हा । डील लाठी सो करडो । हे सांवरा ! दिनूग काई हुसी—सोचता ही धुजणी छूटती ही ।'

'नानी ! थारो छारो–रात न थारै कन को हा नी ?'

अबक मैं देख्या कै डोकरी री गुगळी अधबुभी आख्या सू पाणी चाल्यो अर गाला पर सू नीचै ऊतरग्यो । आख्या बन्द करली । मूढो छात कानी कर जाणू आपरी जीवण री पोथी रै इ पानै न अबै पढणो का चावैनी वा । एक लाम्बी सास ली अर चुप हुगी ।

म्हार जची क साचेली इ डोकरी रा औ आसू भरया पाना, ईनै

सुणावण खातर आपा न इत्ता जिद नही करणो चाईज । हाडक्या गी सिंदूकडी सी इन जद गळगळी अर बसबसीजती देखू तो म्हारै मे की बाकी वा बचनी । दया री इ चालती फिरती देवळी न दुखियारी देख, म्हारी आपरी आग्या छीजगी जाणू कै आगीनै नही मुन्नू तो ही ठीक है । गुण करमी ता इत्ता ही घणो । कथा कीर ही काळज ग छाडा उनारा बिना मुतळब ही पण म्हाग तिरसा मन ई कथा रा पाणी पिया बिना आनळ जाकळ हुव हो बीन कुण समभावै ? आगै काई हुयो ई नै याद करता ही मन गी तिम्म ग्रौर घणी हुगी—मन नै समभाया कितो ही पण को मायोनी वा । मोच्या नानी र गळगळै मू ढै मामी देखू ही नहीं आरया आडी पाटी बाजू पण कान खुला राखू कदास ई रस्न कथा री की इमरत मन रै मू ढ ताइ पूगै ता वा मुरझावै नहीं । पाणी र मिठास गे आणद ता काई तिम्सो मन ही जाण सक है ।

नानी बोलती गई बेटा ! घर म रवण री म्हारी इत्तो मनस्या का ही नी जिती म्हार काळजै री कार री ममता ही । हूँ मा ही र मा ! मा रा काळजो मण रा हुव भलो । इमी तपती लाग्या वा नही पिळघळै आ किया हुवै ।

आधीक रात गई परी हुसी—हूँ उठी । बारै बागळ में म्हारो माटचार सूतो हा । गाळै हाळै हूँ सिराणै कनन पाग स्यारै जा'र बठगी । आडो ताळा खीच्यो । बा जागग्या । हूँ बोली, 'हाळै बाल्या भलो, आवैनी वा जाग ज्यान—ओ की भोळै अगो हो इ वास्ते मैं समभायो बीन ! आ नम्भार खराब करमी यानै—म्हारै म आ लार लागोडी है चूडावण सी—खाई वा धापनी । ठीक कऊँ थान म्हारै छाग री आ हियाळी सावळ का रावनीनी । ज लार लाज र डर मू थागी घणा राग ही ली ता किमी पार पडी । म्हारी हाड ता करण मू रैई—हूँ मा हूँ मा बीरी । आनडघा रो ग्रस हू म्हारा म्हार हिय आट हुता ही मा मा कर बो दिन म न्म बार रा रा डिगलो हुसी । ई री ग्रवाज आम्या दन बीनै इ री मा न

सोधसी–कठै सू ला'सो मा ने थे पछै ? ई रो काळजो गिरै छोड देसी–ओ आधो ही को रैनी अर कुण जाणे जे अगलै घर रो रस्तै ही नाप लै तो ? अबोध री आ हित्या ? देख्यो, लारलै साल बो टोघडियो दूध पावता पावता आपरी मा रै बिना छेक्ड मरयो ही नीसरयो । म्हारो छोरो ! म्हारी आन डघा करळावै माय सू ।" लारै जावती नानी री बोली की गळगळी लागी अर निमषी न्यारी । बीरो लिलाड माची रै सिराणै कनला पागै पर टिकग्यो । मिण्टेक हूँ को बोल्योनी–देख बोकरयो । पछै कँयो, "नानी ? ' "हाँ भाई ?" कह परी बरा माथो ऊँचो कियो । बी बेळा मैं देख्यो आगरणे आलो हो अर आख्या बीरी गीली । बा बसबसीज उठी । म नै लाग्यो कै बी री आतडघा रो सगळो पसनेव भेळा हु, आख्या र रस्तै सूकं आंगरण मे चुसग्यो ।

"मैं कोई जुलम को कियो है नी भलो ! भला ही मनै गगाजळ हाथ मैं देवो अर भला ही ठाकुरद्वारै मे बाडो । म नै काढो मत, और नही तो मनै हाळन ही राखल्यो अर बो ही छोरो की मोटो हुवै जिनै, भला ही पछै काढ देया मनै—हूँ राजी हूँ ।"

"बो सुरण बोक्रयो । आख्या ब द करली एकर । मैं ठोडी रै हाथ लगाया, 'हा तो काइ क्यो मनै ?' धुजतो धूजतो मो बो बोल्यो, 'भई म्हारो तो की सारो नी, अगलो करमी जिया हुसी–काइ बताऊँ ? घणो हो, हूँ हो चानू परो सागै थारै पण ई नै पूछ्या बिना सिरकू हो कठै ? म्हारो तो गाव र गोरवै सिवा की देख्योडो ही तो को है नी–भावी थारी माडी है ता म्हारी किसी आछी है ?"

कथ कानी सू भरपाई करली । ईं सू तो जे भाठै न क्वती तो ही सावळ ही । मनै रोस ही आवै अर गेज ही । भाळो मीत दुसमरा री गरज पाळै, साची है । हो तो खैर कुम्रै रो कबूतर ही—बन रै राज सू नीकळ'र बापडा जावतो ही कठै ? आ ही औस्था म्हारी ही बी वेळा ।

म्हारै खातर बीनै दुख नही हुवै, इसी बात तो को ही नी । मैं जद

वीरी ठोडी रै हाथ लगायो तो म्हारी ग्रागळया ग्राली हुगी । दाढी भीज्याडी ही । कुण जाणै इ सू पैला बो कित्तो रोयो हुवै ? हूँ चाली जद वीरा कठ गळगळा हुग्या, बालीज्यो का हो नी । उठ'र पावडो एक चाली जद दब्योडी सी बोली मे सुणीज्यो, तो पछै हूँ 'मन मे साच्यो' पछ तू जणीता नै रोए म्हारै भाऊ ग्रर हू तन खुणै म बैठ कठै ही घोवा देस्यू जीवत नै– ऊमर भर । हू ग्रागीनै नीक्ळगी । हू ग्राप बी डाकण सू डरती ही । म्हारी वा ऊमर ही विसी ही । गाँव सू परबारी चिडकली न हो को जाणती ही नी ।

साळ रै लारै ही एक चौकी ही, बी पर जा र पडगी–गम्योडी सी । ठाण कनै गाय बैठी–उगाली सारै ही । गाय नै हू सूरज सूरज क्वती । म्हार जद सूरजरोट रो ग्रजूणो हो बी दिन वा हुयाडी ही, इ खातर बी सू म्हारो की हेत वेसी हो । मैं होळै सै कैयो 'सूरज' ! उगाळी छाड बण भट नस ऊँची करदी । हूँ उठ परी वीर सिर पर हाथ फेरण लागगी । म्हारा बा बूकिया चाटण लागगी । मनै रोज ग्रायग्यो—ई रो नह देख परो । हूँ वोली, लै माता ! हूँ तो ग्रबै घडी दो घडी नै जाऊँ हूँ सायत । थारी मैं सेवा करी–मैं सू तान ग्राई जिसी, पण ग्राज एक बात म्हारी ही सुणल मा ! म्हारै बी भोळै भूतियै री खैर तू करै–जिया थारै टोघडियै री कर ।' वा म्हारै सामी ग्रांख्या फाड देखण लागगी, जिया म्हारी वात बण ध्यान स् सुणी हुव । देखो, पसु मे ही कितो प्रेम हुवै बा भळै मनै चाटण लागगी । म्हारा रू रू गदगद् हुग्यो ग्रर ग्रांख्या मतै ही वह उठा ।

हूँ भळे चौकी पर जा र पडगी । चाद ग्राभ रै सुग्रै विचाळै ग्रायग्यो । च्यारू मेर मोटो कूण्डाळियो हो बी रै । खरा सू भूगळो ग्रर उदास दीसै हो जिया म्हारै दाईं खासी देर रायोडो हुव । निमधा निमधा रोवता सा तारा हा कठ-कठै ही–म्हार कानी देखता सा दीसता हा । ग्राभै रो रग टीगरा री गिचोळघोडी पोतरी रै पाणी सो लागै हो ।

हूँ बीनै देख बोकरी–गोट उठता गया । दस बोकरी–गोट उठता ही गया । मैं देख्यो दूजरो ताव-भाव खाण्डो चांद, बीरै च्यारा कानी गूगळो कूण्डाळियो–बी कूण्डाळियै मैं दो च्यार तारा । आ न देख म्हारै जी में जची दखो आभै मे आ एक गोळ नाडी है जिकै मे चांद एक कवळ है । नाडी (कूण्डाळियो) मे काई ताळ पळा कोई हिगावडी भैंस वडी है अर बण बी नाडी नैं दिनभर घणी ही गिदोळी है। जावती जावती बा बी कवळ री एवाघ पाखडी ताडगी–बीरा टुकडा अैं तारा कठै-कठै ही तिरता दीसै की समझ्या रे !' नानी बोली

"हा समझू नानी !"

"तो बता नाडी कुण ही ?"

हूँ नानी रै मूढै सामी जोवण लाग्या । नानी बोली, मोथा वात काई म्हारो सिर सुणै ? बा नाडी हू ही अर म्हारा छोरो बी मे कवळ हो– म्हारी नणद भैंस ही जिकी म्हारै माणस रै पाणी नैं खूब गिचोळघो । म्हारै कवल नै ईंस्यू बडी ठेस लागी–बो मनै खाण्डै चान्द सो दुवी लागै हो । हू बीनै भूलणो चावै ही पण बीरी ममता ग दो च्यार टुकडा म्हारै माणस मे तिर'र बीरी याद न घणी गरी करै हा ।

नानी री आ बात सुण मैं बीर मूढ कानी इया देख्यो जिया कोई छोटी किलास रो छोरो की महामोपाध्याय सामा देखतो हुवै अर दखता ही जावै । म्हार वैम हुयो कै आ, नानी कोई नाग लाक सू आयोडी है का ई धरती री ही ? हू सुण बोकरघा 'हा कह नानी ?" अबकै, नानी की गम्भीर हुगी बोली 'हाँ रे ! कवल री याद आंवता ही हू एकदम उठी अर छारै कानी गई । बी डाकण सागै सूतो हो–सुख री नींद मे निधडक । गोरा गोरा पगिया ढीला छोड राख्या हा—एक हाथ आपरी माथळ पर दियोडो–एक हाथ गळ री हँसली कनै । सिर पर भूरै केसा रो भडूलो । अैस आसोज म माताजी रै उतारणो हा—लिलाड रै सुभ्र बिचाळै लारलै

सान लोटै गे बाना बैठग्यो हा–बो मनाण मन अवार चांदण पख री दूज रै चांद सो फूटण लाग्यो । गोरो निछार–माव उघाडो–गुणदवजी सा लागै हो मनै ।

म्हारा छारो हा र ! बीरा ही ठोव र त्यायाडा को हो नी । हू मा ही बीरी–म्हारी ग्रांत ग्रांत इ री गवाह ही । मा आपर बेटै न का ले सकनी ग्रा किया हुवै । मैं सू को रईज्यानी । म्हारी सूकी आंता रस सू भर उठी । म्हारा हाथ म्हारै वस म को रैयानी । मैं बीन ग्रघर सै उठा लियो गोदी म । म्हारो दिनभर रो सूरा भूखा काळजो हरया हुग्यो जिया दाव सू बळघोडी बल चैन म पांगर । छाती दूघ सू भरगी । बीरै होठा पर मैं म्हारा होठ राख दिया । नह रो सागर ऊमड्यो ग्रर बाघ तोड नणा सू नीच ऊतरघो । बडी ग्रजबगत ही म्हारी वी वळा ।

मैं दस्यो नानी मांय बसवसीजै—बीरा मरघा सा होठिया की–की कांपै हा जाणू आपर बी बाळक रै होठां पर ही मेल राग्या हुवै । आंख्या में चौसरा चाल हा । साच है मा रा काळजो किता क्वळो हुवै—नारी म किती नेह हुवै–मनै आज ठा लाग्या । नानी चावती ही क बीरी ग्रास्या सू आसू न नीकळै–जाणै वै बीरै बूढाप रा रैया सैया माती हुवै । हू देखता हो बीरा ग्रै ग्रणमोल माती दम पांच तो ग्रांख्या बन्द किया पछै ही–धिगाण ही बारै ग्रा पडता । इसी बबस कनै ग्रो धन रैवण नै कठै पड्यो है ? बूढाप मे नानी रा खजाना इया लू टीजतो देख मैं जिस्यै भाटै म ही करुणा फूट ही, व्यथा सू म्हारी बेचैनी केई बार मोकळी वघ जावती । नानी मिण्टेक तो बिरमानन्द म डूबी रई पछै वाली हां तो, म्हारो मा–बेट रो बो बोपार दा मिण्ट ही मुस्कल सू को चाल्यो हुसीनी वा डाकण बभडक उठी–उठता ही म्हार कानी देख'र कोभी तरै सू कूकी, "ग्रोय रण्डार ए—मन भला हो मार नांखि–छोर रै की मत करदेइ, म्हारै छार रै कीं मत कर देई !' रात ग्राघी सू घणी गई परी ही । ग्राखो गांव सूतो हो । कदे–कदे

हो परिया एक आध गण्डकडे री 'हाउ-हाउ' तो सुणीजै ही वाकीस पाख-पखेरू तवातव आपरै आळा मे आसरो लिया बोला-बोला पड्या हा।

अचाणचकी इसी चिरळी सुण इनना बिनला पाडोसी जागग्या। घणी आयो। सै बोल्या 'अरे हुया कार्ई ?' कांइ न धाइ—डरू बापजी वठ ही रीसा बळनी रण्डार, द्धार रा अवधान नही करदै—ओयरै मनै तो धूजणी छूटगी—छोरो म्हार कनै सू खोस लियो देवा !' बा म्हारी नणद बोली।

छोरो एना ही रोवै—थाम्यो थमै नही। ज्यू ज्यू छोरो रोवै बा कैवै, 'अर वैरण ! बाळ बता तो सरी की कर ता वा दियो है नी तै ई रै ? नही जागती ता हणै ई फूल नै मसळ नाखती।

हू अबार दो मिण्ट पैला भूख तिस्स नै भूलगी ही। सिझ्या जद कोई नान्है बाछडियै री मा अवाडो भर गोहो सू ढीकती आवै—बी रो वाळजो बाछडिय सू मिलण नै कित्तो हूळस—कोई बाछडिय नै बी स्यू छुडावै तो बीरै लारै इसी भाजै कै बीन हुण सीगा मे पो लेसी—बीरो सांस गळै मे वो मावैनी एकवार। हू तो मानवी ही। मिनखा सरीर हो म्हारो। म्हारो सुख दुख जिनावर सूण सू कित्तो बध्योडो हो तू ही मोच। छोरै नै खोसता ही म्हारै माएस मे एक हाहाकार उठचो—इत्ती गरी चोट लागी कै हू तिरवाळो खाय बैठ ही पडगी। दिन भर री भूखी तिस्सी। एक घडी ताई चेनो ही को बापरयोनी। हू जीवू हू का मरगी मन की ठा ही को होनी। अधचेत अवस्था मे म्हारै काना मे एकर और भणकार पडी बी रण्डार रै मू ढै री क "आपै पर आयोडी रण्डार नागी रे बापजी ! टाळै राम इसी सू।" !

आख खुली जद पीळा बादळ हुग्यो हा। चिन्नी कागना,बोलता सुणी ज्या। घर रै आगै एक नीम हो—एक छोटा सा,पीपळ। दोनू सागै ही भाएला सा। च्यारा कानी एक बाडो टिबो। म्हारा आपगा लगायोडा सीच सीच पाळ-घोडा। हुवैला कोई पाच-पाच च्यार-च्यार साल रा। माथो सूनो सो हो—जी

सारा को होनी । एकर वी यरण री वोली मन ग्रौर सुणीजी, मैं क्यो हो ना राड मिसली है–जलडा करै है–इ रै की को हुयोनी।' हू उठी। दो तीन ग्रादमी ग्रौर हा वठै। मनै ऊभी राख–म्हारो बारियो कतर लियो ग्रर धोळो ग्रोढ़ा दियो–म्हारै मोटचार, ग्रर विदा करदी सदा सातर। ई रो सीधो सो मुतलब हो, "म्हारै भावै तू वाढघोडै तिल्लो म जा भला ही—म्हारै काम री तू ग्रवै को रैईनी—तेली सू सळ उतरगी गोघा सावो ग्रर भला ही गधा तनै ग्राछी लागै ज्यू कर–धरती धणी ही लाम्बी चोडी है।

हू परवस ही। छारो ग्रागलो रो हो–राख लियो–म्हार वाई साग हा हू जे ग्रादमी तो हुती तो वठ हाक्ठ ही धू णो धुखा बैठती। जठै मन माया हो को धापनी बठ किया म्हारो निभाव हुतो ग्रर बा टम इसी ही जद मिनख धारतो तो लुगाई री जीभ काढ़ लेवतो। ग्रवार तो घर मे भाडै सटू रव जिक न ही कोई धिगाण काढै तो मालक री ग्रांख्यां सू भी करद–बाहो वेटा ही सारो कीरो।

सिवा पीरै र ग्रौर कठ ही ठोड मनै को ही नी ग्रर ग्रां दो जाग्या सिवा हू कोई जाग्या ही तो को जाणती ही नी। एकर नीमडै काना देख्यो पीपळ नै सिलाम करी। बाडोटिए कनकर नीकळती च्यार ग्रांसू चढाया। वसवसीजत काळजै सू मन मे कैया हैं विष्णु भगवान! म्हारै छोर न सदा सोरा राख। मैं थार पगा पर सिर पर घडा ल्याल्या घणो जळ सींच्यो है–म्हारा देवता! ग्रब ई पर तू छाया राखे इ रो मां बाप तू है, म्हारा शालगराम। हू तो ग्राज जावू हू– कठ ही ग्रणजाण दिस मे।

मन मे ग्राई ग्रठ ही फांसी साय र मरज्याऊँ पण को मरी–योनी। जीवण रा ग्रौर भोग भोगणा हा कि कै सू श जीवण री काई माटी ममता ग्रोज् बाकी ही–मर को सकीनी।

गांव री दस पांच लुगायां बाडो पर मूं म्हार कानी देख्यो। ग्रापस मे गुरबत करती ही–ग्राछी भू डी कुण जाणै किसी। ग्रा हू जाण ही क ग्र

मन अचूम्भै सू देखती ही । गाँव मे पचासू बरसाँ मे इसो वाको का हुयोनी कोई सैंज बात थोडी ही—म्हाँ सू कुण मिलतो हो—की रैं पीड ही । येठा म्हारी कोई सायण मिलती पण म्हाँ सू बात करण मे सौ ही घाटो—आबरू माटी मे मिलावणी हुवैं जिको बात भला ही करौ—म्हारै सू । इसी गळती कुण कर हो—जाण बूझ ताव नै तडा कुण दे ?

गाँव रैं गारवैं एक बूढी पाडासण मिलगी । बामणी ही हाथ उजळा करण गयाडी ही बोली, "हे ए— आ कुण है ?"

हू को वालीनो चाल बौकरी । बा म्हारै लारैं दौडी थोडी 'कुण है ए बोलै क्यो नी ?' हू ठरगी—जमी कुचरण लागगी । मन घोत्री ओढघोडो देख्यो । बण सुण तो पैंला ही ली ही—ठा हो बीनैं बोली देत अग रण्डार जुलम किया है—वापडी गऊ रो अपघात कियो है—जे अधगई म आँधी नहीं हुवैं—काढ नहो निकळै इ र, तो तू मनै कैंये बामी मू ढ कऊँ तनै ।"

म्हारी आख्या एकाही, दाळ धावता पाणी सू भरयाडी चालणी चुव जिता चूवती ही । इसैं मोकै बण जद आ अपणायत री बात करी तो हू म्हारो आपा भूल,बाथा घात बीरैं काठी चिपगी दादा म्हारो पाळजो काढ लियो' धाड मार हू रो पडी । रो मत बेटा' बण म्हारा सिर पळू स्या भगवान थारी भली ही करसी ए—अन्त—पन्त दरडो खोदसी जिको ही पडसी । बा आप तो दूध री धोयोडी घणी ही ऊजळी है वापडी—आ वो गाँव जाण है बीनैं पण चोखो पूगसी आपर कियाँ नैं तो ही एक बात मन करूँ बेटा, तू की दाव कि लारैं मत हुए ना फोडा पडला । कोई वाणिय बकाल रैं खुलना मजूरी करैं का ऊन—चू खी कर परा पेट पाळ लिए —आवैंनी भेळै करूँ ही काद म फस ज्याव !"

हू बीर पगा लागी । डोकरी री आख्या छलीजगी । हू बोली 'दादी ! म्हारी भावी ।"

टुरगी। बीस पच्चीस पावडा निकळी जद ताई बा चितराम म कोरचोडी सी बठै ही खडी खडी म्हारै कानी देखती ही। हू चाल बाकरी। मन म सोच्यो "पीर जाऊ का नही। न म्हारै मां, न बाप अर न मा जाया भाइ ही। काकै रा बेटा भाई है—ब बदनामी रै इ ठीकर नै राखण सू कद राजी। सीर तो है तो सोभा म है, कुसोभा न कुण चावै ? वै आपरी रसोरी राटी खाव। हू बा बापडा नै सताऊ ही क्या ? बारी भऊ चरचा घणेरी हुसी। बा काढ दी तो और ही माडी हुसी। फेर सोच्यो तो जाऊ कठ ? काई एडा तो हुणो चाईज। छोरो याद आयो। रोऊ ही रोऊ। मन मे सोच्यो बठै ही चाल मरू—छारै री आरया रै आगै ही। टमसर कुण बीन सिरावणो करासी –टावर है छेकड कदेई टट्टी फरागत माय बठ देसी कुण मिनान करासी कुण गाभा धोसी ? भोळो भूतियो है। दस पांच वार मा मा कर'र रैज्जासी—जोर काई करसी इसा ही भ न'र मायो है बो।

फेर सोच्या मन म 'जे अबार तू मरजावती—जद कुण बीरा लाड कोड करता। जिकै मिरज्यो है, बो ही बी री रिछपाळ करसी। तू समझलै बो भाव आज ही मरगी। मनर चरखै माथ इसा अणगिण तार निक ळता अर टूटता हा। सूरज साम्ही देख्यो छव साढी छव बजी हुसी। खब भरचै आभ म सूरज इसा कळा हीण लाग हो जिया कोई रौगन उतर-घाडी आवी आरसी हुवै का चौमासै म काटीज्योडो कासी री कोई थाळ निया हुवै। काई नोसेक वरनी पार करी हुसी, एक मेजडी आई रास्त पर ही–चडी गर गम्भीर। बिमाई न्हावण खातर बठगी एक लम्बी सास ली–ऊपर जोयो फेर वानी, मन मू आवनी जावती घणी बार, थार नीच बठती–पीरै सू पाछी आवती थार हमसा चूरमै रो पीण्डियो अर पाणी रौ कळसियो ढाळती, तन किमो ठा को है नी मातो। पण आज हू बैठी हू थार नीच न आज म्हारो मामरा है अर न पीरो, न पीण्डियो न पाणी मरती गी भाता सीज है—म्हार कन वो का है नी मा– आसू है खाली, तू क तो

चाढद्र । तू बोल भलाई मतना है तू जीवनी जागती पण ई खातर ही तनै कँऊ म्हारीं मावड़ी ! आज आपणा, मैं पहला राम राम है–भलै मायत ही थारा दरसण हुवै खेजडी चिन्ता मग्न सी इसी बोली-बोली सडी ही कै जाण् म्हारी बात कान दे'र सुणै ही। तनै बिसवास को हुसीनी खेजड़ी री काया सू पाच सात खोखा म्हारै खोळै मे आ'र ईया पडय, जाण जावती न मनै अण परसाद दियो हुव । हू सोचू जे वा बोलती तो मनै आपरी गोदी सू कदेई जावण को देवती नी । *

* थळी रै घणै ही गावां मे आसारुडियै री एक खेजडी हुव—गाव री हर दिन मे मारग र एकै पसवाड —रोही मे । गाँव गावन्तर खेतपान आवतां–जांवता लाग लुगाई ग्वासवर फोग री डाळी का इनै बिनै पडयो लकडी रो कोई घोचो बीरी जड कानी नाखै, इया बीर च्यारांकांनी लक-ड्यां रो एक बाडोटियो सा बणज्याव । वां लकड्यां न देख कोई आपरो आदमी आ समझलै क आ खेजडी कोई देई-देवता री है ली अर जाणै जिको आसारुडियै न दो च्यार लकडी जिसी बठै हुवै चढावै । और खेजड्यां दाँई लोग बींरा लू ग को तोडैनी । घणी ही भतवारण बीनै चूरम रो की पीण्डियो अर पाणी रो लोटो ढाळ, धोक देव । बानै मैं कवता सुणी है कै —

आसारुडिया आस देई, गायां भैस्या नै घास देई,
खाटी मोळी छाछ देई तेल री तिल्लोडी दई,
घी री घिल्लोडी देई, नुई पुराणी बाजरी देई,
का-ह कँवर सो बीरो दई राई सी भाजाई देई,
मैल माळिया सासरो देई, सासू सुसरा साळा देई,
घर देई मांकडो, पथ देई मोकळो,
दाळ फलकै रो जीमण देई, ऊपर सबको भात रो।
पुरसण आळी इसी देई, जाणू फूल गुलाब रो ।।

अचाणचकरो ही गाँव कानी देख्यो मैं, तो म्हारी आख्या अचूम्भ म पडगी । दोनू हाथा सू आख्यां नै सावळ मसळ-मसळ भळै देख्यो-भरम तो को है नी-आवै नी तिरवाळा आवै । पण इसी बात को ही नी । आठ दस पावडा परिया—पतळी राती सी एक कुतडी पगां नै सू घती आव ही । हू समझगी—म्हारी ही कुत्ती हो बा । ढाई एक साल पैलां ई री मां मरगी ही मईनै एक री ई नैं छोड'र । मैं इ नै दूध, दळियो, छाछ रावडी लिका लिका पाळली । म्हारै आ हेडै हुगी । ई सू हू ऊपरली हत तो इतो को राखती नीं, पण म्हारै मन रो हेत ई सागै मोकळो हो—ई रो मोटो कारण ओ हो, कै म्हारो छारो अर आ बिल्कुल साईना हा । हू साचती देख म्है दोना एक दिन –एक घर म सवाद करी –बा आपरी जों गी जडी न लिया धुरी म पडी रैवती —आज बापडी मरगी–बी री बेटी रो काई दीन ? जे आज हू ही मरजाऊ तो म्हारै छार मे किसीक हुवै ? आ साच र हू लौक दिखावै मे भला ही कूट लेवती कँई बार ईनैं पण मन सू बुरो को चावती नी ई रो—पण मन ओ विसवास सपनै म ही का होनो कै आज इसी ओडी बेळा म आ ई या म्हार लारै आसी ।

पूछ हिलावती म्हारै पगा कनै आय र बठगी आ । सास माव ही को हो नी । बीनैं दखता ही म्हारी आख्या मे चोसरा चाल पडचा । मैं हाथ फेरचो, बोनी "गूगी रण्डार, अबै म्हारै लारै क्यो खातर ब.ी है ? पाछी जा परी ।' नस लाम्बी कर भू जमीन पर टेर दियो अर म्हार साम्ही समझदार सी जोवण लागगी ।चूँचूँ कर एका हो पूछ हिलाव

लीलो नीलो घोडो देई, ऊपर जीण बनात री ।
औछ पायां ढोलियो दई ढोलियो रग राज री । आदि आदि ।
आसारुडियै सू मतळब । 'आशाय आरुढ' आम पूरी करण आळो रिधी सिधी दाता देवता, रामकर विनायक जी ही हुणा चाईज । ले०

ग्रांधी मे वडी रै बाघ्योडो कोई करनाळो हालतो हुव जिया । बीरी ग्र स्या मे मनै ग्रपणायत दीसी । नेह नदी ऊमडती लागी बी रै छोटै म काळजै मे । बोल भला ही मत सको ना, ग्रातमा री ऊजळता छानी थोडी रैवै साफ चिलकै ही काच मे चिलक जिया, मैं हाथ फेरयो, छोटा छोटा पगिया ऊपर कर दिया बण, पेट दिखायो ग्राडी पडगी । हू बोली, "मनै इत्ती दूर विदा करण ग्राई है काइ—भई, कदास ग्रा पाछी नही ग्राजावै वठै ही ? सुण र फेर पू छ हिलावण लागगी जोर-जोर सू ।

हू ई न दिनूगै सिग्या रोटी खीचडो नाखती, हेलो मारती मुदकी ! मुदकी ! का ग्रा भाजनी ग्रावती । छोरो इ नै जद 'मूतकी मूतकी हेलो मारतो तो म्ह स हसता ग्रर बीर मू ढै मू 'मूतकी' इसो ग्रापतो कै सुणतो वो ही कैंवतो छोरा ! एकर भळै हलो मार तो ?' खेत मागै कुग्रै सागै, पिचली सी लार ही रैवती । कई जणी कैंवती 'ग्रा ग्रागातर मे थारै की लागती ही काई ? बडो हेत राखै ।" हू कैंवती, "बाळनजोगी फीटी मरै है ग्रो ।' कदे-कदे रीसा बळती कूट नाखती । एक दो बार ई रै लारै मैं ग्रौळभा भाल्या । म्हारै घरग्राळा चावता कै हू ई नै इया न हिलाऊ नही तो ग्रा घर ही को छोडसी नी । कदे कदे हू ग्राप ही को चावती नी पण बाळन-जोगी मनै देखतां ही छुळी कर कूदण लाग जांवती, ग्रर कूदती ही नव-नव ताळ ।लटुवा करती वेजा ही घणा । म्हारो जी इसो ही कग्तो हो—हू भळै टुरडो नाख देवती । ग्रबार सू पैला ई मे लाख दोस हुवला पण हणै ग्रा मन सरव सान री लागै ही । हू बोली, 'म्हारो सागो तो पक्ड भला ही— पण खासी कांई म्हार साग गू गी ? म्हारे कनै तो काळजो है—पाछी जा परी । ग्राडी पडगी मनै कळजा दिखायो, मुतळब ग्रोक ग्रो काळजो ही म्हारै कनै है—म्हारी धिरियाणी ! थारे बिना मनै रोटी वठे क ु ही ?' जित्ती ग्रा ग्राज म्हारो नडी ग्राई बित्ती पैलां कदेई को ग्राइनी । मैं धीन धूक-बाट डग धमका की परियां काढी पण चू-चू कर रण्डार पाछी ग्रा मरी।

छरड ऊयप परी मैं बैयो, तो आवरी ठाम लिए पीण्डो म्हारैं साग।"

हू पो वानी टुरी। आठ पूणी आठ रजी हू वी पुगगी। वो पर मन रावणहत्य रा तार वाजता सुणीज्या। वणा मीठा बाज हा। देखू ता एक अध बूढा सा आदमी उरस चवर पनरैं व री एक आधी छोरी वीरी, अर सागैं ही वीरी मां। परलैं पास वो माळो वावो बैठो हो अर वनैं वीरी लुगाई। उरिया एक किनारैं हू ही वोली वानी जा'र बैठगी बूढियो बजा वतो हो छोरी गावैं ही वण भजन गाया जिका मनैं आछी तरैं सू याद है

"नहीं भावैं थारो देसड़लो रग रूडो।
थारैं देसा म राणा साध नही छ —लोग वसैं सब कूडो।
गहणागाठी हम सब त्याग्या त्याग्यो कर रो चूडो
काजळ टीकी हम सब त्याग्या, त्याग्यो छैं वाधन जूडो।
मीरा क प्रभू गिरधर नागर, वर पायो छैं पूरो

वण छ रा इसा मिठा इ न गायो क ईं रो मिठास म्हारैं रू-रू मं रमग्या। मिठास सू ही जादा ईं रा नसा म्हारैं चढग्यो। ईं रा भाव म्हारे अगो अग बठग्या। साची पूछ तो सावरिय री आस्या रा बीज आज सू ही म्हारैं काळज री वारा जमीन म जम्या जिको आजू एक हरयैं भरयैं रूख रैं रुप मे म्हारैं अन्त करण री ऊची नीची जमी पर बीया ही खडो है—सुख दुख रा वायरा वीरा की का बिगाड सकयानी।

मैं जाण्या क मन ध्यान म राख र ही मीरा आ गीत गाया हुमी। आज सू किताक बरस पला वण म्हारैं खातर ईं नै करयो—अठै रैवण सू म्हारा मन फाटग्या हा ही अरैं बा ओर ही पक्का हुग्या। मुआ जाऊ जाऊ हा फूफो तवण न ही आयग्या—म्हारैं तो अण ओ ही काम करचा। मैं सोच्यो, कदेईं म्हार किसी ही मीरा म ही बीती हुवली बापडी म जद ही तो

अै बोल बीरै काळजै सू निकळ्या ।

म्हारै घोळो ओढण नै हो, बो गाभो, मैं राजी हुय दे दियो डोकरै न, और म्हारै कन हा ही काई ? बै तीनू गाव कानी गया, अर हू उठ'र पौ-आळै बाबै रै पगा लागी, बोली,

"म्हारा बावा ! रात जिकै आदमी साग मनै चढ़ाई ही थे —बो कुण हा—कठै मिलै अबै बो ?"

'क्या बेटा !'

'क्यो क्यांरी बाबा ! आभै पटकी अर धरती को झालीनी । बिगडी रा किम सुधारण है ?' मैं बींनै सगळी बात माड र सावळ समझाई । डोकरै री आंख्या म आसू आयग्या ।

"बाई ! बीनै हू सावळ तो को जाणू नी—बाकी बो पाँच सात दिनां सू, कदेई, मईना दो मईना सू अठीनै आया जरुर कर है । आदमी भलो है । पगै लागणो करै । कदेइ पाच पइसा चिलम तमाखू रा भी दिया करै है कोई सिरदार हुणो चाईजै । आवण नै तो बो आज ही आसकै, पण भरासो काई । थारो काई लै, आसी जद ही सही । तू म्हार धरम री बेटी है । अठै ठैर एक दो दिन । कह ता, तनै थारै गाँव पुगाय दू ?"

हू थक्योडी ही अर मरती आगी । ज रो बो रो "रैनो जीमनै बाई ! दो रोटी मोठ बाजरी री –एक मोटो बांदो घी छाछ लाय दी । पूणी एक रोटी मैं कुता नै नाँखदी बाकी हू जीम'र बठै ही सोयगी । गैळ आयगी । च्यार पाच बजी हू जागी । भाग री बात सिझ्या सातेक बजी बो ही ऊळ आळो आयो,

"पग लागू बावा ! लोटियो दिया देवो" —"लोटियो एक नही दस लेवो सा—पण बामण री एक अरज है ऊतरो ता सुणाऊ, बाबो बोल्यो ।

ठाकर नीचै आयो । मैं पग पकड लिया, बो चमक्यो "पराछीत चाढ़

है नी ! म्हारै पगा रै हाथ लगाव ?" कह'र वी आगै सिरक्यो— 'कुए है तू छेक्ड वात कांई है, है जिकी बताव नीं ?'

"रात ऊठ पर थे ही मनैं गांव पूगाई ही नी ?"

"जिको ?"

म बानै सगळी बात सुरू सू अन्त ताई सुणाई। बोली अब म्हारा मा-बाप थे ही हो, मारो भाव तारो—थारै सरणैं हू —बाकी ई नैडी-नडी भू मे हू एक मिन्ट ही को रैणो चाऊनी।"

"तू कै तो थारो फैसलो अठै ही करवा देऊ ?"

'नहीं हू तु वै सिरै सू भळै दुख मोल लेणो को चाऊ नी। विधग्या सो मोती है छेकडलो फैसलो हुग्यो म्हारो तो अबै।

'तो तू अबै चावै कांई है ?"

"आ ही, क मनै कोई इसो ठाइयो पकडाओ-दूर-परिया जठ हू म्हारी ऊमर रा दिन ओछा करदू ।'

"तो तू भळै घरबासो करणो चावै ?"

"अबार री घडी तो सवा सोळै आना ही नहीं—आगै री भगवान जाणै।"

"थारी जवान अवस्था है इया सौरै सास किया पाकसी बता। जें कठ ही ताती पून लागगी तो फेर ?"

'है बापू ! हू ओ जर रो लाडू आज खाऊ न काल ! आग खायो है बींरो नसो ही उमर भर का ऊतरनी। तु वै सिरै सू भळै क्यू ? म्हारो उद्धार थे ही करो। मनै पाछी मळमूत म मत नाखो —हू कीनै ही को जाणनी—गऊ समझ र मन भळै ठाण सर बांधो तो थारी मरजी—नहीं तो चूकी ढकी।

"तो फेर ठीक है—जोगमाया री किरपा हुसी तो थारा दिन सोरा ही टूटसी—आज ही चालणो है।"

✕

मे म्हार । बावै गाडो दाब्यो–हू अगलै आसण बठगी –चढता चढता सिर पळूस्यो बावै म्हारो–आम्या हो जिर्ये सू घणी सजळ हूगी म्हारी ।

बावा गळगळै कण्ठा सू बाल्या 'अबै आ आप रै सरण है ठाकरसा ।' ठाकर की हूस र बोल्यो अर हू ? जगम्बा रै जचसी या काम आसी। थारो म्हारो ता खाली भरम है––मोथा म्हाराज ।"

ऊठ दुरचा का मन चू चू सुणीज्या– आ हुज मलामत मुदरी गे मरै हो । म ठाकरा न क्या, 'बापू ! म्हारो आप इत्तो उपकार कियो ता इत्तो भळै ही सही क्वो ता इ कुत्तडी न आगै धाडी पर नोंतलू, पाच सात सेर भार हुवैलो ।

थारै आ ही चगी तो ले लै काई बात नी '––अर मैं मुदकी न राजी राजी बठायली म्हार आगै घोडी पर । टक्का सी बठगी वा हा

तीज ही । तीन घडी रात गया अगूणी दिस म चाँद निकळचो, ठीक म्हार जिया ही आपरी जात्रा पर । रात बीरै सागै ही––काळ र ऊठ पर दोनू बैठा हा –एक बारै सागै म्हारी मुर्दकी जियाँ ही कोइ खरगोस सो जिनावर हो चाँद गी गादी म । बापू जिया मनै पूगावण जावै हा वियाँ ही रात नैं पूगावण चाँद दुरचा हा ।

म्हारो ऊठ ढाण वग हा––बिना रास्त खाड मे–धू'तारै री सीध म । रात ठरण लागगी ही । ठण्डी मधरी पून चालै ही । ज्यू ज्यू म्हे आगै बधता हा––बिया बिया ही चाद आभ म ऊपर आव हो । धरती अर आभै रै जात्रयाँ रो ओ सागो किनो आछो हा ।

म्हारै जोवण रो ओ पलो ही मौको हो जद हू इयाँ ऊठ पर चाली हू –उजाड रोही मे ।

कठै ही सूई जमीन––ताल आवता, जिका मे कर, बाठ, अर रोहीडा घणा हुता, कठ ही उजळा निरमळ धोरा चिकाँ री सोनै सी बेकळू । मन इया लागता जाण अ अगल भौ रा काई जोगी हैं जिका ओजू समाधि म

बैठा है। सुख दुख री धरती सू ऊचा उठयोड़ा ब्रह्मानन्द' मे लीरा सा, न्त्ति सांतरा। वारी कचन सी काया पर कोई किलोळ करै कोई खूदै, चान परवा नही —सरीर री ममता मिटयोडा वै धारा जागी ही तो हा ग्रगल भौ रा।

हू छेकड किंतीक ताळ चोली रैसू ? म्हारै मन मे रह-रह गूगी रा सा गोट उठै हा कै कुरण जाणै ओ मनै कठ ले जासी ? म्हारो सबै ओजू मन फोडा घाल हो। मै चाद कानी दख्यो—ऊजळोवघ। मन मे कैयो "म्हारा जात्री तू इसो निरमळ निकळक! अर हू ओजू सबै रै काळमिस सू भरी-एक वेळा अर एक सी जात्रा पर जावरण आळै जात्रा रै मन मे ईनो फरक की किरपा तो म्हारै पर ही कर र—मन रो राजा है तू।"

जद मन सू मै ईनै बाप ही बणा लिया अर ई रै हाथा ही सूप दी अपणै आपनै तो भळै वयारा सबै अर वयारी लाज —लिखी है ज्यू बरती जसी, —चिन्ता पेर वयारी ?

बापू! किताक कोस आयग्या आपा ? हू बोली। "अै ही कोई कोसडा दस बारै एक।"

"आपा कठै चाला हा।'

'जठै अन्नळ पाणी लेजासी।'

हू को बोलीनी। दो एक बजी पछ नीन्द रा भ्राटा क्दे-कदे आवता। म्हारो माथो कुत्तडी रै माथै सू भिडता का म्हारी आख खुलती, बापू बोल्या, 'नीन्द आव दीस है सुगनी ?'

बा मनै सुगनी क्यिा केयो बै ही जाणै।

'नही बापू' मै कैयो।

तू इत्ती क्देई चाल्योडी को दीसै है नी —एक घोरै पर ऊठ जैकायो। पाणी रो लोटडो ही —पाणी पियो। दस पाच मिन्ट सुस्ताया। ऊठ नै मैं

देख्यो वडो समभदार लाग्यो । ठण्डी रेत पर ग्रापरी सगळी नस टैक दीनी छोडदी । घण्टा सू हालती नस रो थाकेलो एक सागै ही मिटा नियो। जागू ग्रागौतर मे कोइ भ्रस्ट जोगी हो जिको मियळीकरण री किरिया ग्रोजू को भूल्योनी ।

'सुगनी टुरा का ठैरा ?

'टुरा भला ही बापू ।"

'ता ल ग्राव चढ पाछा ही ऊठ नै ढाण घाल दियो । हू बोली म्हारा एक शका है निवारण करो तो ?

'बोल सुगनी ,"

"ग्राप इयां किया फिरता फिरो --बेघर गुवाडी ग्राळा सा ?'

फिरणो कुण चावै सुगनी-फिरणो पडे ।'

"बापू ! इसी काई ग्रोडी पडगी ग्राप म । मनै थे खासा रवाव ग्राळा---पाच जणा पूछ जिसा मिनख दीसो । बी दिन रोही म वठ मिल्या -ग्राज मनै लिया ग्रठीन टुरग्या, छेकड घर काई ग्रडीकतो ता हुवैला ही- की पाच पईसा ग्रमल तमाखू रा ही चाईजता हुवैला-म्हारी करण ग्राळा थे मनै को लाग्यानी । थ कोई रोही रा भोमियां हो का मिनख म्हारै ता समभ म की ग्राईनी ।

वापू एकर गुमसुम हुग्या मिटेक की को बोल्यानीं इसीं काई बात है बापू ?"

'काई करसी पूछ र सुगनी--न पूछती तो ग्राछो हो पण खैर हू त दुखियारी न ग्रौर दुखी करणी का चाऊनी ।"

"दस म्हारै लुगाई है---दो बेटा है माटयार जवान । घरै गाय भैंस सौ है-रामजी राजी है-राजपून े खोळियो है म्हारो ।

"फेर थमी थर्यारी है थापू ?'

"कमी करमां री है सुगनी। म्हारै घर रै साव चिपाचिप एक बामणी री गुवाडी है। बूढी विधवा मां—एक छोरी—अर एक बीरो धणी। धणी मरी'र रो अभ्यागत सो ही हो—थाक्ल अर अधड ऊमर रो। डोक रडी पईसा ले र परणायो ई नै। अर जवाई ही हुग्यो अबै। गाव मु गूणियो एक आटै रो भर लावतो पला म्ह दो च्यार जणा बी डोकरी न धणी समभाई कै तू पाव पचास रुपिया भेळा करलै—म्हे थारी मदद करस्यां—बाकी इ टटर जु आ र खायोड नै, आ फूल सी छोरी मत परणा, पण बा कीरी मानै ?

छोरी खानी फूठरी ही क्रो ही नी—भली, सूधी अर स्याणी। की सू ही चौतिजर हुर बात करते मैं सुणी न देखी। आंख्यां मे उजास हो अर चैर पर चिलकतो पाणी—डील री घडत जडी ओपती अर फवती—जाणू बेमाता की चिता राख'र घडी हुवै ई नै इसो ओ सर्प री टाबर ई कुरदसणी र घरै किया आयग्यो—भगवान जाणै। लोग बात करता 'देखो, घोळी ज्वान टोघडी नै किस पावलै डगरै माग बाधी है—राण्ड नै कोई समभा वणियो को हो नी अर बौ अभ्यागत भाग रा इसो कै धोती ही पूरी को सर्म ही नी। वोली—वाई कवता राण्ड आवै। च ली तावलै री सी। थाक्ल थोडी थोडी खण री धामी। चिलम रा पछ्छ अमल रो सौकीन—रोग किसा थोडा ? गांव रै ठाकर री कोटडी मे पड्यो रैवतो—दिन भर चिलमा भरतो—बठ ही अमल री तुस मिल जावती। आ बीरी कमाई ही अर आ वारी खुराक—इस ई खुठयोड खू ट सागै बा फूला री डाळी बाध राखी ही—बाकी जोर काई गाव रो ठाकर इ म मिल्योडो हा—डाक रडी नै पाच पईसा चटा रारया हा। बी न और खासो लारास्रो दे राख्यो हा। डोकरडी अडाण सट्टै ब्याज न्यारो कमावती, दो दो तीन नीन रुपिया सईकडो।

वरस डाढ ना एक न भरतार तो पूरो हुयो । केइ दिन पछ ठाकर एक दो वार बी छोरी नैं रावळं बुलाइ—म्हे सुणी वण बीन मू ढा ही वा कियोनी

एक दिन रात री बात । वजी हुसी वारैं सवा वार । रात, साव ग्र वारी गाव म सोपो पडग्यो हो । ऊनाळैं री ठण्डी राता री नींद इमरत सू ग्राछी—मिसरी सू जादा मीठी । नीद री गोदी म—ग्राखो गाव बाळक सो सूता पडचा हो । न खडको, न भडको-बडो सान्ति । वीं टम ठाकर दार पी राखा ही । कन दा बातला न्यारो हो—सागै दो दरोगा ग्रौर हा ।

रात नैं वठै ग्राया वी डोकरी रै ग्रठैं । छोरी री माँ पला सू ही राजी हो । ठाकर बीन पाच पचास रुपिया ग्रौर दिया । गाव रै वनैं एक ल ठो खडो पैला सू देरारया हो । करमा री कीट इ मावडली रण्डार छोरी न पैला ला घणी ही समझाई, देख, गावरा ठाकर ग्र पा रैं कब्ज म रसी—ग्रापा रा दिन स्सारा टूटसी । जे दो च्यार खेतडा ग्रौर हाथ लागग्या तो भला ही दूधरा कुरळा कर तू —राजम करसी बैठी —मैं तो घणखरो खाय उगा-ळघा । जे खेतडा पगा नीचै हुग्या तो ऊमर री रोटी है बैठी सुख री लरा निए—हाथ ही मत दिराए चाव पण छोरी को मानीनी । डराई धमकाई पण बा टस सू मस ना हुई ती ।

हू कान दे'र सुण ही बापू री बात । नीद नडी ग्रागी हो को रईनी । ऊठ ग्रापरी च ल म बगं हा ।

बापू बोल्या ग्रब बा धिणाण करण री मोची । हू बाखळ म सूतो हा । कन ठाण रैं ऊठ बान्धोडा हा । हुयाई करतो-करतो ग्रायो ही हा । ग्राँख लागू ही । ग्रचाणचका ही मैं सुण्यो बापू ! मनैं मारै—हू गऊ हू —म्हारी रिछपाळ करो थारैं सरणैं हू'—घूघा र वा म्हारैं पगाण ग्रन बठगी । म्हारी नीद ग्रावती ग्रचाणचकी ग्रोछटगी । हू चमक'र उठ्यो ।

म्हारे घर सू, उठ'र बार आई। छोरी, बींरा पग काठा झाललिया--मां मन बचा-तू म्हारी मा है' ।

हू बोल्यो, छेड बात काई है -रता मनै ? हू तनै ताती पून ही को लागण दू नी गू गी ! इयां बोफी तरै मत कर।'

"ठाकरसा'ब घर वारै मागै दो दरोगा--मनै लूटणी चावै। आ म्हारी मा-धा को है नी--आगोतर री वैरण हैं मनै गोली कर'र ईनै खेत मावै- मरण चाली है तो ही" ।

मैं कैयो, "जा अवार ता जा, दिनूगै सावळ समभा देसा"। म्हारै घर सू बोली थे काई बात करो हा, बै तो घर मे खडा है अर थे कैवो जा दिनूगै समभा देस्या। जबरो बात है।"

छोरी बाली 'वापू मनै भला ही वाढ नाखो हू ता बीं घर मे पग ही को टेवू नी--म्हारा तो थे ही माँ-बाप हो--मारो तो मारो-तारो तो तारो, गऊ नै कसाई वन सू छाडावो ता मरजी थारी--चडाग्रा तो मोज थारी।'

हू वोल्यो, 'अवार तो एकर म्हार घर म जा तू ईंर साथ।' म्हारै घर सू बोली, 'आव बाई, म्हार साथै आवरी अर आ घर म गई। हू पाछो ही सोयग्यो। दस मिंट ही को हुया हुमीनो--म्हार कानां म भळै अवाज आई पण पैलक सू सफा उलटी, अणआपती--अचेरी अर अणखावणी -सुण्या ही तीसर न विष उपजै। 1

'आय म्हारी छोरी न घर म घालनो, काई ववण सुणन आळो ही को दिसनी रै' गरीव रो बसेपो किया हुव अब ? काई सा सुणो र, बेटी ग गापा --आख्यां देखता लाज लूटीज' ठाकर सा'ब तो पैर्जां सू ही घर म हा--पण रण्डार बोली, 'हू दाड र ठाकर सा'ब नै बुला'र बाई हू। ठाकरसा म्हारी लाज राखो--अबै हू किसै कुअ मे पडू अण ठाकर सा मनै जीवती न हा मारदी --आय रे! म्हाग धाळा माण्डीजग्या।'

ठाकर गाव मार पिमोहो राळा मरण लाग्यो—मूढ़ूँ सू करड़ी कोमा अर पुगार साळे नै हू मारै बिना को छोड़ू नी—म्हार नाम सू ग्राळरीजू हू । या ता अवार रो अवार ईं बामण री छोरी नै वार काढ—नहीं तो थारो च रमा सोचलै—सुख रो वायरा लणो चावैं ता—काढ द अवार री अवार वीनै ।

मायो लगावण रो म्हारो कोई विचार को होनी । बाकी जद आ सुणी कै— 'श्राय रे ! ओ म्हारी छोरी री लाज लूटै ।" जिकी छागी अवार मन 'बापू कैयो—अर म्हारै घर सू बीनै बेटी कर'र मांय लेवगो, हू थारा लाज लूटू —श्रो गांव हेला म्हारैं मू क्रिया सुणीजै—म्हार रू ह म बासत जगण लागग्यो—सोच्यो काँई करा ?'

इत्त म ही ववर साव रा सिसायोड़ो दरोगो बाड़ पर सू बोल्यो "साळा तू वामण ो वेटी सू ही का टळै ना—मिनख है जद तो इन अब ही निकाळ द अर नही जद इसी हुवली कै कुत्ता ही सीर को खावैला नी ।'

अर म्हारै वस री वात को ही नी । उठती लाय म घटना घी भळ पड़ग्यो—छोड़चोड़ काळीन्दर न जियाँ घूळिया दिया हुवा ही गत म्हारा ही । इयाँ घड़ घाटै नफ म म्हारी छाती पर कोई पग दे'र निमरै ता ही म्हारैं खटाव हा- म्हारी पिरखती ही इसी ही बाकी इसो बूडो कळब, बो ही श्राख्या श्राग सेवग खातर ओगमाया म्हारी काया को बणाई ही नी । जीवण न इसो हाणो गत र मन जीण रो सफा ही कोड का हा नी अर न मनैं कोड हा कोगी ही गरीबी अमीरी म दवयँ-डूम्य जीवण न खाल र चोड करण रो ।

हू उठ्या —म्हारा चदरमाँ मैं सावळ साथ लिया । साळ मे गयो खूंटी पर दुनाळी त्यार ही । देख्यो अधारा हैं—हाथ पर भरोसो तो हो पण सोच्या खड़कै सू —सुख री नीद सूतो सगळो गाव जागसी । कन हीं

दुधारी खटकै ही म्हारै पड-दादोसा रै हाथ री। सोच्यो आ ठीक है। वा आपरी उमर मे कई बार ई न धपाई ही—खूब जी भर ई रै सागै खेल्या हा—वारी करतूता री कथा—वारै पौरस रा सोरठा मे कयां रै मूढै सुण्या हा—वारै पछै म्हारै दादोसा ई नै मौकै बमोकै—धपा'र तो नही पण, पेट भराई सी कराई। पण मोको आयो हुवै अर वा टाळ करदी हुवै, आ मे को सुणीनी। म्हारा बापू सा सत आदमी हा—वा ई न टैम बेटैम, भवानी री सरूप समझ कूकू री छांटा ही घाल्यो पण चागान में कदेई हाथ म को लीनी।

हू बारा बेटा—म्हारै 'बापूसा रै रस्तै पर चालण सू ही राजी हा, कारण टम बदळगी ही पण ता ही कुत्तां री जूणी जीणो को चावतो हो नी। बडेरा री सी बाता ता को ही मी टळै जितै टाळन सू ही राजी हो, पण सिर पर आया पछै पग पाछो देवणो मनै ही कम आव हो। आज म्हारै म म्हारो दादोसा जागग्या समझो—हू जाणू वै मनै कैव हा कै इसै जीणै सू ता मरणो, लाख गुणा आछ्या। बिष्ठा री दुरगन्ध मे जिया धोळी लट्टा जूण पूरी करे, मानखा जूणी मे आ धरती पर बियां रणो नागी नहीं ता और काई है जिक म भळ रजपूत रो खोळियो। बीरो खाढिया मा-बाप रै पवित्र रज सू रच्योडो (रज+पूत) है का नही ई रा ठा ता इस माक पर ही लाग सुगनी ! मैं कैया नै भवानी ! दादै पडदाद री आबरू, त मिखरा सू ऊची राखी —म्हारै पिता तनै शक्ति समझ आराधना करी पण थारै भोग को लगायोनी माता ! तू मन आ र वरद ! म्हारी लाज राख देवी —आज त मन वळा ही इसी बख्शी है कै मन थारी शरण आणा पडयो। हू सोचू, तू म्हारी परीक्षा लवणी चावती हुसी। हाथ नै कराए मत माता ! जुगां सू भूखी तिसी पडी भवानी लै अबार धाप र जीम-भोग लगा अर राजी हुय मा ! तू देखे है हू साव वेकसूर हू—वेबसी म दोष मत देई देवी"

फडकरण लागग्यो । रीस मे रातो--आख जग ही। बाड रै ऊपर कर ही बूदचा । कवर सा ब नीवार र ढोलियै पर अर कनै ही एक माचलिय पर दा दरोगटा--हाळे होठे गुरबत कर कोई जाळ गूथै हा – डाकरडी ही कनै घरत बठी मर ही। क्वर सा ब अर एक दरोगै रा माथा—एक एक हाथ म इया छड जा पडचा जिया मुक्की री ठोक्या खोपरे री चिटक्या। जावता जावता एक टाचो करमा री पीट बी रण्डार रै ही दे नाख्यो—त तू ही सोरी रै।

एकर विचार आया लुगाई है पण साच्या इसी नीच रण्डार नैं मिनखा जूण सू छुडाण म ही फायदो है। बटी री काया सू किसब कमाव –आ मा है ? भगवान री करणावट ह गीता मे– आततताई नैं बाढचा बडा पुन है ' राण्ड गाव म भळ दुरगन्ध बिखेरसी। एक गोलणियो अन्धेर म दौडग्या –राणो होनी –चनाक मर हो। पछ मन ठा लाग्यो—डरतो बो दस बीस दिन बाद गाव ही छोडग्यो।

कनै दा तीन पाडोस्या न मुरबुगट सुणीज्यो पण दापडीज्योडा पडचा हा। देख र दड खीचग्या। काळ कनै कुण आव हो ? दूसरा आनै मारणै सू मनैग्यान राजी हा। बाकी सगळो गाँव निघडक सूतो हो।

हू घर म आयो। ठकराणी ै क्यो ले भई –चौळको तो कर नाख्यो है अब थार म्हार पछला राम राम है। जीवतो रया तो मिळू लो। आज एक इस रोड नै एढै लगा दियो है जिकै सू आखो गाव आखडनो हो –अब गाव भला ही क्यों ही बूदचा –कई बरस ई गाव मे तो जे इसा रावडिया आस म घाल्या ही रडक जाव तो मनै कई भला ही तू। गाव री बहू गिणी न सुआसणी जीनै मता कियो बीन ही मूढो कर लियो रिावडै डागर रो सो। गाव धणी सू कुण बर बांध—कुअ म पडो समझ ग्याव लो। अन्दर रै बिला म ही सार रा रिल नाख्या कर है आ ई ठा

मैं तलवार खची। पळपळाट करती ही। मूठ पकड़ता ही म्हारो बूढियो

को ही नी—अबै यता सरणै आयोडी बामण री बेटी —जिकै मे पग पकड लिया—हू ई नै कठै काढू ? चोखो जोगमाया नै आही मजूर ही हुगी —अबै सोच फिकर क्यांरो ?

छोरी कनै गडी एका ही पूछै— बापू ! अबै काई हुसी ? हू दुरभागण थारै नही आवती तो क्यानै ? मैं थारो हसतो मुळकतो घर बरबाद करदियो । हे भगवान !"

हू बाल्यो, बावळी तू क्या पूछै ? तू, हू तो निमित्त हा । नक्सो नो सावरियै पैला ही कोर राख्यो हो, जिया जियां माडणा माड राख्या हा— वियां वियां भेटा भुगतीजणा ही हैं । जिकै म हू, ठाकर हू, भगवान मनै इसै- इसै मुर्दा नै ठा घालणा नै ही भेज्यो हो । ठा घाल दियो । नही घालतो तो दोष रो भागी हुतो अर भगवान म्हार पर हुता नाराज । तू री मत गूगी —म्हारै तू धरम री बेटी है । थारी लाज बचावण रो ठेको मैं ही ले राख्यो है —आ हू सोचू तो म्हारी गळती है । आ तरवार जुगा सू खूटी पर पडी ही, बिना बिरै हुक्म चालती नो आज ताई क्या चाली नी ?"

ठकराणी बोली, 'अबै' ?

"अबै हुई जिको नो तन ठा है । ऊपर भर जेठ र तड़ा मे मिड जूण पूरी करु आ म्हारै की कम ही जचै है ।"

अबै तो कदेई ऊठ रै आमणै पर अर कदेई कोई रेत रै ऊचै ऊचळै धोरै पर ही रात कटसी—कदेई की फोग बाठ सारै, कदेई खेत खळै, का की गर गम्भीर खेजडी री छाया मे । जेठ मू तो जद कद ही आ जूण म्हारै जादा जची । मन ई मे मौज लागी, कीरी रावगी न दवगी—बणसी तो दो घडी जगदम्बा रो भजन कर सू - बीमे और ही मौज है । आ बामण री बेटी थारी हु चुरी । थार घर माय मम दुम्रो —बिलोवणो करो —जीमो

जूठो अर दो घडी परमात्मा नैं याद करो जिकैं सू बुद्धि निरमळ हुव। दो रोटी तनैं मिलसी तो एक बाटियो इन ही मिलणो चाईज थारैं जायोडा अर ई म दुभात बिल्कुल नही हुवै —ओ ही कैणा है म्हारो तो। मनैं जिता दिन जीवतो सुणै थारो 'सुहाग' अखो — पहेंस तू थारी खच अर ओढै। बोल अबै तन कैंणो है सो कह।"

"आन मारचा जिकै री मनै रत्ती ही न धोखो अर न कोई दुख दा ही। अर थे कयो जिकै न ही का विसराऊ नी। माना तो म्हारी अरज आ है क दाए च्यारैं महीनै थे रात विरात खेत खळै मिल लेया, ह पाच पचास हुयै सारु-लगी भुगतर ही थान देमू जरुर—वासना री मनै भूख को है नी—ई पाव सू पैला ही मनैं हेत का हो नी और न अब भळ कदेई। ओ सुख तो कुता मिना वणस्या तो ही मिल जासी।

बाकी म्हारैं सुहाग री सौगन है जे कोई गरीब गुरबैं नै टघा तो— न चोरी कर रा क्ठ हो। जारी तो म्हारो जी कदै थे सपनै मे ही नही करी—पण कुण जाणै मिनख रो मन है किसी बेळा बो आपैं सू बार हु अकल काढै —जोत थारी रिछ्या करसी–मोटी वात आ है कै री हाय मत लेया। जिक दिन ही मैं सुणली कै ब चार जार है तो बी दिन ही बी वेळा ही सरीर छोड देसू —दिय री लो साम्ही हाय नर र बोली। भळै य अठी नै आया चा नै नहो। राजपूत रै वेद न इ जीवण रो मौणा को है नी – थे दाय तो ही सस्या भला हो। इ बामण री बेटी खातर थ कैयो जिका ठीक है रोटी पैलां इ नै अर पछ मन म्हारैं परवार नै'।

ह बोल्यो, 'लै धिरियाणी आ, भवानी म्हारैं हाथ है ई री सागन मा'र त नै कैऊ—जे इयाव अर उजाड चानू तो अठै ई सरीर म कोढ फूट अर रू रू म सास बच जद ताई—कीडा मकोडा खावै अर आगै कुम्भी पाक मे पडू। बाकी मनै पूरा वळ जणै ही मिलसी क कैं तू करसी। तू

मैंक्तो काया

रोज जगदम्बा री जोत करै अर म्हारै खातर आ ही मागै कै "हे माता ! बारै काळजै मे थारी निरमळ जोत जगै । थारै मन मे कदेई वासना रा पुद्गळ उपज्या अर म्हारे मन सू टकराया तो समझलै हू भरम मे पड जाऊला—लै तो राम राम ।"

बा म्हारे पगा पडी । धाक खाई । बीरा ताता ऊकळता आसू—वाय रता रा नही वीरता रा वासना रा नही–नेह रा म्हारै पगा पर पडचा । म्हारै रू-रू मे एक करण्ट सो दोडग्यो बा बामण री बेटी पगा पडी बोली 'म्हारी ही एक अरज है सुणो तो–बापू !'

तू क्यो मन म राख —है जिसी तू ही कह दै ।'

"बापू ! मैं जिसी भळै कोई दुखियारण दुरभागण कठ ही मिले तो कद काटघा बीरो—थारी रक्षा रामजी करसी । बाप ! था ने ताती पून ही मत लाग्या कदेई ।"

दिये र चानणे मे देख्या बै दोनू सजळ अर गळगळी ही ।

एकर म्हार दादो सा री फोटु कानी गया । दो मिट तांई सामनै देखतो रयो । दिये रै निरमळ निमध परकास मे दादोसा रा चैरो चिलक हो नूर बरसै हो चैरै पर । चितराम करोणीयो ही कोई काई जोर रो हो । हू सोचू बाँरी आतमा अबार थोडी ताळ खातर सग सू उपर बी म आयगी हुवै । सिलडै कवळ सो कोरथोडी आम्या म्हारे सामी देरौ ही लाणू हालती लौ मे बारा थोडा थोडा हालता होठ म ने कनै, गू गा ! चौगान में खलणियो, जीवण रो मोह किया कर है कदेई ? कठै ही घूम आ धरती थारी—ई धरती पर घूमण आळा मानवी थारा । अपणायत कीरी मोल लियोडी थोडी ही है । हेत करण री मनस्या ही हुवै तो—मिनख कांई जिनावर ही लारै फिरै अर फिर भळै देवता !

म्हारे जी मे आ जची कै म्हारो दादोसा खुस हे म्हारै पर । मैं धोक

राई —दुरभा जणाँ हू राजी हो ।

वासळ मे ऊठ बांध्योडो हो । घासियो दिया । भ्रा तरवार । एक दुनाळी घरँ हा बिना कारतूस —एक दनी पिस्तूल भर पचास साठ रीप्या मन ठकराणी भलाया । वी वेळा म्हारी भ्रांख्यां कस्णा सू भरीजगी भर दिस्टी वीरी पवित्र दह म रमगी । जी म मन कठ ही काळमिस रो एक कण ही को दीस्या नी । रू-रू गद गद हुयो । हू एक मिट चितराम म कोरयोडो सो ग्डो रैयो ।

'काई बात है—मोह हुग्यो काई ? हाठ सँ बा बाली ।

क्या रा ?'

'माटी रै हू ढाँ रो का भ्राँ हिलवन्न हाडाँ रो ?" सुणता ही म्हार रू रू म एक नूई लर दौडगी —काळजो सैचनण हुग्या । हू बोल्यो थारो असली रूप जिसा मैं म्हारै काळज म भ्राज देख्यो है बा पलाँ कदेई नहीं । हू समभनो हो—हू छेकड भ्रादमी हू लुगाई किती ही करो भला ही मो री साव ठ थोडी टा ताड मरै है—म्हारो साचणो गळत गयो—तू मैं सू लाख ऊची—थारा भ्र वाल मन कठ ही डिगण का द नी हू बस इत न ही भ्रडिकै हो—लै ठीक है तो ? कहर ऊठ र एड लगाई भ्रर बी भ्राधी रात म भ्रधकार मे म्हारै बाल्है गाव न सूता छ‍ाड बीरी भ्रास्यां सू भ्रजाण दिस मे भ्रळगा हुग्या ।

भ्राज दस बरस हुग्या इयाँ ही फिरू —पत्थरा रोही म रात गुजारू —कणा कदई काई ढाणी मे ।

ह बोली, "कद कद गाव जावता हुस्यो ?'

ज्यादातर चौमास री रुत मे —खेत म पाँच पाच सात सात दिन रह लिया करु हू ।"

"वी बामण री बेटी रो हाल चाल बापू ?"

"घरै बैठी है—घर रै और टाबरा जिया ही बा है।

"घरै कदेई गया हुम्यो ?"

'अबार मईनै पैला दो दिन रयो।'

'गाव आळा कदेई मिलण जुलण आँवता हुसी ?'

' गाव सू ता म्हारै बैर विरोध हो ही कद–वै तो उल्टा राजी है—नै हमेस गाव मे रैऊ ता ? केई बूढिया तो कैवै ' गाव नै ता याद कर दियो तै–लुच्चै-लफगा री तो रांत ही रटगी–पुचकारया री बाथा पड़ता—अबै वतळायां ही या बोलैनी। लागा नैं ओ बैम और है क जे इ न ठा पड-ग्यो की लुच्चै, लोफर री तो ओ रात विरात भठै ढोक्ळी देवत' ताळ को लगावैनी। गाव रा भला अर दीपता आदमी म्हारै बळ काई, देख्यां जियै। केई केई तो लटूम जावै —छारै छीपरै रै व्याव म एकर मोडा-बगा एक टैम कुरळो करो जणा हुवै।' कठै ही पधारण पधूरण जोगा तो म्हे को रैयानी पण बारै प्रेम री कदर तो करणी ही पडै। सुगनी ! बारो नेह घणो ही है बाकी राजा अर रैयत रा कायदा यारा यारा है। हू अर गाँव ई बात न जाणां हा कै मैं कोई बुरो काम को कियोनी पण राज कद मान ? एक भल राजा नैं जिका काम करणो चाईजै—बौ ही मैं करयो है। समझै जद ता बीरी मदद करी है पण राजा मन आ अधिकार की सू प्योनी —मैं आप ही वरत लियो —राजा री आख्या मे आ म्हारी गळती है—म्हारी दिस्टी म हू ठीक हू –बाकी म्हारै अबै गाव री घणी ममता ही को है नी, देवलियो सगळै आपणो ही गाव है बण तो कीरा ही 'उपकार' कर देणो नही तो मौज जगदम्वारी।"

'राज आळा सू कदेई भेटो हुयो हुसी ?"

कोई एकाध बार--सुरु सुरु मे, मौत नडो बगो सो, जाण र कुण

गावै ,सुगनी ।"

'भाई म्हारा घर रो ही काम घणो करता हुसी ?'

एक छोरो अंग्रेजी फौज मे नौकर है—एक घरै ही काम कर है—बेटी जिकी परणी पाती है—सोरी सुखी है ।"

'बापू ! वी बामण री बेटी जिया–म्हारी लाज अबै थे ही राखस्यो ?

"जोगमाया जाणै सुगनी —वी नही कह सकू ।"

ऊपर ग्राभै मे तारा छीदा माडा दीसै हा जाणू सूरज र डर सू लुकण री चेस्टा म हुवै । पून बटी मधरी मधरी अर ठण्डी चालै ही जाणू नु वो जीवण बाटती फिरै ही । घरै ई बळा कुग्रै पाणी न जांवती –गाय रा पोठा उठावती—कदेई बिलोवणो घमकावती—आज ई रिध रोही म-सावरै री मरजी ! पत्ता री ओट मे, चिडकल्या चचाट करती सुणीजण लागी जाणू जीवणदाता सूरज री आरती वै, मिनखा सू अध घडी पैला ही करती हुवै, का जाणू दिन रात बोला रवणियां रूखा नै, वा पांच मिट खातर आपरी जीभ दे दी हुवै अर वै रूख बोतारा बणग्या हुवै ।

ऊठ री चाल वा सागण को ही नी । अबै दो मि ट ओ ही क्ठ ही पग पाघरा करणा चावतो हुवला । मैं सोच्या म्हारा बीर ! तू कित्तो दुरभागी हैं जिको रात ई पापण रो भार ले र दुरघो हो, ओजू बिया ही चालै है –मैं कुमाणस रै कारण ही तनै खोटा भुगतणा पडै, साच है कुमाणस आयो भलो न जायो अर घटतो हो जिको मुदकी रो पाप न्यारो, बाळन जागी घाट रै पगोथियै पर मीडकी सी बैठी मर । जच'र जुगन सू किसीक बैठीहै –टक्की सी, जाणू आसरा इ खातर ही है ।

सामन पाच्यारेक घरा री ढाणी दीसी । "बापू ! अबै तो ऊठ बापडो थक्ग्यो हुसी ?"

"थरम्यो तो बस सुगनी, अबै आपांनै ही आगै को चालणो है नी। आज दिन दिन अठै ही बिसराम कराला। सिझ्या भळै इया ही टुरस्यां, काल दिनूगै देखां कद ताई थान मुकाम पूगीजै?"

एक घर मे फळसो छेडै कियो। हेलो मारयो। एक बूढो चौधरी बार आयो, जैमाताजी गे करी। बोल्यो आगीन पधारो। ऊठ जना दियो नीरा नाख दियो। गुड फिटकडी ही दी हुसी। ऊठ राजडै नीचै बैठग्यो। बापू बारै तिबारी मे आपरो समान मेल दियो। हू घर मे लुगाया कनै गई परी। बापू निवट्या, न्हाया। एक तवै पर छाणा रा सजळ खीरा मगाया, हू भला'र आई। की आन डोढान भर घी मगायो। बारण आगै एक माचो खडो कर लियो। पदम पलाखी मार माय बैठग्या जिया कोई जोगसर बैठो हुवै। ओ चौडो ठाठो लाम्बी गोळ नस, काना पर ऊभा केस अर बौर बराबर आटा दियोडी दाढी लागता हा जाणै पुन रै जोर सू कोई बाघ, मिनखा जूणी मे आयग्यो हुवै। उठतै काधा सू निकळयोडा निगळथा, लाडू सी गाठा बधता बूकिया, अकूण्या सू मुरचा ताई चूडी उतार वीणी। देख्या जच ही क इयाव अर ओडी मे अै बूकिया कापसी भळै मां रा जाया। इस दीपतै डील मे इसो दीपतो चरित्र किरोडा म की सै न ही मिलै।

घी री जोत करी। लौ एकै साग ऊची उठी। हू बारै सू पून आवण आळी एक जाळी मांखर देखै ही, मन सुणीज्या, 'हे जगदम्बा! तू म्हारै काळजै मे निरमळ रुप सू जागी रह, मा! थारी जोत म म्हारा पाप, मन रा सै सूगला सँकळप विकळप बळता रैव। मां, अबै ताई जे तैं साचो राख्यो तो अबै ही, तू ही राखसी। थारी आ विराट जोत निमधी अर तेज सगलां मे जगै, अर पाछी त म ही मिल—कोई न समझै वा बात न्यारी है। म्हारी लौ, जद कद ही बुझै तो मा! निरमळ रुप सू थार विराट मे मिलती मनै दीखै अर हू थारै साग एकाकार हुज्याऊँ।

ग्रावैनी श्ठ ही दुरवासना री दुरगन्ध सू निमधी पड, घरड चग्ड करती यारैं सू बीछडती दीसै ।'

ऊजळा ग्रर ग्रमोल मोती री ग्रांख्या रैं रतनाकर सू बारैं निकळता मनैं दीस्या जिका जोत रै तज सू माता रैं ग्रागैं ढळता हा ।

एर घण्टा ताईं माळा फेरता रैया हुसी । हू एकर सगळै दुख न इया भूलगी जिया धरै ग्राया पछ कोई मुसाफर गाडी रो डब्बो भूलैं । खुसी र ग्रगाध सागर मे डूबगी हूं क सावरिय मनैं एक इसै मिनख रैं हाथा म सूपी है जिकै रैं मन हुनैं थका नीन भौ मे ही ग्रनिप्ट हुवणरा वठै ही वम तहा। म्हारैं मन मे जची क ग्रए ग्र दमी माक्ळ बरसा सु इ ढग री साधना ग्रापरै माएस मैं स जो राखी है । स्थिति बरणावरण खातर लम्बो ग्रम्यास चाईजै रैं ।

'ढाणी मे लोग-बाग ठाकरा सू मिलण ग्राया हुसी नानी '

वस्ती माय दो च्यार ग्रादमी ग्राया ही हा । दिन म ठाकर सोय ग्या । दो-तीन वार ग्रठ पैंला भी ग्रायोडा हा—लोगा री सरधा सरावण जोग ही ।'

ग्रठलै लोगाँ रा जीवण सुखी सोरो लाग्यो । मोटो पैरणो-मोटो खाणो । छळछिद्र नैड कर ही का हो नी । मोटी-मोटी छोरया काछडी पैरया फिरती ही । इया ही कैई छोरा न देख्या ग्रवधूत सा काछडी लगायाँ । वडा निरदोप ग्रर निरोगा । ग्राज जद हू ग्रापणै ग्रठ रै टीगरां न जोऊ— म्हारा कान खुस हाथ म ग्राव । बारैं-तर बरसां रा छोरा छोगे ग्रोगुणा सू इयाँ भरया है जिया फूड रो माथो लीख ग्रर जू ग्रा सूं । काई ठा ऊगता ही ग्रोगुणाँ नैं ले र जलमै कुण जाणैं पछै भेळा कर ।

पाणी रो बठ बडा फोडो हो । दो कोस सू गाडीणा ग्रर चौखड लावता । दिन भर म्हे ग्रठैं ग्राराम करयो । एक बाटकिया भर डावै री

राबडी, माय दही अर कादो पी लिया हा—नीद इसी आई जाणै समाधि लागगी हुवै। थारी आजकालै री नीद री दवायां ई रै आगै झख मारै। दिन बडो सोरो वीत्यो।

"काई लुगाई तनै थारै सुख-दुख री ही की पूछ्यो हुसी नानी ?"

"वान किसी बास पडै ही म्हारै बताए बिना, चला'र हू चरचा चलाऊ, म्हारो चेतो चरण नै गयाडो हो ? हां, तू को होनी वी बेळा हुतो तो तू आंग नै जरूर कुचरतो।"

हाठा पर जीभ फेरतै मैं कैयो, "माफ कर नानी, मैं तो इया ही पूछ लियो, कह तू !"

"तो हू किसी रीस करू हू बेटा, कह'र एकर बण बन्द करदी बात नै।

पांच

"सिञ्या ला पी'र, म्हे पाछा, बै ही घोडा अर बै ही मैदान—मजिल पर टुरग्या। मुत्ती सागै ही, जिया न्यू तो दियोडी कोई बूढी वामणी साग चूगी मे बी री सगळा सू लाडेसर छोटी पोती हुव। ढाणी सू निकळघा का कोचरी बोली—वापू बोल्या, 'सुगनी! दो मिट ठैरा—कोचरडी की भ्रचैरी बोलै—सून चावै दिसै।"

भळै कोचरी बोली। 'लै, ए! जोगमाया भली ही करसी म्हे, उठ नै पडछ घाल दियो। च्यार घडी रात गयां, चाद भ्रगूण भ्राभै री जडा म इया निकळघो जिया निरास भ्रादमी रै मन म हरख रा उजास हुव। इग्यार साढी इग्यारै वजी हुवैला—चांदणो खासो भला हुग्यो हो—ऊठ भ्रापरी चीत मे बगै हो—रिघराही मे न कोई मोटो मारग, न पगडांडी ही काई—खाली तारै री सीध सू। रस्तै मे कदेई कोई सेवण रा का बूर रा बूजा भ्रावता जिका सू ऊठ चालतो चालता ताचक्ता, का वापू कवता चतो राम! भाई-चेता। सावळ चीरा, सावळ, अर ऊठ भ्रापरी एकन चाल सू

मक्तो काया ~

चालै हो । पाछो उथलो भला ही मत देवो, पण काम सू आ बता देवतो, क मालक थारो कैयो इणी ही को टळांघूनी — मिनख अर जिनावर री आत्मीयता देख तू ।

खीप, कैर, कठै ही फोग अर खेजडा–कठै ही रोहीडा आंवता, सिवाय मों रै सगळै सूनवाड ही सूनवाड दीसती । डर लागतो । । एकर काई दूर मैं इसा डीगा डीगा घोरा आया जिकां री निवाण मे कोई मिणियो मोम दै तो भळै बासै ही नहीं । आगै पावडा पचासेक पर दो तीन सरकी खडी दीसी । ढोलकी बाजती सुणीजी । मैं कैयो, 'बापू ओ काईं रासो है अठै ?' । 'कोई कांजरां रो डेरो हुवैला—का कोई बनवावरीडा हुवैला ।" म्हे सरक्या सू पच्चीस तीस पांवडा परिया कर निकळै हा का परियां सू तीन आदमी आया, 'बाबा ! ठैर ठैर !" म्हे ऊठ नै को ठरायोनी । जिको चार म चालै हो बीया ही चाल हो । 'अरै ! सुण कोयनी बाबा' एक आदमी कूद परै ऊठ री मोरी पकडली, 'पैसा गाभो गैणो, सराफो अठै रातदे पछै आगीनै जाए ।' बापू जाणग्या अठै कांई करणो चाईज । समझावण नैं टम कठै ही ? मनै ठा को हो नी बी बेळा ताईं कै पिस्तूल काई हुव । मोरी पकडनियैं नैं लुळ परा बा कयो सुण तो ? दण सू ढो सामो विया तो कुपाळ मे वटीड मेल दियो—गयो, खोसा खावतो—बठै ही ढीगलो हुग्यो । बी बेळा मैं बुत्ती नैं नीचै नांखदी अर मोरी सावळ साभली । लारै आसण पर वठै ही दुनाळी पडी ही लोड करयोडी, बडी फुरती सू बापू साभली, ऊठ इसो समझदार हो क बुचकारता ही हो जिया ही अधर व्हडो हुग्यो-अर बापू भाग्तां मे सू एक र लकपरी दीनी–सूनी रोही एकर सगळी गरणा उठी मन बो पडतो दिस्यो–मरयो का नही मन ठा नही पण हू समझू हूं, ठाव आदमी रा हाथ लाग्या हा—पाच ही खाई हुसो ।

बापू बोल्या, मुन्नी ! ऊंठ री चढार है नी—साथळ रैण भलो । मैं कैयो इसी काई बात है बापू । टोरो भला ही ।' बाकी काळजो म्हारो

दगदग कर हो डरती रो । श्रा किसोरू राखो हुयो जी नै—हे सांवरा !
अबै तू और काँई करू है ? म्हारै कारण ई देवता न अरणचीती लाय
म कूदणो पडै । तू लाज राख, सांवरिया ! दीनानाथ ! थाई कांई देखासी
भऊ तू ? दो आदमी नापडा म्हार कारण हसतं खेलत जीवण सू हाथ
घो बैठा बाळक थोरा कळपना हुसी ।

ऊठ रै एड लगाई —बो श्रावी सो उड़यो अर देखतां देखता श्राख्यां
सू अदीठ हुयो । एकर बीरै कुत्ता री हाउ हाउ सुणीजी बा ही एक नी
मिन्ट । कोम डोढ-कोस श्राया जद ऊठ नै धीमो घाल्यो । ऊठ री नास्या
बाजण लागगी । सास गर्ल म को मावै होनी । हू घोडो नै भाल्यां बठी
ही । म्हारो माथो अणगिण चिन्तावा सू रूघीज्योडो हो । अचाणचको ही
बापू मूं ढो खोल्या, "मैं तनैं कया हो नी सुगनी ! कै,काचरडी को सून चावै,
की न की गोटाळो हुसी दीसै ।"

'सुगन काई चीज है बापू ?'

कुदरत रो बापार अणन्त है सुगनी ! बो दिन रात श्राछो भूण्डो
श्रापरै मतै आपरी चाल सू चाल । बो की री दखल को चावैनी । बीर न
कोई अ.परो न परायो । न कीन ही नफो कराणो चावै न कान ही
नुकसाण—चाले ज्यू चाले श्रापरै मतै । पण बो बापार सगळै जीवा न
एकसा फळापै श्रा किया हुव सुगनी ! कुदरत रा जीव जिका बी र घणा
नडा है—बीरी सैन म घणा समझै जिका बी सू घणा अळगा है व साव
थोडा । नड सू मुतळब जिका कुदरत र बोपार रो विरोध कर इन्द्रयां री
सज गति म बाधा नही नाखे—दूधड चिन्तावा अर धाई घू ती सू काळज न
भरै नही —उरळो अर उदार राखै । सगळै जीवा री इन्दरी समझण म
एकसी समय हुव श्रा बात को है नी । कोचरी न रात र घण अ वशार
म सावळ अर सारो दीखै —श्रापा नै नही —गीव, कव, सौ कोस ताई
दखन —कुत्ता, सू घना मू घ ग घरडू कोस सागी जार्या जाय । इया ही

श्रोर घणा ही जीव-पण आदमी मे आ बात कठ । ता ही आदमी भगवान री सगळा सू आछी, श्रोपती अर अकलबन्द जूण है । बीरो हेत प्यार बीरो मगळ सै चावै । कुदरत री गोद मे किलोल करणआळा श्रै जीव—आपाँ साग हुवणआळी घटना न आगू च ही भाँपलै—अर जद आपाँ आरै कनकर निकळा तो आपाँ नै श्रै बाघउडासा—उछळकूद कर'र।रा बोल-चाल सू सैन कर की समझाव, श्रै ही सुगन है, सुगनी ! आदमी श्रौंन आपरै अनुभव सू या लार जिका सुगनी, आपरो अनुभव छोडग्या वारै स्सारै पिछाण लै । आदमी नै सुगन समझल्य, सुभ असुभ री अगाऊ सूचना है—बो सावचेत हु, सभळ र चालै ।

ठीक है बापू ! पण एक बात पूछू, थे बारै—सीधी ही, गोळी मारदी ? थाँरो थोडो ही हाथ को धूज्योनी ?

"सुगनी ! जे हू हुता एकलो तो न तो श्रै म्हारै कनै हा आवता अर न मन बन्दूक सू की लेणो देणो हो । थारै पगा री श्रै कड़कली परियाँ सू चिलकती आँ न दीसी है, माया रो रग चोखो, चिलकतो अर चक्कर म नाखण आळो ही हुया करै । लाय नै सोनो समझ कसटीडिया जिया आव बिया ही श्र आया । आ देख्यो लुगाई लियाँ कोई सीधो बटाऊ जावै है—गैणो गाभो खासलो । सुगनी ! मनै म्हारो सोच को हो नी–न मरण री चिन्ता—न जीवण रो मोह । बो तो जगदम्बा न बी दिन सू प'र ही घर सू टुरया हो । अ जे आपा न दबोच लेवता तो नैचा राख मन अ कोझीतरै सू मार देंवता अर तन आपर सागै राखता । थारा जीवण आ सरक्या मे बीततो । हिरण, खरगोस, त्यारिया मार खांवती-दारू पीवती–तो म्हारी आत्मा ई रिंधरोही म तू नही मरती जठ ताँई भूखी तिसी हाहाकार करती रोवती । बनबावरी बडी हया-दया बायरी कौम हुवै—मौको पडै मिनख नै राध र खायलै तो ही अचूम्भो नही करणो । बन्दूक रा इसा 'बांहेती' क

देसी बन्दूक सूं चिरमी बीं य नाग।"

'बापू मन दीसै थारै बेटी सूं लगियो मी माहो ही है। पैंला बा बेटी तीन मिनखा रो नास करायो—दा नै मै ही एडं लगवा न्या।'

"सुगनी। भ्रो ससार सगळा एक राज रस्तो है। ई पर मानखो प्र दूसरी जिया जूण भ्रापरै पूबलै सस्कारां र ऊठाँ पर भ्रापां जियां ही भ्र जावै, जिक सूं जी री टक्कर लागणी लिखयोडी हुवै बा लाग ही चाव विवक री भौरी कित्ती ही साभी राखो—जिका धिगाणै ही माय भ्राय पड बात पक्की ता देणो ही पड सुगनी, पण म्हारै जावण म इसो भ्रो पैलो ही मोको हुव भ्रर त ही एडं लगवाया हुव भा सोच जाण बूझ र हित्या क्यों मोल लै। भ्रापणो हुव चाव पारकै रो, भ्राउखा खूटया कारी है कठ ही ?

मैं भ्रचाणचको ही पूछ्यो "बापू ! कुत्तडी ? बीं रै बूढाई बठ ही— पछ सफा ही विसरग्या— जुल्म हुग्या।'

"म्हारो विचार है सुगनी भा तो बा रा कूत्ता भ्राया है बीं बीं बापडी नै फफेड नाखी है भ्रर वा वा दो च्यार घण्टा नै भ्राई रैसी। भावी री बात है सुगनी ! जठै ताँई जी र साग रो जाग हुवै बी सूं भ्राग बो ही भ्रागै को जा सकैनी '

साची म्हार काळजे मे वडी गैरी चोट लागी— म्हारी कित्ती घणी हेतण ही बा बापड़ी भ्रर मन किती मोटी समझ र भ्राई हुसी, भ्रर मैं बीन समन्त्र रै सु भ्री बिचाळै गोतो दियो। कुत्ता बीनै काभी तरै सूं फफेड नाखी हुसी। बीं रो जी किता दोरो निकळयो हुसी, भ्रर भ्रत ताँई जी बीरो म्हारै मे भ्रटक्यो रैयो हुसी! कठ मिनख री स्वारथी प्रीत भ्रर कठ जिनावरा रो निर्दोस हेत। सावरा बीनै सद्गति देई तू — जीवती है जणास

मैंकतो काया,

थारो परसाद करसू ।

नानी ! जे आ ही थारी मुदकी कीं गोर सागै हु ती तो आज बींरी यादगार म बठै उजळै भाट री कोई छतडी चिणीजती भलो ।'

'ओ काम तू कर–दोहीता है । म्हार सू ती की तार्वं आयोनी ।'

ठीक है नानी चालू कर आग । वण पाणी रो थोडो गुटकियो लियो अर खखारो कर पाछी बोलण लागगी,

'कोई एक रै आस पासै टैम हुवैली । उतराध पास काळी पीळी आधी रा डूड उठता दीस्या । बापू बोल्या 'मुगनी ! आंधी तक्डी आसी दीस । लारै छांटा छिडको आयग्यो तो मुसक्ल करसी, अर देखतां देखतां सगळ लोपालोप हुगी । सागै ही आभा गरज्यो— दीस नही हाथ सू हाथ—कावां तो ही कीनै ?

बापू बोल्या, 'मुगनी भीजस्या भळै । उठ नै टोरचा– आ चालतो काठो हुवै ,कोई पचास पांवडा आया हुस्या, फाफ रा मेह ओसरचो, ग्यान सो—अर खख छँडै जाय पडी अग्यान मी । परियां एक मा सी दीसी जिक मैं चानणो हो ऊठ नै बीनै मोडचो । छाटा थमगी कोई माडा माडा फव्वारिया आवता हा पण बिरखा रो बम ओज़ हो । म्हे साळ कनै गया । बीरै च्यारां कानी पचामू छोटी मोटी बोरटी, पाच च्यार जूना येजडा— पांच सात कोभी तरै रा कैर-अर इता ही कच्चा पक्का चोगिया हा म्है सम भग्या अठै जीरवाण है । जाग्या बडी अणखावणी अर डरावणी ला ी ही ऊठ न साळ कनै ही पसवाडै एक बोरटी रै बाघ दियो । बापू बारणै कनै खडा हु, हाळै सै खखारो कियो । माय दियो जगतो ीसै हो । साळ रै उतरावै पास एक क र लारै एक लाबी काया सी दीसी–साव नागी कोई लुगाई हुगी चाईज ही । म्हानै देखता ही बा ही जठै ही बैठगी— बापू बीन देगी का नही–ठा नहीं । हू तो माय री मांय धूजै ही–पण बापू नै की को व लीनी ।

ई ँ साग एक इसो बिसवास म्हारै मे हो क भ्रो भ्रादमी साव रूळ जावरण भ्र ळा का है नी—जठ ताई हुसी थारो बुरो को ही हूवण दैनी ।

बापू एकर ससारो भळै करयो । माय सू भ्रवाज भ्राई, 'उतावळ मन कर, ठर थोडी हू समझगी, मनै दीसो बा चूडावण का ही नी—है ता काई लुगाई ही । दा मिन्ट ही को हुयानी भ्रावाज भ्राई—'भ्रांवरी भला ही ' कर र साग ही बापू माय बडग्या । मन भ्रावण री सैन करी । हू भ्रारण कनै खडो हुगी । दुनाळी बार हाथ मे—लार करघाडी हो । घोळ री जब मे पिस्तूल पला सू ही हो ।

एक मिनख री खोपडी म एक दियो जगै । भींत पर सिन्दूर री एक खासी लबी तिरमूळ माण्डयोडी । एक कूण्ड मे पाच सात भ्राट री पीण्डाळी-की गूघरी दीस ही, परियां एक ठीगळै मे । कनै दा बोतल दारु रा पडी दीस ही ।

एक बारी पर भ्राप बठो हो एक कनै बिछायोडी पडी ही । कनै ही एक थाळी बाटकी पडचा हा एक कूण्ड म घरणा सारा सळ खीरा हा । रातै गामै सू ढक्योडी काई चीज बींनै भ्रोर पडी हो एक बटक मे उडद रा दाणा हुणा चाईजै हा । साळ सगळी मिचो हा । म्हारो तो जी दोरो हुवण लागग्यो जाणू उळगी हुसी पण खडी ही छाती रै जोर सू जी जमायाँ ।

एक भ्रादमी—भ्रघेड सो । ऊमर हुवैला काई पताळीस पचास एड छेडै । गमछा परण न राता सो । दाडी तिल च वळ मिल्योडी सी करड काबरी । कूकिया री नाडा चिलक ही जियां भींता पर छोरा चाक्ता ही कोयला सू लीकां काढ दिया कर । लारै गिडदावण भ्राटा खायोडी भ्राधक लालाड मैं सिन्दूर थयडघाडा । ऊपरला दा दातं बडा-बडा सामा दीस—नीचला होठ की माटा, ढीलो भर लटक्तो सा-जियां चौखो गयो

रा हुव । तावै रो एक मादळिया बाध राख्यो--बूकियँ रै । भाग री श्राख टावोडी गयोडी --लाग ही छाटी मारक री गुठली मी । नाव श्रागै सू मोटी छावतिया सुपारी सो लारै सू डाडी साव वैठचोडी निया लूँणा घाटी री पाळ पर वी छारै रो पग टिक्यो हुवै । श्रो ढुळनो रूप--देखता ही गधा चमकै श्रर जे टाबर टीकर रात बिगत देपलै तो घूघार, पैलो सास ही लै--दूमरै री बारी श्रावै का नही कुण जाणै ? श्रडगी श्रर उकडाळी पूरो ।

मनै डणती री श्रापमावा री रै रै हँसी श्रावै ही क श्रण बीनै हँमणो सी चुग चुग किया भेळी करी है, हे श्रा ही रायजादी ।

श्रणचीत्या श्रर श्रचाणचका--म्हानै देखता ही बो एकर ऐंरो बैरो हुग्यो, श्रांख फाटगी । श्रडीवै कीनै ही हो श्रर श्राय पड्यो श्रौर ही बजराक । वण सोची हुसी श्रा उल्टी किरिया किया ?

वापू कँयो, कुण हो म्हाराज थे ? श्रर श्रठै श्रो काई किरिया धरम रच राख्यो है कै म्हान ही बताश्रा तो सरी ?

'बीर जगाऊँ--भगवन्नी नै राजी करूँ ।'

जीवता नै जगाश्रो हो का मरयोडा नै ?'

'जीवता नै तो दुनियाँ जगावै बावळा ! मरयोडा नै जगावै बीरी वलियारी ।'

'एक श्राधो हलो मारणो तो मनै ही बताश्रा--हूँ ही जगाऊँ एक श्राधा बीर जाग ता काई ।'

वा की हँस्या, वात्या, 'तूँ वी भाळा ह र--पण है भागी । विना टैम तनै श्रठै नही श्राणो हो--जागण्यां रै श्रखाडै म पण खैर श्रब ही कोई बात नी परसाद ले'र पाछो दौडज्या ।

श्रामण नीचै सू बैठ ही दो पतासा बगाया--एक तूँ श्रर एक वी

थार घर म्राळी न द । नवै मईन थारै हावदा हुवै ता इ नै मूंढा वर नहीं ता नही । भगवती री थारै पर मिरपा है जा ।'

मूंढ सू यी सभाळ'र वोला म्हाराज, मजाण म कोई बात नी। म्रा म्हारी बटी है ।'

'काई बातनी भगवान्—परसाद लेवण मे दोष थाडो ही है। बा रै विस्यो बाळक हु का सर्वनी—बेटो नहीं थारो दाईतो ही सही ।'

'म्रोजूं थे गळी पर हा पण रौर—म्हे इयां पंक्योडो परसा को लवांनी ।'

परसाद रो म्रनादर ?'

'म्रनादर तो थे कियो है-म्ह तो नाम ही का लियोनी । हां—बा बोतला म कांइ है बाबाम्रा ?'

'दारू ।'

'बी लाल पाम नीचै ?'

'तनै मुतळब ?'

'पूछूं हूं सा ।'

कै तो दियो की नही । म्हा‍या रा घणा दपूछा नही लेणा । 'राना जोगी म्रगन जळ म्रारी उल्टी रीत' तूं बोलो बोलो जा, म्रबै ।

'छेडे करो देनां ?'

बापू लारै सु हाथ नै सुंमो कियो—बन्दूव सामी कर बोल्या, 'छेडै करै का म्रावणदूं'–जीकारा दिया ज्यूं ज्यूं म्रागडो ही गयो । साची साची बता दिए नही तो सिर जायलो मूळै री कापी सो म्रळगो ।'

बन्दूक देखता ही होस उडग्या बीरा तो । धूजत धूजतै गाभो उठायो। एक छोरो हो बीरै नीचै साल तीनेक रो ।

'की रो ह श्रा ?'

एक जाट रो।'

वाई नाम है वीरा ?

'सेतो।'

'गाँव श्रठै सू ?'

'श्रधकोसेक उतराधो।'

'थारै कनै कियाँ श्राया श्रा ?'

'एक नायण लाई है इ नै।'

कठै है वा ?'

'बारै ऊभी हुवैला।'

"क्यां खातर लाई बा ?"

"वी रै टाबर को होनी।'

"ई रो वाँई कर हा थे ?"

'श्राज छनिवार है। श्राधी रात नै श्रबार इ री बळि देईजती।'

'पछै श्रठै थे काँई करता ?'

वो की को बोल्योनी—सामा देखै हो। श्राँख एक ही, पण ही जिकी मारएँ पाडै री सी।

'थानै श्रठै सुवाग रात मनावता नै खासा दिन हुग्या हुसी। त इ ढग सू श्रौर केयाँ नै वेटा दिया हुसी ? किता रिपिया ठैराया है बता ?'

'पैला की नही, हुया पछै पाँच सै ?'

'पछै बाँ पाँच सै रो दारूमारू। थारो बौपार भळे चमकतो।'

मैं छोर नै देख्यो। फूठरो। होळै होळै सास ल। श्राँख यन्द ही। वाँ दूणो करघोडो लाग्यो। हूँ गूँगी सी श्राँरी बाता सुणती ही। म्हारो

फाळजो ऊँचो चडण लागग्यो । दुग्ग प सू म्हारो माथो फूट हो । आभ सूकै ही ताळवा फलगगै हो । बठै ढग ढाळा ही इयो हो ।

'सुगनी ! वा गाठडी वार बी लुगाई कानी फैंकनै तो ?' मसाणिय नै कया, बी नै मांय जुता ।'

वा आई अर, बी कन आ र खडी हुगी ।

बापू बोल्या, इ छोर नै ठीक करो पैला ।' बण काई पाँच सात हाथ फेरघा फूँकदी, छोर म चोवी तरैं यु ल्तना बापरगी । आस्या खालदी । म्हारो मन बडो हरस्या । बापू बोल्या स्याबास, हा तो ये बडै गजब रा करामाती । था नै बगसीस मिलणी चाईजै । सुगनी इ छार न लै ता।' मैं लेलियो ।

थे आदम गोर हो थारी जीभ गौर स्वाद पडगी । धान सू थारा पेट क्द भरीजै ? आ निग्मूळ पापात जगदम्बा नी जिकै नै धरता रा अबोध अर ऊगता बेटा चटा चढा ये न्याआ अर री आगैं वेलाज हु बिभचार करो बेसरम मद अर बेकार कीडा ! किरोध अर बिभचारा रा भसा अर बकरा चढावण खातर मा था नै मौका दियो, बी री जाग्या थ बारला भसा अर बकरा चढाया । वाँ सू ही थ ना धाप्यानी तो मिनख जिसी नव नारायण दह नै जीमण री जुगत काढली । थे यी र हुक्म री हँसी उडाई है । थे धरती रा कोढ हो । आज मा रो हुक्म हुयो है कै थ थारै कियाँ नै पूगो ।'

वो सुगै हो । लार लुगावडती बैठी ही । बापू बोल्या, 'खर जावणद एक बात मनैं बता तै मनै ओळख्या ?'

नही ।'

खैर त नही ओळख्यो हुवैला, मै तो तन ओळख लिया अर ओळख ही लिया आछी तरै सू । आज सू दस साल पला एक दिन एक काळ रात

म ये तीन आदमी अर एक डोकरी म्हारी भगवती री पेट म आयग्या ना । वां म सू तीन तो गया गया नी, भाग रो एक भाग नीसरग्या । वा दन साता सू आज भळे मनै व्यान सूधा मिलग्या । मनै अचूंभा आवै अर तायत तन ही आंवतो है लो । तन भगवती दस साल रो मांरा दिया वदास तूं री ठीक हुर ता अर तूं ठीक हुवण रै कनरर ही वो नीकळयो नी । आज लिया हूं चावै हा वियां तूं मनै मिलगा ता हूं थार पगा म नोट पोट न'र याल हूनो अर कूदतो नव नव ताळ ऊंचो । हूं राऊं म्हारै बार नै ह रिव गेही मे भटूं ही रात दिन इ खातर हूं रै कनास मन ही वाइ फूटगी नी क्लाळन मिल अर दारू री दा घूंट पा म्हारी आतमा नै पाव ता म्हारा जमारो सफळ हुवै पण इसा भाग कठै म्हारा ?88 गिरया जिया ही तुगी नाव जिसा—ओ जुल्मी जम अर आ जुल्मण राडजरखणी ।

वो विगेटिया गुणतो गुणतो ही उठयो । दो एक हाथ परिया एक मोटी छुरी पडी ही, लपक्यो बीजळी सो साथा पण सावळ सामा मुड्या वो हो नी ही सू पैला ही पिस्तूल रो घोडो दाया खट, सटक साग ही लागा तिनोर मे अर वाणियै रो विन्नो वठै नी कटग्यो । पडया ही प्रेत सो लागै हो । रण रैंडार भट देनी, दो एक ठठद रा लागा लिया पैंतया म्हार अर आपू कानै । म्हारै तो गडी लटी रै कोई इसो जैर चढयो क छारै ममेत दडन देमी पडी नीचै । मन चेतो घणो ही बाकी बोलीजै नही । सिर म रह रह सूई सी चुभै । बोलणो चाऊं पण जीभ लाटी सी हुगी—खुलै ही नही । वदे वदे आन्या आगे तिरवाळो आवै जाणूं साळ भुंव ।

---

88 मदछकिया न छोड, ए म्हारी सुघड कलाळी
है मतवाळी माग जिता मद पाय । (सान पद सग)
मद छकिया—आतम नान खातर तिमाय।
कलाळी —नानी गुरु
मद —आतम नान—

मन की दशा सुगणीज्या म 'लै रण्डार इ धार मजनू मा ही?
जा—अठ पवनी रोदि करगी भळै कोई धरती रा सपूत विगाड़ की वा
की री हँभी ी वगती गादी उभासी, नर हृत्यारण ! त सूं तो चूडावण
हो चाली न लुगाइ रा मोळिया ही नजायो—तो लै। एक सड्का सो
हुयो अर रण्डार उठ ही गोचटी गायगी विना मीजी।

? विया ही पडी ही। बापू उठा र मनै बार पूल म लाया। अब
आभो साफ हो। चाँ हसै हा। तारा टिमटिमावता हा। बापू साळ र
बूंटा जड दिया। पाणी री केतली उतारी। हाथ पग धोया अर पछ
पलानी लगा बठग्या। मनै सुगणीज्यो त माता ! सरळप करघा कि न
पार घाल—पतरै बीन मिण्ट वननी म फूँक देवता गया—मनै पाणी पाया
पाँच सात मिण्ट भ री जी सोरा हुग्या—बो धोवा चालता मिटग्या पण
सिर भारी हो मू ढा मिट्ठळा मिछ्ळा अर ब स्वादो।

सुगनी सावळ रैय मना' चक्कर मिट जासी। टावर री ध्यान
राखै आवैनी गायो कूत्या बपात हुज्यावै। म्हू ऊँठ पर चटग्या। देस
सावर री लीना—दा ग्यार घडी पैला म्हारै गाळा मे एक कुती ही—
गवार एक वाळा—बीज म्हार गो—हाँ रे म्हारै ढोर जिस्यो हो।' नानी
गो गह र आगै गिटगी—है बडी स्याणी पण पछै बात ?'

मैं कैयो, 'बापू। आ अळबत धीगाणा ही गळ लागी—आपा इ—
नैन आवता तो क्यों नै?'

'सुगनी ! तूं भोळी है—यूंगी जोगमाया री हुक्म टळै है कांइ ?
मिनख तो बीरा हुक्म बजाणिया है—इ विराट मे घणी इसी दाता हुव
बिरोधी अर वेजवती—बा सगळा नैं आपा ही थोडा ही रोकां हां—
जिता जितो जिक नै मुळा रारया है वित सूं जादा न तो कोई कर सकै
अर न बी सूं हुवै ही अर जे कोई आ साचलै क हूँ चावै ज्यूं कर सकूं हूं—
मनै बुण पान—समभन बठै ही बीरा पग ऊपर है। बीरो खातमो करण

गातर वी न सर्म।न भेट। वा करणो पईनी "ओ ससार एक धाखळ ह अर काळ वीरा कोटवाळ । जगदम्बा रै हुक्म सू कोटवाळ री दताळी हरदम चालती रव जिका म जीवा रो कचरा एकै वानै लागै अर एकै वानै वा नुंवा घट घड भेजै । एग दिन वो कोटवाळ आपा नै ही इयाँ ही छट कर देसी सुग्नी ।"

पनरै वीस मिण्ट मे गाव आमग्यो । कुआ चालै हा । चोधरी रो घर पूछ्यो वीनै जगायो । चौनी सूं उठ'र आयो । फळसा खाल्यो—राम राम करी । घर गुवाडी देखता खासो अरसै आळा आदमी लाग्या ।

'सोरो ह चौधरी ?' बाप् पूछ्यो ।

'किया वताऊँ सिरदारा ? सोरा नै सोरा ही ह।—अर ज नही हुवा तो की री ठाव'र लावाँ भोराई ? हाँ जिमा गडया हा मूं माथा लिया ।'

'इसी काँई यात है-चौधरी ! म्हारै ता की समझ म वठी नी—कहता सरी ।'

म्हारो पोतो आज आठ पोर हुया—गाँव गोग्गो सै तळ माटी करलिया को लाध्योनी-भगवान जाण वे हुयो । वह बतावै है कै, अवार आँ दिना म कोई बडघडो हिलग्यो— आसै पासै गावा म केई टाबरा नै ऊँचालिया सुणा-साच झूठ री राम नै ठा ।'

'बडघडो ही का हो नी चौधरा ! सागै एक बडघडी भळे ही वीरै । पण वाँ नै ता आज म्ह पाप पुन लगा दिया-टाबर नै तूं आळवै है ?'

'सुगनी ! झला तो ।' च्यानणी रात म, वी बुढै जाट नै मैं दडवलो सा बाळक दियो-भगवती र उज्जळ परसाद सो सोपतो-वरदान सा सोभतो ।

देखता ही डैण हुग्या हुग्यो जिया पतझड मे गाव उघाडो, जीवण रस सूकग्योडो गाछ मुळकतै वसन्त म नुइ कूंपळा काढ हँस का नीरवाणा कन गयोडै जवान मानवी रो भी गाछो वापडग्यो हुवै अर वीरा दाप राग हुर ।

धन घडी धन भाग–म्हारै आज मोरै रो सूरज ऊगसी । थ थाड मानवी हा का देवता–मनै वताग्रो ? कठै सैर राखूं थान म्हारा सिरदार डैण पगा पडग्या । चौवरण ै कयो–वेट री वहू नै जगाई । आठ पौर सू ऊंधो माथा नाग्यां पडी ही । जोग वैजा हा आ गूगी हुसी–इ म फरक नही । गोदी म लेवता ही बी रो काळजो सागण पड वठग्या–चौधरण वा वेळा ही रासी नी मोटी थाळी जी–छिन चढया– नोप री गी बजाई–आग गाव म भणकार फूटगी । कुग्र पर जोगा नै ठा पडचा । व ै करसियो कुग्रो–ैरा देवता चौधरी रै घरे राणोराण मानग्यो भेळा हुग्यो । चौधरा घणी खुसी म गूंगी हुगी गुड बाटण वठगी–मार ही ो ही ी । गाव रा ग्रादमी म्हार च्याग कानी इया ग्रठग्या जाणै म्ह कोई देवता हुवा । हूं तो देव र छरडीरूम हुगी । वाह सावरियां ! ग्रपार ग्रघघडी पला गिध सू भोड फूटै हो–निया भूता सूं भेटा हुया–म्हारो जी जाणै ह ग्रर ग्रपार मूंढ ग्रागै ग्रा मुळकता मानरिया ।

बापू बोल्या, 'मा ववाई नान जगदम्बा भेजी है भाई ! ग्रो टाबर ग्रगलै भा म बीरा काई ताम्भर वेटो हो–की मे खिमता जिका द न मार ? जिकै म भूत प्रत बी रा नाम सुण नड नडाम ही वो रै नी–चै बी र भापग बट कानी काणी ग्रांख ही करन किमी पोल पडी है माता रो कोप देवा बे–चै जी मू ही गया दानू ।'

बापू बी न गगळी वात मावळ सुणाई । लागा मूं म ग्रांगळी पालती । वान्या जिन ह मिर पर धार मात पिता ।–थ ग्रास गाँव रो नना रिया–न्ैर था ा क्जायत ह । था । ग्राा ग्राज दरना पडसी ।

धवार दो तीन गाँवा मे ई टग सू पाँच सात टावर उठग्या—म्हे बडघडो बडघडा कर'र रहग्या—जिया दिया थे सगळा नैं।

बापू बोल्या, 'भाई ! म्हानैं टैमसर एक थान मुकाम ढूकणो जरूरी है। म्ह अबै ठैरां नही एक मिण्ट ही। माता रो हुक्म हुयो तो पाछो धिरतो ढूक सूं।'

चौधरी चौधरण पग पकड लिया 'था नैं म्हारै घरे आज कुरळो करणो ही पडसी।

'जीवतो रयो तो पक्कायत आस्यूं—था नै वाचा देऊँ हूँ।'

चौधरी माय सूं दही सो घोळो साफो लायो—एक सोनैं री गोप बापू नैं दी—नही-नही करता धिगाणैं, 'थे म्हारा धरम रा भाई हो—की समझो चावैं।' डोकरो बाथा घाल चिपग्यो—जागूं अबै ओ छोडैलो ही नही—पग बीरा जमी पर को टिकैं हा नी। वडी विचित्र दसा ही बीरी बी वेळा।

बापू रै गळैं मे जगदम्बा री एक मूरत ही सोनैं री। बापू बी बेळा बाळक नैं मँगायो। गळगळैं कँठ सू बोल्या, 'लै भाई चौधरी, आ इ र गळैं म हूँ जगदम्बा री सैनाणी घालूं, माता ई री फतै करसी, बडो भागी है ओ, थार घर मे दवता रमसी।' बी रै मगरा मे थापी दी, कैयो, 'डरया मतना थे की बात सू, पीर दो पीर ओजूं इ रै बी जैर री की गैळ रैसी।'

चाँदी रा इक्कीस रिपिया मनै दिया बा धिगाणैं, बापू कैयो जद लेणा पड्या। म्हे च्यार साढी च्यार बजी टुरग्या। भोर हुग्या हो। हँसती खेलती वेळा ही ऊँठ नैं झुरकै घाल दियो। बापू बोल्या दख सुगनी ! ई काणियैं नैं ही कण ही जण्यो है दुख पाई अर दारी हुई है। ई सू तो बीरी मावडती रैं पेट मे एक गाँठ ऊपडती नव मईना ताँईं वधती अर सुँव दिना फूट ज्यावती पट मे ही—बा राध बह बह बारैं आज्यावती—बम बीन हो वा आपरो सवाद समझ नैंवती तो स्यागी हुती—स्योरी कांई घणी

रसारी । नाव लिया पीढयाँ री पुन घटै इसै कुमाणस री । सुगनी ! बाडी अर बिच्छुवा नै मारता म्हाँरा हाथ धूजै पण इसै नारगी र कीडा न मसळता मन मे की विचाण ही का आवैनी मनै ।'

ज्यूँ ज्यूँ सूरज री तिडकी निकळै ही मनै झोटा आवै हा । एकर तो मैं मौरी छोडदी—वा ऊँठ ठैरग्यो । बापू बाल्या, 'सुगनी झोटा आव दीसै ?'

झेंप मिटावण खातर मैं कैयो नही बापू ।'

'नही बापू बर्यांरी–पडगी तो म्हारै जी नै तसियो करैली अर सुगत ली वा पाखती म ।'

'थे बताओ बो धरती रा कोढ ओ ही तो है बापू ! कोढ ही जीत क्यें जिस्यो–नाँव लिया ही नाम सिर्यै ।'

'कोढ किसो एक रकम रो हुवै गूँगी । हाँ इयास ओ है कोढ री गिणती मे ही । मूळ म आपरी जलम भोम नै फळती–फूलती देखण रा जिकै रै काळजै–कोड' नही हुवै बो सगळो कोढ मे ही सुमार है ए । एक कानी आपरी धरती ऊजडती हुवै–लोग भूख मर मर डिगला हुता हुव–अर दूज कानी मैन्त्रा जुडती हुवै–तवला पर थापी पडती हुव–परयाँ नाचती हुवै–दारू उडता हुवै–वा काई पइसा भेळो कर तिजूरी भरतो हुव आपरी सात पीढी सोरी करण खातर–वा धान रा कोठा भर इँ चिन्ताम चाम्यो बाँध्या फिरतो हुव, कै, काळ पडयाँ रिपियो दाणा वेचस्यूँ–गळू सट्टे मैंग मरा नाँग वो कोढ ही नही महाकोढ है धरती रो सुगनी । धीरै मावै जलम भाम र जायँ तुटी सागै—चाव धरती रा किता ही बेटा मराळ मोन मरै– वा तो एक पइसाँ रो पूतळा है ।

बाम् मरव रा जीव ही कर गुगनी ! अरम्भास करै है प्रभु— इ वाड़ न परियाँ वाडै–म्ह ता दाग ही सिरो हो ।'

'वापू ! थारै जिसा जे इ धरती सूं प्रेम करणियां हुवै तो आ धरती सरग बणता कितीक ताळ लागै ?'

'मैं जिसा, गूंगी, कंई ठा किता कथीर इ धरती पर रळै-लुकता फिरै, कुण पूछै वां नै ?'

'आपनै कथीर ही वताओ वापू ?'

'कथीर नही, साव ही कथीर गैली !'

'तो पछै सोनो किसोक हुवै वापू ?'

'सोनै री तो तूं मैमा ही जावण दै, सोनो वो हुवै जिकै री मैक, ज्यूं ज्यूं जुग बीतै, बधती ही ज्यावै । लोग कैवै सोनै म सुगन्ध को आवैनी, हूं कूं (कहूं) के सोनै मे ही सुगन्ध को आया करै है नी कनेई पण सोना ही हुव कठै ही ? ओका नटी लै तो सोनै मे सुगन्ध री एकबात सुणाऊं सुगनी तनै ।'

'हां सुणाओ सुणाओ बापू । म्हारै जी री सौगन जे अबै ओटा रो नाव ही लेऊं तो ।'

'म्हारै नानाणै सू कोस च्यारेक पर एक छतडी है ए ! बठै एक देवळी है दादै पोतै री । साल मे छोटो सो एक मेळो ही भरीज्या करै है भादवै मे ।'

सैकड़ूं बरसा पैला री बात है । दुसमी वो धरती री लाज लूंटण धावो वोल्यो । गाव गाव मे 'जूभाउ' ढोल बाज्या । जाग्यां-जाग्या रा जोध जवान जूभणनै त्यार हुया । एक अट्ठारैं उगणीस वरस रा बाळको त्यार हुयो आपरै मस । फूटती मूछ्यां-उठतो पौरस, उमडतो उछाव । ववच परधा । ढाल अ तरवार साभी । मा कनै गयो हुग्या लेवण । एक ही हो मा रै । विधवा मा-आंख्या री जोत समझो भला ही जीवण आपरो । मा री सीप्या मोत्यां सूं छलीजगी । आणन्द म आपो भूलगी बोली 'बेटा !'

तनै तो जीवण म नठै इसा मोका एकर नहीं, वेई वार मिलैला पण म्हारा तो पछना राम राम हुग्या ही समझ ।'

पाता बोल्यो 'हाँ, कहो पे—सुणू हूँ ।'

'तू देख ह म्हारा हाथ अर म्हारी छाती ओजू मतोल अर माचा है। म्हारै जी म ही रे, कै दैरी म्हारा ही दो हाथ एकर देखता । इ धरती रा मैं पणा श्रम सायो है—री व्याजडी जे भरीज जावतो तो ठीव हो पण पणा बिना लाचार हूँ । प्रा मरन रै मन म ही रैसी,—वि न णी ओ ई बात रो ह ।'

'पोता री ठर परो बोल्या 'दादो आ ?'

हाँ बेटा !'

बस, इती सी वात सातर ओ ग्रणेसो ! छोडो साळै नै । थारा घर हूँ बैठो—हूँ वणस्यू पग थाग ।

दादा समझ्यो । गदगद् हुग्यो । वी रै एक एक रू मे सौ सौ सरणा री सुम वापरग्यो । दादै नै ढाल अर तरवार ला'र दी । कवच दियो वाँ री। दादो पैरर इगो वाड सू नज्यो जिसयै कोड सू कोई बीन ही वाई सज ? दाडी नै काना वारकर ले'र इसी गाँठा दी खुलै किसी पोल पडी है। नीसियै मे सू ग्रमन काढयो—काळो भँवर । एक वाटक मे पाळया । । हळकी सी एक हथाळी भर पोतै नै पाई जाणू जुग जुग रो मळ घा वी नै मथळ करतो हुवै, बाकी आप चढा लियो । पीवतो लागै हो जाणू धरती रा काळकूट पी, आज बो साचेली 'नील कण्ठ वणग्या हुवै । फर पोत रै क धोळ चढघा । राजी इसो जाणू बीन बठतो हुवै । पोतै टु डियै पगा न आपरी छाती सू जरू बांध्या–जँत दे पगै, अर फेर काठा पकड़ लिया । जुद्ध म टुरघा । डैण न कांधै पर बैठाया पोतो इया लागतो हो जाणू कोई गणधर महाकाळ बूढै ईसर (महादेव) नै लिया टुरघा हुवै । आखै

तूँ भनो ही जायो म्हारी कुख मे ।' वाळकै रो रूँ रूँ राजी् हुयो-कवच री कड्या तणीजण लागगी ।

तिब्बारी मे दान्ना हा । ग्रासीस लेवण वौ कनै गयो । सावळ उठीजतो वैठीजतो को हो नी । पग सू लाचार हो इ वास्तैं । पग दानू लडाई म वेकार हुग्या हा कदेई । वाकी ठाठो तक्डो हो । ग्रर वूकिया सजोरा हा । धौळी गिडदावण ग्रर धौळी ही दाडी । वठतो जद छाती ढकीजती दाडी सू । लारलै पगा सू लाचार वूढो सिंघ सो लागतो । पोत न इ वीर वष म ग्रावतो देख्यो । ग्राँरियाँ मे चौसर चाल पडथा । दाडी भीजै ही । पोत सोच्यो दादो सा मे म्हारी ममता जागी दीसै है—इ सू कायरी ग्राई है । बोल्यो 'ग्राज ऊजळै ग्यान मे ममता रो काळमिस दादासा ?'

ग्रासू ग्रौर घणा हुग्या । गळो रूधीजग्यो । को वोलीज्यो नी ।

'म्हारी ममता जागगी ?'

'नही वेटा ।'

म्हार पछै थारी पीढ़ी को चालसी नी इ सातर ?'

पीढी तो वेटा ! नही चालणी हुवै तो जुद्ध मे गया बिना ही को चालैनी । थाडा ठैर भळे वोल्यो ग्यान तो ऊजळो ही हुवै वेटा । बी म न कायरी रो काळ मिस ही हुवै ग्रर न ममता रो ग्रालीडो ही ।'

'तो बिलख्या किया बताग्रो—हूँ मेट सू दुख थारो तावै ग्रायो तो ।'

मुस्कल है ।'

मुस्कल तो भना ही हुवो मिटण ग्राळो है नी ? बोलो थे ।

'वेटा ! तूँ जवान ह । थारी जवानी थारै बाप सू ही वेसी है—तूँ ईं धरती रो मणमावतो जोस है कांई ठा थौर कित्ता ऊँचो उठसी ।

तनै ता जीवण मे भळे इगा मौरा एपर नही, केई बार मिलैला पण म्हारा तो पहला राम राम हुग्या ही समझ ।'

पातो बोल्यो 'हाँ, म्हो थे—सुणू' हूँ ।'

'तू' दवै है म्हारा हाथ अर म्हारी छाती ओजू' सतोल अर माचा है। म्हारै जी मे ही रे, कै ढेरी म्हारा ही दो हाथ एकर देखता । इँ घरती रा मैं घणा घम खाया है—गी व्याजड़ो जे भरीज जावतो तो ठीक हो पण पा बिना लाचार हूँ । मा मरतै रे मन म ही रैसी,—विलखणा ओ इ बात रा है।'

'पाना की ठेर परो ओ-यो 'दाड़ो सा ?'

'हाँ वटा !'

वस, इती मी बात सानर ओ अगेसा । छोडो साळै नै । थारा पा हूँ वैठो—हूँ वणस्यू' पग थारा ।

दादो समझग्यो । गद्गद् हुग्या । थी रै एक एक रू' म सो मी सरगा रा सुग्व वापरग्या । दादै नै ढाल अर तरवार ला'र दी । कवच दियो बां रो। दादा पैरर इसो वाड नू मज्यो जिस्यै कोड सू कोई बीन ही बाई सज ? गाडी नै वाना वारकर ने'र इसी गाँठा दी खुलै किसी पोत पडो है। नीगियै मे सू' अमल काढयो—काळो भँवर। एक वाटक मे घोळ्या । । हळकी सी एक हयाळी भर पोतै नै पाई जाणू' जुग जुग रो मळ धो वी नै अमळ करतो हुवै, वाकी आप चढा लियो । पीवतो लागै हो जाणू' धरती रा काळकूट पी, आज बो साचेली 'नील कण्ठ वणग्यो हुवै । फेर पोत रै कन्धाळै चढग्या । राजी इसा जाणू' बीन बैठतो हुवै । पोते दु डियै पगा न आपरो छाती सू जरू बांध्या—जँत दे पगे अर फेर काठा पकड लिया। जुद्ध म दुरचा । डैण नै कांधै पर वैठाया पोतो इयां लागतो हो जाणू काई गणधर, महाकाळ वृढै ईसर (महादेव) नै लिया दुरचा हुवै । आवै

गांव डागळां अर वाडा पर सूं ग्रो दिरस दरयो हुसी। पातै रै पगा री रेत ले ले लिलाड पर लगा न्याल हुग्या हुसी।

हूं देखूं सुगनी ! धरती री ग्रा छिब देखण खातर एक्र सरग खाली हुग्यो हुसी। ग्रा री ग्रगवानी री त्यारी मे ग्रपसरांवा ग्रापस मे लड-लड मरी हुसी। सरग गया पछ ही, धरती रा ग्रो दिरस तो बापडा पैली बार ही देख्यो हुसी कै हाथ कीरा ही ग्रर पग कीरा ही–लडै कोई ग्रौर हो, चालै कुण ही हो। किरताथ हुग्या हुसी वै। ज्यूं ज्यूं ढोल वाजै हो दादै री नसा म महाकाळ ऊनरै हो, ग्रर पोत र पगा म ताण्डू नाचसी फुरती। एक हाथ सू पोतै ग्रर ग्रापरी रिक्स्या ग्रर दूजै हाथ सू तरवार खिंवै ही– दिन म भुरजा नै फाडती बीजळी सी। वैरघा रा भोड कट कट पडता हा धधूणी मे पाका बोरिया खिरता हुवै जिया। राती घरती पर भाड इया पड्या हा जिया रण भोम री सुकाणा म बेसुमार छाणा पडचा हुवै। वैरघा री तो एक्र वाख इया फाटगी कै ग्रो रासो कांई है ? धरती रै प्यार रो, इसो पानो सुगनी ! ससार मे ग्रो पैलो ग्रर पछलो समभ तू ।

दादो कैवै पगा पर जोर राखे बेटा !'

डरघा ही मत, हलको ही का ग्रावण द्यूं नी थे तो वाढण पर जोर राखो। ग्रर डैणियै नै कडकडी ग्रावै हाथ दूणै वेग सूं चालै। पोतो खुद हडमान जी सो दव देसी, ग्रर ठो वैरघा रै बिचम। दादो पारथ रै पसुपत ग्रसतर ज्यू पाथ लेंवतो ही दीसै।

'मारधा रे ममाण' 'हे ग्रल्ला ग्राछी करी' रोळा सू ग्राभो गरणा उठचो। डैण घणो ही लडघो पण छेवड लड र कितोक लडै। पोतै रा पग कटग्या। दादो जाग्या जाग्या सू घायल हुग्यो। रणखेत म पडग्या दोनूं। ग्रंत वेळा मे दादो एक्र मुळक्यो, इसो मुळक्यो क ग्रापरै जीवण में इसो पैला कदेई नही। पोतै रो स, फेर कणो ही कांइ ? सास्यात् सक्र ग्रवढर नै ही राजी करलियो हो वण। मौत वीर पगा म

भकगी वो निरमै सूतो हो आ'या अर कान दावे वानी कर'र । बी नैं सुणीज्यो —

'लै बेटा ! तैं आज म्हारी पहली मनोकामना पूरी कर धरती रैं प्यार म डुबो डुबो म्हारी आतमा नैं हँसाई है, तो इ जत्म भोम री किरपा सूं थारो मरणो ग्रैंळो को जावैनी । थारैं स्थूल सूं अठै एक देवळ उपडली जिकै री जडा पर मानखो सिर राख किरतारथ हुवैलो अर थारी गाथा सुण, जुरूरत पडयाँ, एकर तो इ धरती रो मरघोडो मानखो ही जत्म भोम रैं प्यार री रिक्स्या करैं लो । थारी आतमा थारैं एकलिंग सागै रास बास करती सुख री लैंरा लेसी—जद ताई चाँद सूरज आभै पर चमक्सी— आ म्हारी आसीस है । डोकरैं आँख मीचली अर आँख मीचली पोतैं ही ।"

हूँ वारी बात, इस्यै ध्यान अर चाव सू सुणै ही कै कठै ही तो गया म्हारा भोटा अर कठै ही गयो म्हा'रो सिर दूखतो ।

'बापू बोल्या, 'क्या सुगनी है सोना ?'

'बापू ! सोनो जिकै नैं, कैं जिस्या ।'

'अर सुगन्ध वी री ?'

'थाळ सू ही को धुपै नी इसी ।'

'ऊँठ धीरैं धीरैं गाळै चढै हो पण हूँ सोचैं ही कै का तो ओ बापू री बात सुणन खातर ही धीमो पडयो है, अर का इ न ओ ध्यान हो कैं आवती बात न कठै ही भबळको नही लाग ज्यावैं । ऊपर आवता ही बापू बोल्या, 'अबै आपा एढै सर आयग्या हो समझो । हे—वा देख, साळ सी दीसै परियाँ—कोई कोस सवा कोस भूँ हुवैली—हणै चालग्या परा ।'

ऊँठ नैं थोडी ताळ खातर एकर सामो ढाण घाल दियो । 'जे रात आपा सुगनी दो च्यार घण्टा वेसी नहीं लगावता आपा तो अठै सूरज री उगाळी पर ही ढूकता । खैर आखडचा जिसा को पडयानीए ।'

□

छः

पनरैक मिण्ट चाल्या हुस्या, पौ श्रायगी। पौ पर एक पीपळ हा—कन ही एक नीम। मनै इया लाग्या जाणूं कै म्हारै घर श्राळा सागी रूंखड़ा वठै सूं चाल'र श्रठै, मैं सूं दा घडी पैला ही, सदेह श्रा पूग्या हुवै—म्हारी श्रगवानी करण का म्हारै सूं हेत हो, बा प्रीत पाळन। जाग्यां रमणीक ही।

ऊंठ न जकायो। हेला मारयो। पचास पिचपन बरसरी एक डोकरी बार श्राई। मांय बरस साठेक रो एक डोकरो बठा दीसै हो। डोकरी वडो माण कियो। बापू श्रापरो रोजीनै रो काम धन्धो कियो। दो च्यार घण्टा श्राड टढ करी। मिझ्या पडी—की थोडो सो जीम्या। डोकरी नै मायत् रिपिया दियो। ना घडी रात गई परी हुवैला। बापू रै जावण री बेळा ही। ऊंठ त्यार हो। मन बुलाई—सागै डोकरी नै प्यारी। म्हारै सिर पर हाथ फेरचा—म्हारी श्रांख्यां सावण री वादळी सी बरस पडी। 'बापू। मन इयां एकली छोड र जाश्रो—कणा ही ता सुध बुध लेवोला—म्हारो जी कर कै हूं म्हारै इ वापू री सेवा करती—थारा बदळो उतारण री की मौको ता मन ही मिलतो!

'सुगनी ! तूँ गूँगी है—ओजूँ को समझीनी—क सँभाळनियो हुण है ? जावणियो हूँ ही खाली को हूँ नी-तनै जिका दीसै वै सगळा ही जावणिया है। विराट म बिना बताया ही रोजीनै इसा घणा ही जावै जिका आपरै आदम्यां नै आध घडी पैला कँवता हा कै थानै म्हे एक मिण्ट ही को छोडा नी,—थानै छोडचा म्हारै सरै ही तो कोयनी—वा सूँ दो मिण्ट ही को रुकीज्यो नी सुगनी-म्हारी किसी गिणती है बता। बदळो ? बदळो आपा जठ सोचा हा उतारा-वठ चढै, अर चढै, बठै ऊतरै, आ बाता नै आपा को जाणा नी। बदळा उतरण चढण री बही मे नावो लेखो करणिया कोई और ही है, तो ही आपरी तरफ सू सेवा करण री भावना ही राखणी।

सुगनी ! जगदम्बा री माया अजब है। जठै सेवा करावण रो मन हुवै बठ इमा जूत पडै कै धरती ही बा झालैनी अर जठै जूत पडन री धारा बठै इसी सवा हुवै जिकै न देवता तरस। तूँ साचै मन सू थारै मावरियै नै सूँपदे अर बैठी चैन री बसी बजा। इ धरतीरा गीत गा।

देख आ डोकरी ! थार धरम री मा है-वठी अठै चरखो कात। हुवै जिसी इ री सायता कर रोटी जीम अर दो घडी थारै मावरियै नै याद कर।

"तो ठीक है सुगनी !" ऊँठ रै एड लगाई अर ऊँठ अँधेरै म अदीठ हुग्यो, हूँ बहरी सी दा मिण्ट आख्या फाडती रही बी नै।

अठै आया मनै तीन महीना सू घणां हुग्या हा। हूँ अठै बडी सोरी अर सुखी ही। एक गाय ही जिकै नै दू वती, इक्यातरै दूजै बिलोवणो करती, फूस काढती अर कदे-कदे रोटी टुकडो सेकण री ही सौगन को ही नी। सेर दो सेर गाळो म्हे दोनूँ सागै ही काढती। दिन मे दो घडी चरखा कात लेवती, कोइ इसो लाबो चौडो काम को होनो।

बूढकी नै हूँ मा कँवती अर मा सू बेसी वा म्हारो लाड राखती। मन कनै ले'र सावती। आयोडै बटाऊ सू न तो हूँ बिना काम बोलती

ग्रर नै वा ही चांदनी कै हूँ की मू वे मुनळव वोतू ही ।

एक ग्रचू मैं री बात ग्रा ही कै ग्रा लुगाई वैरैं मैरैं तो इती नही पण सभाव मे म्हारी मा सूं खासी मिलती जुलती ही । वडी स्याणी ग्रर पारखी पीड म पग्न ग्राळी ही । ग्रैरगैर साग रूस बदळती ताळ ही को लगावतीनी इ मामलै मे वडी खारी ग्ररो खरी ही । सागै सागै रामनेमण ग्रर हरजसण न्यारी ।

म्हारै घर सूं !हूँ वेई बाता म ग्रठै घणी सोरी ही । ग्रठै म्हारै न कोई कळं ही, न की रो ही ठोलो ग्रर न की वात री चकचक रो ही कोई डर । निरवाळी ग्रर नचीती ही, की री रावगी न देवगी ।

नीम ग्रर पीपळ दोना नै हूँ रोज मीचती । पीपळ नै ग्ररदास करती कै 'म्हारा दवता ! म्हार बी वाळकियै नै सुख री वायरो ग्रावै । ग्ररदास हूँ रोजीनै करती तो सरी पण तरःतर म्हारी ममता री डोर पैला सू खासी ग्रोटी पडगी ग्रर पडता ही लेग्या ।

मनै ग्रठै ग्रायाँ मू सगळा सू मोटो फायदो ग्रो हुयो, कै, हूँ ग्रठ की पढणो सीखगी । मा मनै कयो, 'सुगनी, तूं मोटयार जवान है, कदेई एकलपी हुवै, मन नही लागै तो काई भजना री पोथियो खोल लियो ग्रर वखत सारो काट लियो । सुवारथ ग्रर परमारथ दानूं सजैं इ खातर थाडो घणो भणल । थारो किसो काटा मे हाथ जावै गूंगी ।

मन ग्रा वात वडी ग्राछी ग्रर ग्रोपती लागी । म्हार काळज री कई वण । मैं जिकै दिन वो भजन सुण्यो हो कै, 'राणा जी नहि भावै थागे देसडलो रग रूडा,' वी दिन ही म्हारैं काळज री धरती पर मीराँ मेडतणी री भाव वारा काँनी पसरगनै, एक प्रेम बेल ऊगगी ही, ग्राज ग्रा मनचीत्यो मौसम देख वधाणा चाव ही । वी दिन मैं सोच्यो कै, 'दीनानाथ, जे ग्राज हूँ की पढयोडी हुती तो इ री च्यार वडी की पानै पर मांड लेवती, बी न

गोख-गोख कँठा करती अर म्हारै मन री मौज हुती जद गावती गुणगणावती कितो आणन्द आवतो ।

डोकरो साठ वरस सूं वेसी नहीं तो घणो कम ही नहीं हुणो चाईजै हो । मा दाइ तो मन इत्तो सूधा अर सरळ कै जच्योनी पण मनै ई वेळा ताई मिनख नै खास ओळखणो ही को आवै हो नी । डोकरो, हो पढयोडो ।

टीपणो देखतो । पौ पर टर्यां तो छत्तीस पूण ही ढूकती पण राईका, गवाळिया, एवाडिया अर खेती खड घणा ढूकता । बैं, व्राबै नै आपरी दिन दसा, मोरत का जमानै री हवा पूछता । बी नै की सुगन सरोधै रो ही ग्यान हो । गम्योडी गाय, भैंस अर ओठारु नै की आंगळी सीध करतो हो । डक्क, भडुरी राजिया ढोलामारू रा दूवा सोरठा खासा जाणतो । वाता सू बडो गाघ अर चलती रकम लागतो । काणी किस्सा इसा कँवतो–हियो डुलाव जिसा । कूडी साची नाड न्यारी देखतो अर की घरु उकाळी पाणी ही जाणतो । टूणा टपकरण अर डोरा डाडा भळै करतो–गुणा रो तो गोथळियो बळतो, इ खातर ही बी री बठ मानता ही पण रूप रो इसो सरूप हो कै, हाथ रा दियोडा दो बोरिया ही को भावैनी ।

बी टैम, बीसू गाँवा मे कोई कोई सो पढया लिख्यो लाधतो अर जिकै मे लुगाई पढी लिखी तो दरसण नै ही को मिलती नी । एक टैम आज है भण्योडा रा भला ही एवड उछेरलो । छाटी छाटी छोरयाँ पोथ्या बाँचै । बी वेळा पढी लिखी लुगाई नै गावा मे लोग कावला सासतर भण्योडी कँवता । एकर रुणेचै रै मेळै मे मोटर पर एक लुगाई आई, मैम ही । जोधपर सू आई बतावता । लोग कँवता कै आ कोनला सासतर जाणै है अर उडता तार बाँचै । बी नै देखण खातर मानखो को मायोनी ।

मा कह दियो पढण खातर अर हूँ चावै ही पैला सू ही । सोनो अर सुगन्ध मिलग्या मनै–ग्रौर चाईज ही काँई हा ? लक्डी री एक पाटी

ही । वावो मनै पाच सात ग्राखर माड देवतो । हूँ ग्रा नैं मेटरै डगळियै सू घोटनी, पछै देखा देख माडती । दो ढाई मईना मे रासिमाळा (होडाचक्र) भामा गीता, मीरा भजन माळा, इसी पोथ्यां ग्राछी तरै सू उघाड लेवती ।

एक दिन री वात है । भादवो लागतो सा ही हो । ग्राभो बादळा सूँ छाईज्योडो, जी सोरो करै जिसी पून । च्यारू मेर हरियाळी, भर चौमासो, तीजणी मी मुळक री गैंएा सूँ लडालूम धरती ।

पौ रै चिपतो ही म्हारो खेत—हुसी कोई पाच छव हळ रो । खेत म तिल मूँग ग्रर मोठ बाजरी खडा । बेला राबा लावा नाळ छोड राख्या हा, मन लाग्या जाणूँ मूँग ग्रर मोठा सू हेत करण खातर वा ग्रापरी इच्छा परगामी हुवै के, 'ग्रा रुत ग्रर ग्रा वेळा भळै नही ग्रावैला । ग्राग्रो ग्रापाँ पून सागै लुळ लुळ नाचा ग्रर जीवण रा लावा लूटा ।' मूँग ग्रर माठा जाणूँ जमानै री हवा सागै हू सिर हला ह्ना हा भरती हुवै । वन ही ग्रामैं सू उतरी ग्रणगिण ग्रपसरावा सी बाजरी खडी ही । बाँ री ग्रासीम लेवण खातर वेता जाणूँ वारै पगा लाग ही ग्रर वै ईं मगळ वेळा म ग्रापरै सिट्टा सू बा पर कूँकूँ छिडकै ही । दवला सा तिल लारै क्यो रैवता हा, बै ही फूना गी बिरखा करता हा ।

मेत रूपी ग्रागण जिकै पर लाक्नाच री रगरेळ म ग्रैंस राता माता । पूँन ग्राँ रो उस्ताद नचावणियो—ग्रगा नै ग्रभ्यास करावणियो, बादळ रह रह ढोल पर डका देवाँणयाँ । नीचै धरती फूली को मावती भर ऊपर ग्रामै री क्या पूछो ?

च्याराँ कानी सीव री लैंण म वैठा फोग, खीप, सेवण, सरकना, वूई, ग्रर बाँठ बोभा, देखणिया कित्ता ग्रापै हा । कदे-कदे ही घणी खुसी म वैही ग्रापगे मिर हिलावता !हा बाँ सागै, म्हैं'र नानी की मुळकी, बोली, रियाँ रै ठीक ह ?' मैं देख्यो नानी मयार छौळ मे है । हूँ बोल्या नानी,

"इयाँ ही जे आखो मानखो ई आखी धरती रै आगणै पर थिरक थिरक सागै नाचै था थई सागै अभ्यास करै अर एक दूजै नै देख-देख मुळकै तो ?"

'तो गैला पछै सरग कानी मूँडो ही कुण करै। सरग आळा ई नै आवण नै लड लड किसा को मरैनी ? नही नाचै ईं री चिन्ता मनै कम है रे ! चिन्ता आ है कै कुदरत रो इसो ओपतो अर ऊमडतो बोपार देख, घणखरै मानखै रो सीखण री चेस्टा मे मन क्यो वो उछळै नी, पण खैर कोई नाचो मत नाचो आतो हूँ समभी कै तूँ म्हारी राम कथा रै मूळ नै खासो भलो समभै है ।'

"हाँ कह नानी कट् बडो आणन्द आवै थारी कथा मे ।"

'माय माय कठै ही अधपीळा अर आळा रीट पक्या हा जिका जाणू वेना रै पैलै अर पवितर प्यार रा सोनै सा सुहाणा फळ हुवै, जिया जियाँ तप लागसी वारै रग रूप मे घणो निखार आसी आ ही बात मिनख सागै है रे जियाँ जिया तपसी वीरो रग सोनै सो निखरसी । मतीर री वेला हर्यै चिक्कण लोइया नै आपरै चौडै पत्ता रै गाभा नीचै इया ढक राख्या हा जाणूँ आँ नै निजर नही लागज्यावै । सास लिरावण खातर जाणूँ कदे-कदे पूँन सागै एकर बाभो छेट कर मूँडो उघाड, भट पाछो ढक लेंवती । देख तूँ लाइया नै, सतपुरूसा र जिया आपरो रूप सुख दुख मे ठेठताइ एक सो राखै। वाँ रै जीवण मिठास री, धरती मे कठै ही होड हुवै ? माणताण रा भूखा काकडिया आपरी सुगध बारै फैंके, ईं खातर बारै ऊजळा माँय खाटा चूक अर मतीरा सुगध माँय राखै इ खातर बारै सादा सुगध हीण अर माँय मीठा गुट ।

हूँ सीन माथ बैठी ही, कोई डाँगर खेत मे न बडै । म्हारै हाथ मे पोथी ही मीराँ भजन माळा । एक दिन मनै जिको भजन आछो लाग्यो हो बो म्हारै हिडदै र कण कण मे बैठग्यो, आज हूँ बी भजन नै बैठी मस्ती सूँ गावै ही अर बडो मोद हो मन कै हूँ पोथी बाचू हूँ । गाँवती अर फेर इ नै

बीनैं देखण लागज्यावती । पछी ग्रामैं म किलाळ करता हा, कदे कदे इसी कळाबाजी न्यावता जाणूं लडाई खातर थारा उडणा ज्याज ग्रभ्यास करता हुवै । करैंनी कठै जावैं ग्रैं दई देवतावां रा उडणा ज्याज ही तो है ।

ग्रामैं कानी दख्यो, धरती'र ग्राभो जठै मिलैं वी जड म सूं लोर उठता दीसैं हा । इसी लैण बणा-बणा फूठरा चालैं हा जाणूं पैला एक मगनो हाथी हुवैं दळ रो नेता, ग्रर बीर लारैं छोटा मोटा ग्रणगिण हाथी टुरया हुवै । कणा ही उतराधी कळायण बरसती दीसती कणा ही ग्रगूणी, जाणूं वठली धरती पर ग्राज काळ रो मायो निचरीजैं है । ग्राभ री ग्रा फौज लडती लडती, भिड'र फीस पडै गा रो ग्रो फीसणो धरती रैं मानखैं नैं कित्तो चाखो लागै जिकै म मरुभोम रैं मानखैं नैं तो बात ही क्यो पूछो ?

वां मिनखा सू बादळा रो ग्रो जुद्ध कित्तो ग्राछो, मिनख एकै कानी जुद्ध री त्यारी कर ग्रडवां खडवां, गोळा ग्रर गैसां मे खरच करैं ग्रर दूजैं कानी मानखो भूख सू तडफ-तडफ मरैं पण वौरा काळजा की यो पिघळैं नी, वां नैं कांईं चाटै ? मानखैं रो कूटळो ग्रर धन रो खळो, वां री फौजां इत्तो ही जाणैं । लडाई ही लडनी है तो बादळा दांइ लडो ।

हूं सुणैं ही ।

'खेत सूं की परियां खोड म गाय वाछा बडा फूठरा दीस हा 'जाणूं 'सगळी रिद्धि सिद्धि सौ सौ सगीर धारण कर भामी री दूरी दरी पर टैलैं है । भेड बकरी लैण सू इमी चालैं ही जाणूं हिमाचळ सूं गगा जमना 'यारी-न्यारी उतर मैदान मे होळैं होळैं बगैं ही, दीसैं है ग्रागैं चाल र ग्र एक हुसी ।

नाना म रह रह ग्रलगूंजे री ग्रावाज ग्रावै ही, बडी मीठी ग्रर मन हरती । सीव माथ कर दो हिरणियां मुळकता मटकता नीकळया बीन गया जी न ग्रळगूंजो वाजैं हो । हूं जीमी जूटी ग्रबार खेत रा ग्राण द लेव ही ।

बाह साँवरिया थारी माया, ओ ही खेत किसोक उदास अर अचँरो लागै हो, आज जाणूँ इ में तूँ रासलीला करसी। थारै खेलण खातर ही कुदरत आ सगळी त्यारी करी है—इ नैं सिंगारयो है। हूँ सोचै ही का म्हारै ऊपर एक सज्ळ स्याम लीलो लोर, आयो पाणी सू टपाटोळ भरयो। मैं देख्यो ओ खेत नै आज इमग्त सूं धपा नाँखसी पण देखतां देखतां वो इयाँ ढळग्यो जियाँ कोई किरपण जाचक नैं पइसो दिखा'र आगीनै चाल पडै।

हूँ देखूँ अबै खेत री हरी ज्याजम पर स्याम सुंदर आवै तो कितो आछो? 'कनै थारा गाय वाछा चरै। थारै दुरण री खुसी मे ऊपर नगारा बाज, अठै स्वागत मे सुरीला अलगूँजा अर मीठो टोकरयाँ री भणकार। बीनैं भेड बकरया री गंगा जमना चालै। अगूँणैं पासै सतरंगी इंदर धनुस। देख थारै खातर कुदरत किसीक फूठरी माळा त्यार करी है। अबै कसर है एक थारी ही! आ धरती थारी राधा, तनैं आँखिया फाड फाड अडीकै।"

इयाँ हूँ म्हारी सैज समाधि मे लाग्योडी ही। रस मे भीज्योडी। म्हारी सुरता अचळ अर मचळ मचळ प्रभु कानी लग्योडी ही। घर अर सरीर नैं हूँ बीसरगी। थोडो खँखारो सुणीज्यो। मैं लारीनैं देख्यो तो मा खडी ही, बोली, सुगनी, आज बोळी हुगी काइ? किता हेला मारया सुण्या ही कोयनी।

"काँइ बात है मा? मनैं तो की ठा पड्योनी।"

बटी दा तीन बजी हुवैली। गाँव कानी एक ऊँठ आळो आवै है हूँ थोडो घर सँभाळ आँवती। जे बिरखा नही औसरी जद तो हूँ सिज्या ताईं मोडी बैगी आई रै स्यूँ। साँइ री सौ कुदरत है जे नही आईजै तो पछै दिनूगै ही। तूँ डरै तो को है नी एकली—डरै जणा'स, नही सरयो पछै।"

'हुवै जठै ताँइ तो आवण री ही कर मा, नही जणास पछै देखी लागसी। रात तो हूँ, राम राम कर'र ही काढ देसूँ।

'नही जणाम बेटी, अठै ईं धरती पर राज 'गगो बाबो'* करै है, कौरो घर पाणी म है जिको जाण बूझ'र काळ सूं कुचरणी कर। इ राजा र राज मे हो बेटी, रैत जे सोनै सूं पीळी हुय, रात नै रोही म रमै तो ही कोई सामो को देखैनी। निस्सक सोए भला ही तूं।"

'तो ठीक है मा ! तूं जा सौख सू।'

मा गया पछै हूं घण्टा भर बठै ही बैठी रही। फेर पो पर आई। गाय दूई—खीचडी कर बावै नै जिमायो—हूं जीमी।

बादळ एकर खासा खिण्डग्या हा जियां साधना करती बेळा कुसस्कारा री मोटी परता। सोच्यो रात निरमळ रैसी—बिरखा की हूती लागीनी। मां टैमसर ही आज्यावैली—पण सिझ्या पडता पडता भळै बादळ जोर चडग्या अर आभो काळो स्या हुग्या। ई नै बीन बीजळी खिवण लागगी जिया घणै अधेर मे कोई घडी घडी बटरी जगाव अर बुझाव। अधार म धरती री सिरगार देखण खातर इदर जाणूं घडी घडी खटको कर-कर बीजळी जगावतो हुवै का जानी चण्योडा अणगिण देवता साळं सिरगार करयोडी धरती अर बरसतै इदर रा आपरै कैमरा सूं फोटू लेवता हुव—अर बां री पळको रह रह पडतो हुवै। बाको घटाटोप इसो हो क हाथ न हाथ को दीसै नी अर डर -यारो लाग।

साळ मे एकली ही। दियो जगै हो। सोच्यो मा तो की आवती लामी नी। दियै रै चानणै पोथी बाचूं—नीद आसी तो चाखो नही तो नही सरयो कदेई घणी राता, बिना नीद ही काढयोडी है—किसी मरूं हू एक रात मे।

अचाणचको ही आभा घररायो। बिरखा री सौंक सुणीजी। बारै आ'र देखूं तो पाणी पोटा पोटा पडनो चालू हुग्या। बीजळी बादळा

---

* बीं बेळा बीकानेर रियासत मे राज म्हाराजा गगासिघ करै हा।

मे को मावै ही नी, अर परनाळा मे पाणी । —चौक पर पडतै पाणी रो दडीड सुणीजै हो—गावडी घूंघगी तो हुवा'र हुवा फेर सोच्यो हुए जावै अंधेरै मे दीसै नी को दीसावै नी—इसी सा रामजी री मरजी । वारणो ओढाळ लियो । दियै कनै वोरी बिछायाडी ही वैठगी पोथी ले'र । दो च्यार भजन बांच्या हुसी—झोटा आवण लागग्या वठै ही आडी हुगी । नीन्द फिरगी–इसी स्तोरी अर सुख री वै मत पूछाना । माळा फेरता फेरता का भजन गावता-गावता जिकी नी‍द आवै वा रोजीनै री घाई घूंची आळी घाम चलाऊ नीद सू न्यारी ही हुवै-वीरो रस ही न्यारो हुवै । मन नै कुठोड गोता खावण नै कठै जाग्या । हां तो हूं बडी निधडक सूती ही ।

अचाण्चको ही म्हारै बूकियै पर कोई ओपरो हाथ लाग्यो—अर पूंची झाल लिया । हूं भभडकी । म्हारो रूं रूं अजाण डर सू कांपग्यो म्हारै मूंढ सू आपे ही निकळग्यो बा वा–ओ कुण है ? आंख खोली तो म्हार स्तार वावो ही वठो वळ हो । हूं एकदम खडी हुगी । ओ काई ? वण म्हारा हाथ झाल लिया । बोल्यो जा मती । मैं हाथ छुडायो तो हाथापाई करण लागग्यो–बोल्यो, 'इयां मत कर ।'

तनै अजाण हवारो दिराऊँ, अबै मनै रीस आई तो इसी कै मत पूछना । हूं बीरी दाडी झाल'र बोली, 'थारा हियो ही फूटग्यो दीसै–डूम रै घोडै रो फूटै जिया । दियो ओजूं निमधो निमधो जगै हो–तेल खूटण आळो हो । वीरा सास हाफीजग्यो–मैं दाडती नै भटको दे'र खैचतोली पण वडी मुस्कल हुई पछताई जिया कोई अळियै थाक्ल गोधै री आंख पर लाठी री देर । बा तो एक झटकै म ही जिती, म्हारै हाथ मे हा–खूस'र आयगी–जियां कोई राबडी सूं चेप्योडी हुवै का जियां वादी बुआरी रा तिणकला खच्या हाथ भरीज जावै–आली धूड मे रोप्याडा घोचा खीचता ताण आवै तो ई मे आयो हुवै । आस्यां गोटका सी बार आयगी–हूं बोली, हिय फूट,

मौत तो तनै तेड़ो देवण म्राई सही है–लकड़ी थारी मसाण मनै पूगी है म्रर तनै म्राजूं बीनणी भावै ।

बीरा पग धूजण लागग्या–पीण्डचाँ पमसलाँ सी देखी तो दया म्रावण लागगी । देखता देखता सगळा डील कापण लागग्यो । मैं दस्या एक वीनी म्रो दियो भप भप करै—म्रबै बुभूं म्रबै बुभूं—म्रर एकै काने म्रो मसाण धूजै । देग्यो मरग्या तो मुस्कान हुसी । दियै वापड़ै सगळो स्नेह दूजा नै बाँट दियो, म्रबै भला ही धूजो–पण म्रो कोढियो धिगाणै धूजै हो ऊमर री बाट नै म्रणसोच्या वोभी तरै सूं वाळदी—स्नेह नै धूड म ढोळ ढोळ । म्हारो हाथ भरयो दाडी रै केसाँ सूं जिया म्राकरो वादो थेंकाळो हुवै ।

मनै दया म्रावण लागगी–म्हारै पगा पडग्यो, बाल्यो म्हारै सारू री बात को ही नी–दिनूगै म्रावै तो बीनै कैए मत, तनै थारै भगवान री सौगन है । हूं रूळजास्यूं–मनै वा म्यालेसी वटका सूं ।'

दाडी रै केसाँ नै हूं कठ लुकाऊं—मैं बी नै हा ज्यूं ही दे दिया म्रगलै री चीज ही—मनै राख र काईं करणो हो । एकर तो कैंऊ ही कै म्रांनै गोऊं रै म्राटै सूं पाछा चेपलै चिपै जिसा ही चोखा । वो बोलो बालो गयो परो । ठोडी मे गिलोल निकळगी जिया माय सूं लाल निकळन म्राळं इलावादी म्रमरूद री नीचै सूं कणही कपली उतारली हुवै । ठोडी दसरी म्राम री गुठली सी निकळगी । मैं एकर बारै देख्यो म्राभै कानी–चाद हँस हो निरमळ मन सो म्राभो साफ हो । मैं बारणो ढक लियो ।

म्रबै नींद म्रावण नै कठै जाग्या ही । विचारा री म्राधी जोर पकड लियो, हे दीनानाथ ! म्रो थान मुकाम ही छूटसी दीस । ईं दुरभागण रै करमडै म फोडा पडना ही लिख्याडा है तो कुण टाळसी । छेकड म्रो बीरो धणी है बी रै तो इ सूं मोटी म्रल्ला है । धणी रो इतो म्रपमान वा कद सैसी ? म्राग तो भरतार पूठरो घर भळे मैं दाडी खोसली ।'

फेर झौंवो आयो, 'एक बापू तो मिल्यो जिकै री सौरम ओजूं आवै, जिकै दो ही दिनां मे म्हारो जीवण वदळदियो अर एक कुमाणस ओ धरती रो गळयोडो कोढ जिकै री रग रग सू सूगली गिध आवै— कोढियै रा दरसण किया ही घाटो—नाम लियां ही टोटो पण ईं मे आपाणो कांई दोस–विधान सांवरियै रो।

रह रह, अचूंभो आवै, 'देखो इ री सोभी इसी कै पांच पांवडा सू आगै को दीसै नी, पीण्डयां आकतडी सी, पूरो चालीजै नी, खायोडो पूरो पचैनी, कमर लारै निकळ कुरसी हुयोडो— दांत सोध्या ही को लाधैनी— मूंढो विवाड टूटयोडी बारी सो पाधरो पडयो है–खव्वा वैठयोडा टीगरां जियां पीतळ रै बोदै लोटै नै पटक पटक मोच घालदी हुवै, सुणीज ऊँचो, थोडी सी गरमी तो जी अमूजै सास उठै, थोडी सरदी तो सीढ पडै स्सो धूजै—वाह सांवरा कठै जांवतां ईं नै 'नारद मोह' ऊपज्यो है। एक लैर रीस री आवती, अर एक दया री। आं दोना रै बीज बारस रो ही मेळ को है नी पण अवार तो दोनूं वेलै री वैना सी सागै ही–विना ईसकै।

दिनूगै घण्टा डोढ घण्टा दिन चढयां मा आई, 'बोली, वाई रात तो आवण नै घणो ही जी करयो पण विरखा बारो को वटण दियो नी। डरी डापरी तो को हीनी ?'

'नही, कह तो दियो पण जी माय सूं सग सगाट करै हो—क्वाडो तो चौडै आसी आ सोच, म्हारो मूंढो की उतरयोडो हो अर की नीन्द मही लेणै सू डोळा भारी हा।

'की नीन्द तो कम ही आई हुवैली ?'

'रोज जिसी निघडक नीन्द तो खैर कठै पडी ही पण तो ही कीं आई ही।'

ओ मसाणियो आज ओजूं तांई किया सूतो दीसै है ?'

टा नी' मैं होळै सैं मैंया।'

'मा मैंपनी करी गई—हाथ लगायो—डीम काळै ताती राती सो। लेवतो छेडै करण लागी का होळै सै मैंया, 'मन एकर छोड मन, पडयो रैणदे–है ज्यू ही।' पण वा श्राप बादण बटनी ही दवा मानण श्राळी मद री।' गैगजियै नै थोडा छेग कियो–मूंडै कानी देख्यो तो ठाडो छोल्योडी मैंरी सी। गुज्योडी ताती घुट दरदरीज्योडी जाणै रात रो कायो पेप्योडा हुवै। देखतां ही टोसरडी रै गळ पडया ही वा सागण का रईनी।

'सुगनी ?' हा।'

मैं देख्यो लैं भई श्रबै मरी नै मातो माय।—टाकरडो सामी जिरै म फरक नहीं–ह सांवरिया तूं छुडावै तो भलां ही छूटा नहीं तो लार छूटणो मुस्कल है। वण एकर म्हारै सामा दख्या—श्रापरो श्रांख्यां सूं मिला'र मैं श्रांख्या नीची करनी जारूं सास निकळगी–बाटै तो पूरा नहीं।

'म्हारो विरम दैवै य श्रण की न कीं सुचरणी की दीसै थार सांगै श्रर मनै दीसै श्रो श्रापरै कियां नै पूगग्यो—चोखो पण तूं मनै है जिसी वात बता–तनै म्हारो श्रांख्यां री सौगन है। सुगनी ! खास दिना सूं म्हारै मन म एक साळ ही–हूं देखूं, वो श्राज निकळ सी।'

मैं बीनै ही जिसी सा वह सुणाई। पागै कनै, एकै कामली डाडी टूटयो वेलण पडयो हा। दूज कानी सूं सावळ झाल'र बण श्रचाणचकी ही भोड म इसी साची चेपी कै लाही तेडां चाल्योड़ी मटकी झरै ज्यूं झरण लागग्यो। डणियो गरळायो वोभी तरै सूं–श्रोय मार दिया रै–मार मत मन–मैं हाथ झाल लियो, मा श्रो काँई करै–पराद्धीत चढै है नी–छेकड थारो मोटयार है–जावण दे–माफ कर म्हार कैणै सूं। थारै तो श्रो परमेसर है।

'सुगनी। लै तूं इ पतिपरमेसर रो मांचो झाल श्रापा इ न दरडो खोद र मचली समत ही बूरस्या–हूं इ कुमाणस रो मूंढा ही देखणो का चाऊंनी।'

डैणियो एका ही विलताप करै, ओय मारदियो रे मनै मार मत हूँ थारी गोरडी गाय हूँ ।

'नही नही रोवण जोगा तूँ गाय धाय को है नी–गोधो मरै ।'

डैणियै री दसा अर बी री वसवसी देख पत्थर नै ही किरप आवै । म्हारो काळजो एका ही दगदगाट कर । हूँ डरी–आवैनी घडी दो घडी मे ही ओ कठै ही पूरा नही हुज्यावै–आज नही ता काल–ई हाला तो ओ को जीवतो लाग्यो नी मनै । ठाडी वापड री मैं रगदी भोड अण थेथड दिया—आगै तो मुआजी फूठरी घणी ही भळै नींदा मे उठगी । म दो तीन वार क्या—

'थारै पगा पडूँ मावडी ! म्हारै कैणै सू छोडदै तूँ । छेकड थारो ।'

'सुगनी ! इ पापी रै कीडा पडरी । वडै कुहाला मरसी ओ— तू कैवै जिसी बात हूँ समझूँ—लै तनै ह जिसी वताऊँ ।

'तूँ सोचै जिकी बात को है नी ! ओ म्हारो असली मोटयार को है नी भलो ! हूँ विधवा ही–ऊमर पचीस छाईस बरस री हुवैला । म्हारै एक छोरी ही सात आठ वरसा री बी नै बाप थका ही छोटी न ही फेरा दे दिया हा । भागरी बरस तेरै चवदै एक म बण आपा साँम्यो का वा, विधवा हुगी । ओ कुमाणस म्हानै पोटा परी लेयग्यो । लुगाई री जात ही । मूँइ सीख दवणिया कोइ का मिल्यानी । लुगाई री अक्कल एडी म हुवै आ मैं वर दिखाई—रूळना भटक्ता म्ह क्यिा ही अठ आयग्या । छोरी र गम रैग्यो । दो तीन मईना मन की ठा लाग्योनी । ठा लाग्या जद मैं वी नै एक दिन इमी नीरी कै बा एकर वचेत हुगी । दूसर दिन वा कूँउ मे पड'र मरगी । वाकी मन मूळ बात रा की ठा लाग्योनी । इ कुमाणस रा हूँ वैम ही कयो करती ही ओ तो बापरी ठौड हो ।

मैं इनैं इतो ही पूछ्यो 'है ओ, की थोडी घणी थान ही इरी की सीध व'धी हुवैली ?

'जनेऊ री सौगन मनैं इरो भोरैं जितो ही ठा को है नी।' पण पूछता ही इरो मूँढो उतरग्यो हो। खैर बात आई गई। हुणी ही-की रैं सारैं ? जी नैं ध्यावस देणो ही पडै। बी बात नैं आज पनरैं बरस सू घणा हुग्या पण बा बात म्हारैं काळजैं मे श्रोजूँ बिया ही मण्डयोडी है जाणूँ काल ही हुई हुवैं। छोरी रती आळी अर करडी स्याणी ही, तो ही मन बीरो इतो धोखो को आवैनी जितो कैं मूळ बात रो मनैं पग को लाध्योनी। म्हारैं अठै की अर गैर री छाया ही तो को पडन देंवती नी—श्रोजूँ ही तूँ देखै, आ ही बात है, तो फर बात हुई तो कियाँ हुई। जद कद ही छोरी याद आवती तो म्हारैं माथैं मे आ एक ही सवाल चक्कर काटतो पण लाधैं किया।

खैर आँ बाता नैं छाड—बा म्हारी छारी ही—हूँ दोरी सोरी जियाँ हुई हुगी—वा जियाँ मरी मराई मरगी गई बात नैं घोडा ही को नावडै नी पण म्हारैं बी सूँ जादा सुवाव तूँ है बेटी—तन हूँ अजाण हैकारो दिराऊँ। ठाक्र मनैं थारी घणी घणी भोळावण देर गया हा अर जावता पचास रपीया 'यारा—आ बात आज तनैं परकासू हूँ—सायत तन ठा ही को हुवैलो नी। श्रो पौ आळो एढो बी देवता ही म्हानैं पक्डायो हो। एक दिन मैं वाँ नैं कैया थ मनैं रोटी सर करी है—मैं रण्डार लायक कोई काम हुवै तो कया ठाक्राँ हूँ, हूँ जिसी आधी रात नैं हाजर हूँ।'

वाँ अबार तनैं भोळावती वेळा कैयो, डोकरी इ मूँ बैसी म्हारो कीं काम को है नी आ म्हारी बेटी है आ ही समझ्न तूँ।'

मैं कैयो, 'ये सपनैं मे ही मत सक्या भला ही।' आ तो सर भगवान भली करी नहीं जणा हूँ कठै मूँढा घालती।'

अवै हूँ समझी कै बी दिन ओ ही बळै हो कारण 'ज्यारो पड्यो सभाव कै जासी जीव सू' ओखरडै डाँगरै नै कितो ही चाटो चटाओ कदे न कदे तो वी नै ओखर पर ढूक्या सरसी ।

मा बोली, 'आज तनै हूँ जिया मौत मारस्यूँ का मनै वता कै म्हारी छोरी थारै कारण ही मरी ही का नही ।'

डैण को बोल्योनी, एकर टसक्यो अर होळै सैं कैयो 'ओय, मार दियो रे ।'

वण कैयो तनै सात गुना माफ है—थारै हाथ ही लगाऊँ तो ऊभी सूकूँ पण तू आज बीनै काढदै–मनै है जिसी भाखदै आज कदास म्हारो माथो हळको हुवै तो । हूँ बुढी हूगी–पण बा सळी म्हारै माथै मे इसी चुभै जाएँ आज ही गडी हुवै—नही जद हूँ थारै जीवतै रै लापो देस्यूँ । म्हारी छोरी री मैं इसी चि'ता को करीनी तो थारी हूँ करस्यूँ ही क्यां खातर ?'

डोकरे पासो फोरयो–पड्यो पड्यो ही पगा रै हाथ लगावण लागग्यो 'मनै मार मत तूँ कैवै जिको साच है– मनै छोडदै–हूँ गऊँ हूँ थारी ।'

आँ री अै बातां सुण म्हारा तो कान खूस हाथ मे आयग्या, पण सागै सागै म्हारै मन मे जिको डर हो कै मा काईं कैमी–आपरै धणी नै इयां देख'र–बो इया मिटग्यो जिया सिंघ री खाल ओढायोडै गधै पर सूँ कोई खालडी छेड कर बी रो डाळियो चौडै करदै ।

□

/

सात

इ अणआपती अर अचँगी घटना सूँ म्हारै अर मा रै मना मे की फरक को पड्योनी उलटो धणा गैरा हुग्या । डैणियो आखो दिन मचली पर पड्यो रैवतो—अमल दियाडै टावर सो—बिना बतळाया तो बोलतो ही को हो नी, बतळाया पछै ही बोलण म भदरक को ही नी—रोवतो सो बोलतो । सतटूट इसो हुयो जियाँ पाणीभर आळो हुव का कोई बसक पड्या डागर । हूँ बीनै कुडछी खीचडी अर की कढडी री गुटको भलावती पण म्हारै सूँ न तो कदैई चो निजर हुतो अर न मनै आपर मतै कोई चीज भलावण खातर ही कवतो—अपूठो माथ री माथ कटतो । हूँ बीरी खुरचणी सी छुन्योडो ठोठी देखती—अर देखती माथ रै पाटो बाँध्योडो । मन दया आवती–पूछती कढ़ी भलाऊँ ? निजर नीची राख्याँ माथो हिलावतो पण मूँढ सूँ 'नही' को कैवतो नी । लजखाणो पडग्यो हूँ तो आ समझ ही । मन म म्हारै सू सायत ई खातर नाराज हुवैला कै तूँ आवै न म्हारी आ दसा हुवै पण ता ही मैं बीरी सेवा करता कदेई नाक सळ को घात्योनी । बोलती तो हूँ पला ही कम ही अबस सफा ही पाप कटग्यो ।

हूँ अठै इती सोरी ही कै न तो हूँ कठै ही जाणा चावती अर न आ ही चावती कै आ म्हारी मा ही कठै ही जावै आवै। अवार तो अठै जिती सारी ही वीरी तूँ गल्ल ही छोड। लैलावतै खेत रो आणन्द। खेत कानी मूँढो करता ही इयाँ जाणती कै वो बुलावण खातर दौड़'र सामो आवै। गवार, बाजरी, तिल लुळ लुळ सैन करै हा वैगी आव।' मतीरा चाल्या ही हा—लालचुट—मिसरी रा कूँजा लै तूँ। लूण सी चरकी ईं धरती पर इतो मीठो मतीरो—ठाकुरजी री अणमिणती री मैर नही तो काँई समझती हूँ। च्यार बीज खा—मिरणें वाळनै रावती मतीरो—यारा सरबत, सोडा अर सीरा सावू दी भव भारै इ आगै। कारडिया रो मनै इतो कोड का होनी जितो ईं मतीरै रो। सेक सेक सिट्टा माग्ती—बारो तो तूँ स्वाद ही छोड। केस सी मईन काछी गवार री फळया रो साग—केसर सी पीळी बाजरी री रोटी, अर केसर सो पीळो ही लीलाँ रो घी—चक्का सो दही—धरती पर ईं सू बडो इमरत भाग भळै काई हुसी—इसी मौज मैला मैं कठै अर कठै बापडै दई देवतावा नै ही। सपना ही लेवो भला ही। आपणो दियोडो परसाद पावै वैतो।

मा सू ही वेसी ही आ म्हारै खातर। इ खातर ही हूँ चावती कै आ थोड सू थोडो काम करै अर आराम घणै सू घणो। म्हारी जाण म इ बात रो हूँ ध्यान ही मोकळो राखती पण बात उलटी ही—आ वळती चौवती कै म्हारा किसा लाव कोस बणसी अर काम सू किसो आदमी बूढो हुव ईं खातर घणा घणो करती। 'हूँ करूँ हूँ करूँ' तो काम थोडो अर 'तूँ कर तूँ कर' तो काम घणो। इ गुर नै समझै वा दुनियाँ मे सावळ बसै रे। किती रात अर किती भाभरको म्हारै अठ काम ही काँई हो। डोकरी मन री इती सरळ कै पछली बात पैला ही कै देवती के 'म्हारो बेटो गिण भाव वेटी तूँ ही है—हूँ साचूँ क वण दीनानाथ ही दया कर तन अठ भेजी है—म्हारा दिन रसारा ताडावण खातर ही। म्हारै सू वण कोई

चीज लुका'र को राखीती अठै ताइ कै आपरी नहीं बंदरण आळी बात ही म्हारै आगै खरी खरी खोल'र राखदी जिया भगत आपरै भगवान आगै। इ ना'खादे लारै आई जिकै री पिछतावो—मनै घणो ही आवै सुगनी, पण उपाव कांई गढै घलग्यो जिको डीगरो निकळानो ओखो–जे वी दिन आज सी अक्ल हुती तो न फोडा ही पडतो अर न ओ पाप ही बंधतो। हूं कंवती 'भाळी है मा तूं अबै काई पडयी है ई राण्डी रोणे मे—गई बात नैं घोडा ही को नावडै नी, अबै, ता 'राख रही का।'

हूं अठै राजी अर धाप'र राजी ही। अठै ही रैणों चावती इ मे बोलणो ही काई पण रैऊं किसो वापरो ही राज हो। ओजूं जीवण म एक इसो अणजाण मोड बाकी हा जिण बिना हूं समभूं कै म्हारो जीणो ही बिरथा हो—धूड सू ही माडो। एकर भळे हूं थोडी ताळ खातर जीणैं सू धापी ता इसी धापी कै कोई चक्कू छूरियो हुतो तो हूं काळजै में खुभो वी वेळा बठै ही अपघात कर लेंवती पण अगली घडी ही म्हार जीवण रो वहाय कमनासा कानतो रस्ता छाड, पण कानै मुडग्यो अर फेर इसो थिरक थिरक ववण लाग्यो कै मस्ती अर मौज री लैंरा किलोळ करण लागगी—हूं धन्य हुगी म्हारो मानखो जमारो सफळ हुग्यो। वी रै बाद आज तांइ म्हारो जीवण इक धारो वगै।

'जीणें सू एकर इती धापगी कै अपघात करण नै त्यार हुगी, अर फेर घडी एक मे ही इसी राजी कै जीवण ही विस्तारथ समभण लागगी बेटी, इसी कांई बात ही नानी ?' मैं पूछ्यो।

नहीं है तो तूं सुण अर आप ही निरणै करलिए म्हारै कयां ही तो को हुवैनी। एक दिन हूं खेत गयोडी ही रै–सिट्टा अर काकडिया लेवण। पाछी आई जद म देख्यो मा रो मूंडो खासो उदास अर उतरयोडो हो।

"आव मा जीमा–जीम'र काकडियो खा,—खा भलां ही एक ही खीरी, पण खा जरूर। खीर काकडियो है–सोरम तो लै तूं–मीठो इसो

निकळसी कै चासणी ही काँई करै इ आगै—सिट्टा दोपारै मोरस्या' हूँ बोली।

'तूँ ही जीमलै सुगनी—मनै तो भूखडी माडी ही है–भा सी तो, पद्ध ही क्वो दो क्वा ले लेसूँ। काया नै भाडो देणो है–कद ही द्यो भलाँ ही।'

'हणै हूँ गई जद तूँ बोली, वैगी आए, दही सीचडो जीमस्याँ–भूख आज अकरी लाग्याडी है अर अवै तूँ कँवै भूख माडी ही है–इती ताळ म ही थारै काँइ हुग्यो ?'

'बेटी काँइ बताऊँ ? दीसै म्हारा दिन धाप'र, माडा आयग्या। भाग नै म्हारै सू ईसको हुग्यो। हूँ तनै देख देख जीऊँ अर आछी तरै सू जाणूँ कै तै आयाँ म्हारो नुँवो जमारो सुरु हुयो है।

तूँ भाग रेखा सी म्हारै आई है, आ विधाता नै दाय को आई दीस नी–काँईं ठा तूँ बीसू धिगाणो कर'र आई हुवै अर मैं बी री मरजी बिना तनै अठै राखली हुवैं। ईं खातर ही बी नै ईसको हुग्यो म्हारै सू। बो मौको देखर वदळो लेणो चावै म्हारै सू इ बूढापै मे। नुँइ कडक सी तूँ मन किती आछी लागै हूँ ही जाणूँ इ नै।

'तो ही वतावैनी, वात काँईं हुई फे'र ?'

'फेर करमाँ रो है बाई ! थारै अवार गया पछै एक सवार आयो हो, थाणै रो, बोल्यो थारै अठै एक कोई लुगाई आयोडी बतावै ?'

'जिको ?'

लारै, बीरो कोई धाडवी सागै मेळ जोळ बतावै'—इसी कण ही थाण मे रपोट दी है।'

'तो अवै काँइ हुसी ?'

'हुवण नैं वांई है–थाणैदार की ययान लसी–तत देखसी तो तँकीरात करसी पछै कुण जाणै वाँई हुव भर इयाँ ही वूडमूड है जणास वागदा रा पेटा पूरा कर छाड देसी—थारै घरे पाछी भ्रा ऊभमी ।

'की मार कूट तो की हुवैनी कँवर सा'व ?' मैं पूछ्यो ।

'नही ए डोकरी ! इती क्या डरै ? एकर हाजर हुणो जरूरी है फर देखस्या । किसी घड बैठै ? मौका पडसी तो की थारी मदद कर देस्याँ घणी बाजगी तो काई सुपारस ढू ढस्या–सुपारस सू काम जिता सर्फ पड वितो रुपियै पइसै सू वा पडनी म्हारो नाम रूप सिध ह भलो !

हूँ वी नै रुपियो देवण लागी—को लियो नी बण बोल्या, 'गली ! पी भ्राळी नैं देऊँ का लेऊँ ।'

भ्रादमी तो भलेरो दीसै हो वाई पछै करमाँ री वात ! भ्रव वेटी कुण जाणैं काँई हुसी–राज म तो ईला ही वळै भ्रर सूका ही । ह हडमान वावा ! हे रूणेचै राव ! हे कोडाण रा धणी ! ह पावू राटोड ! हे देसणोक रो घिरियाणी, इसा बण किता ही भ्रौर नाम लिया वाली हूँ घरे भ्रावती पाण थारै नारळ वधारसू–जम्भो जागण करसू म्हारा बाबलिया–लोटी ढाळसू फेरी देसू थारी, म्हानैं फोडा नही पडै–थे सकड हा सगळा ।

हूँ बोली मा, नारळ एक दइ देवता रै तो बोल, रिछपाळ किसो किसो जणो करसी ?'

'वाई घणो लोठो काम है–एक सूँ पार पडै भ्रर न ही पडै तो, पछ किसीक हुवै । देवता पाँच सात भेळा हुयोडा भ्राछा ही है सुधारो नही तो बिगाडो तो पक्कायत को करनी । कँवतां भ्रापणो काँई लाग्यो ? घणो कैयो मिनख ही मानलिया कर है—भ्र ता देवता है ।

हुवो हुवाग्रो की पण, इ रै हिडदै री सरळता किती ऊँची ग्रर ग्रापती है ग्रर कितो श्रोपतो है म्हारै ऊपर इ रो स्नेव। मैं कैया, 'मा! जिका जिका पाणी सावरियो पासी, वै पीणा तो पडसी—जोर कीनै करस्यां ग्रर जोर करस्या जावण देसी ही कुण ?'

मा बोली 'एकली तो हूँ तनै को भेजूँनी—म्हारो जी को धापै नी। मार्गै हूँ ग्राप चालसू।

म्हे रोटी टुकडो खायो। मनमे सोच मनै ही मोकळो हो—इ खातर रोटी मनै ही मन—बायरी ही भाई। मा सफा ही, ग्राधी रोटडी मसां खाई—गवारफळी रो साग ग्रर की दही रो सबडको बस इत्तो ही।

म्हे दोनूँ टुरी उपाळी ही। हूँ म्हारै सावरियै नै ग्रा ही ग्ररदास करै ही कै हे दीनानाथ ग्रावै नी कठै ही तू म्हारा, जीवण रै पैलडै पाना जिस्या ही नु वै सिरे सू भळे सुरू करदै हूँ तो ग्रागला सू ही गळै ताई धापी बैठी हू—ग्रबै तो दया ही राखे म्हारा दातार! हूँ तीन च्यार वजी याणै पूगी। सात ग्राठ कोस हो ग्रठै सू। जापरी बैठगी। थाणैदार मनै बुलाई। म्हारै कानी मारणै भैसै री सी ग्रॉख काढ'र बोल्यो, बारै बैठ ग्रबार एकर।' म्हे दोनूँ बारै बैठगी—एक जूनो जाळ ही बी नीचै। दो तीन दफै थाणैदार बारै ग्रायो—म्हारै कानी देख'र पाछो कमरै म बडग्यो। म्हारै मन मे की सी बडन लागग्यो—लै भई जीवडा ग्राज मारा बूटा वरसी जिकै मैं फरक नही—ग्रोपरी जाग्या ग्रर ग्रजाण माणस। हेलो ही कीनै करस्यां।

सिंझ्या पडगी। को हा कैया न को, ना। बैठी बठी ग्राखती हुगी ग्रर हरूँ फरूँ न्यारी। इतै म ही एक ग्रादमी ग्रायो।

'चाल थाणदार जी बुलाव—ब्यान लसी।

डोकरी बारै बैठगी—हूँ बी लारै टुरगी। 'बी कमरै म जापरी,' इता कह'र बो तो ईनै बीनै हुग्यो। हूँ गई—डरती डरती सी। सभको सा

कमरिया निवार री एक ढोलियो जिकै पर थाणैदार बैठो हो । करड़ावरी बट दियोड़ी बडी बडी मूंछ्या, जिणां पर चावो तो मीगणा ठैरा सका । माय मे बेस साव भाव । हा जिना ही बाना सूं दो दो आंगळ ऊपर विच मे चाँद कारी बूलडती रै पीन्दै सी का इयां, जियां फुग्कस री बोदी बाड सू घिरयाड़ा कोई वाडोटियो हुवै । नाक छोटी टीण्डसी सो को ही जाणैं चेप र मेल्योडो हुवै । आंख्या छोटयोडै छोटै काचर री कपली सी गोळ गोळ मिनख री गत म ही का हो नी–पाडै घटो मिनख कैंणो चाईज वीं नै।

मनै दारू री बास आई वण पी राखी दीसैं ही । सिराणै रै लार आळै मे एक बोतल भळै पडी दीसै ही । हू डरी, वाह् भगवान अवकै चोख एढै सर पुगाई, बस ओ ही घटतो हो ! बीजळी जगै ही । मैं म्हार जीवण मे पैली वार ही बीजळी देखी । बठै और कोई को हो नी–खाली म्हू ही दोवा दाय हा । डरती हू हाथ जोड'र खडी हुगी ।

'कोई जात है थारी ?'

'सुथारी ।'

'नाम ?'

सुगनी कवै मनै ।'

पता कठै रैवती ?'

'पौ पर ।'

पौ पर तो अवार आई है–पैलां कठै ही–साची वता नेही तो बैंत सूं मालस्मो उधेड नांखा सू, थाणैदार खासो जोर सू बोल्यो ।

हूं घबराईजगी–मैं सू राई ताळ की बोलीज्या नी । आप ही बो बोल्यो, 'खर कोई बात 'नी—अठीनै आव हूं खड़ी रई ही जिया ही । 'को सुण्योनी ? बो बारणा मोढ़ाळ ।'

बो तो दारू खोरो, वदमास अर विभचारी हो ही पण मनै ही वण रूळेट रडार ही समझ राखी ही । वो हिरयोडो हो अर खासै दिना सूं इ दव पडयोडो हो । हूँ विया ही खडी रही—टस सू मस को हुई नी । खडी-खडी पगा सू जमी कुचरू । सोच्यो म्हारो जे बापू हुतो तो स्वाद आवतो थाणैदारजी नै थाणैदारी रो । मुर्चो पकड'र एकर हाथ खीच्यो, बोल्यो—'नूं ईं दीसै-जणा ही सकै, लै जळदी कर ।' कळाई पर बीरो काळो करडो हाथ इस्यो पडयो जाणै चंदण री डांडी रै च्यारां खानी रीसा वळतै कोई वासक एकर आंटो दियो हुवै । ढळक-ढळक आंसू पडै हूँ बसबसीजूं एकाही, काळजो धक्, धक् धूजूं त्यारी ।

'डर मत—नही तो दिनूगै हवालात मे नांख देस्यूं । धणी करै तो अबार ही थाकं मे पूर दाबूं ? सोचलै अवार थकी ।'

'हे सांवरिया ! अवै किसीक हुई । मनै तूं अै ही चिरत दिखासी का की मोर ही । हूँ बिया ही खडी बसबसीजूं अण गिण आंसूं पडै पण बोलीज नही ।, अबकै वण भळे मुरचै कानी हाथ करयो हूँ की पाछी सिरकगी । काइ सोचै'—ऊभो हुयो बारणो ढकण खातर । 'हे सावरा' ! म्हार माणस मे गूंज्यो अर मांय रो मांय ही रैग्यो । जिया गज री सूंड खाली तिल भर ही बारै वची—बी सूं ही माडो हाल म्हारो हो—बी रो वारणो आढाळनो हो—अर बारै सू एक नात री लागणी ही—भडभड वारणा खुल्यो ही । हूँ चमकी । थाणैदार सागै ही सैंतरो वतरो हुग्यो—जिया वी पर बीजळी पडगी हुवै । राम निकळयोडो सो आंख्या फाडतो ही रयग्यो ।

मैं देख्यो कै—एक लुगाई बीस बाईस साल री । गाऊ वरणो रग—गोर सी फूठरी । आंख्यां मे नूर बरसै । चैरो चमचमाट करै—चौनणै म ओर ही पणो । धोळी धोती पैरण नै । आंख्या पर चश्मो जाणै आंख्या रा तेज एक मागै हमास्त सू भलै नही ६ खातर ही आडा काच दे राख्या

हुवै । मैं देख्यो आ कोई अप्सरा है–का काई नाग कन्या का साख्यात भगवती रो औतार । आ अबार ई किवाड़ मे सू निकळी है का ई रै लारै लुक्योड़ी बैठी ही । 'वाह दीनानाथ थ्रो काँई साग है थारी माया तूँ ही जाणै—म्हारै तो की समझ मे आई नी ।'

हूँ तो वठै है जिया ही खडी ही—रोणा भर वसबसीजणो बियाँ ही ।

बा बाली, 'थारो चेतो धरे है का नही । था नै अठै रैत री रिछपाळ खातर बैठा राख्या है का की री इज्जत आबरू लूँटण नै । हाल ताँई ओखर करता को धाप्यानी थे—किती बार थाँ नैं भिस्टधा है चोपड्य घडे ही छाट को लागैनी थारै—थे मरतो ज्यायता ढकणी मे नाक डुबोर। हूँ जाऊँ अबार ही अरज करण राजमाता सा कनै—पेर देख्या काँई बित थारै म ।

थाणेदारजी रो नसो गयो लारली गळी । बोल्यो, पग झालूँ थारा–अबकै तो म्हारो चेतो निकळग्यो जे अबकै सुणल तो जचै जियाँ करे। जान बगस—अबकै नाँव ही लूँ तो तिलाक ।

हूँ की को समझीनी । बी री लुगाई तो नही हुणी चईज । थाणेदार तो पचास र अडै गड हुणो चाईजै हो । हूँ बठै ही खडी वसबसीजूँ बिया ही ।

'रो मत बैनडी, आ म्हारै सागै ।" मनै अर मा नै आपर घर लेयगी–बगी पर । म्हांन जिमाई—रात भर म्हे स्सोरी सूती रई । मा नै मैं की को कैयोनी । दिनूग बाई सा आया अर म्हारै सामन मा नै कयो, "माजी, हूँ मइन दो मईना खातर मथरा बिन्दरावन जासू । म्हारै साग एक लुगाई चाईज । सागै म्हारा भाई हुसी–म्हारा काकोसा, हूँ अर आ म्हारी बन । ओवता पाण थ कैस्यो ता हूँ खुद थार कनै पुगा देस्यूँ ।'

मा बोली, 'बाईसा ! ग्रागली जाणै–म्हारै आवै भला ही ले जावो तीरथ बरत करती रै हूँ ग्राडी दे, पापरी भागण क्यों खातर बणूँ ?'

'तो ठीक है हुग्रा—थे जा ग्रो, ग्रातो राजी ही हू ।'

हूँ मा नै पुगावण खातर काई दूर वारै ग्राई । पगा पडी, मा री दूबळी ग्रांख्या भरीजगी–फीस पडी एका ही । बोली, 'सु गनी ग्रागै को बोलीज्यो नी ।

हूँ बाली, 'मा नैंचो राख, ईं रै हाथा मे म्हारो जीवण जोखम मे जरूर ही को पडैनी—ग्रा महामाया ही समझलै तूँ–ईं रो तो नाव लिया ही कष्ट कटै । भरोसो राख ग्रांवता पाण हूँ थारै कन सीधी ग्राऊँ हूँ चावै ग्रांधी ग्रावै ग्रर चावै ग्रोळा बरसै । जीवता जी तनै को छोडूँ नी, तूँ ग्रा मान'र चाल ।'

पण सुगनी ! काई ठा हूँ, इतै जीवती लाधूँ का नही, कुण जाण ? जा भला ही सुगनी ! पण म्हारो काळजो गवाही को दै नी—बा रिंघ रोही मे तूँ म्हारी ग्रांख्या री सोभी ही—पछै, थारी खुमी है ।'

'मा ! इती कमजोरी काईं लावै, हू थारी भेजी जाऊँ, कै तो जा'र नटियाऊँ ?'

'ग्रब नट्यां बात माडी लागसी बाई ! खैर देखी लागसी म्हारी भावी—हुसी जियां ही चोखी—जाइया एकर ।'

ग्रांख्या मे ग्रांसूँ टेरती बा गई, एक सवार सागै ।

हूँ न्हाई धोई । मनै परण नै गाभा दे दिया मुँवा । मनै ऊपर एक महल बतायो—हूँ गई परी । झाडू काढचो । वेल बूँटा वाळ्योडी एक ऊनी दरी बिछाई पडी ही । सामनै एक मोटो काच टाग्योडो हो । महल री

भीता अर छात पर भांत मँतीला चितरामं कोरयोडा । बीजळी रा लट्टू, जाग्या जाग्या, काच रा झाड लटकै हा–केई फोटू टाग्योडा हा, जिका मे घणाखरा किसन राधका अर वारी लीलावा रा । उवडघुवड खेलत ग्वाळिया रा—परियाँ गाया चरै–अर वनै जमना बगै बधीड करती–कदम रा दिरखत जिका नीचै दो च्यार गायाँ बैठी उगाळी सारती सी का आख्या मीची । दो फोटू मीराँ ग हा खडताळ लिया गावती रा–वडा भाव भरया । केई फोटवा म हिरियाळी, पाड, नदी झरणा रो रूप इसो निखरयो, जाणै देखती ही रहूँ । फोटू सै नाथ–द्वारै रा हा हाथ रा बण्योडा वडा सोणा अर साँतरा ।

इतो बडो काच काई, इसो महल मैं तो म्हारी ऊमर मे ग्रो पैली दफ ही देख्यो । बाई सा नीचै न्हावा धोई कर हा—हूँ महल नै रह रह निरखै ही । मैं काच कानी जायो । म्हारो मूँढो देख्यो—गोरो गुट बान बैठयोडी रो सो । छाती रो उभार खासो । मा वनै ग्राया पछै मूँढो खासो चिकण लागग्यो । दाँत दरूया उजळा बच । बिना वणाव ही सरूप सावळ दीस्यो—मनै ही एकर म्हारै सरप रो मोद हुयो रे । तूँ सोचतो हुसी रे—नानी ग्राज इया किया वैरी बाता करै म्हारै सामनै । तूँ विराट रो मूँढो है रे ईं खातर—जे तैं सूँ थोडी घणी ही लुकोऊँ तो म्हारै किया नै पूगूँ । ग्रो म्हारै मन रो मैल है र, जिकै नै हूँ ग्राज विराट् रै सामन काढ काढ बारै नाँखूँ भलो—'सुणै है नी तूँ ?'

'हाँ नानी ।'

पण दूसरै ही छण, म्हारो ग्रो रूप मनै साप सा लाग्या । हूँ काच सामी ऊभी हुय, होळै होळै बोली, 'म्हारा साँवरिया ! 'कह' ग्रवै किताक पाणी तूँ ग्रौर पासी ? ग्रा म्हारो सरीर थारो मिन्दर है हूँ तो तनै सूँप चूकी—म्हारै जी सू । फेर ईं रै किम्स खूणै खचूण मे कोई मळवाई रंगी, जिकै री दुरगध मू मनै घडी घडी फोडा पडै । ग्रवै हूँ ईं मू काठी धापगी ।

साचे ही कुओ खाड करस्यूँ । रोजीनैं, अै वेवा मैं सू को देखीजैं नी । का ता तूँ मनैं बूढापो वगम, का वाळदै, खाडी लूली करदै आगडी ही, जिको म्हारा दिन टूटै जिका दिन दारा भळाँ ही टूटो पण करम बाँधण आळा तो को हुव नी । आयैं दिन तो म्हारी फजीती मत करा । थारैं आसरैं रै आळैं मे बैठी हूँ बी रा तिणकला काढ काढ मनैं वे आसरैं करू है तो बा कह ।'

'काँई कँवै है बैनडी ?' होळैं सै आवाज आई–मैं चमक्र लारैं देख्यो तो बाईसा । सायत बण म्हारी सगळी वाता सुणली हुवैं मनैं तो ध्यान का हो नी । म्हारो मूँडो–धोळो फक हुग्यो एकर भेंप मिटावण खातर बोली, 'की नहीं बाईसा ।'

"गली वीरी चीज नैं—बीर मिन्दर नैं मिनख रो तो माजनो ही काँइ काळ ही बी नैं हाथ को घाल सकैनी । बी कनैं पूगण खातर केई ऊचा नीचा ढिस्सा पार तो करणा ही पडै–मीरौं मे किसी को बीती ही नी गूँगी । पण सूँप्या पछै ताळ कितीक लागी ? काळ री जाग्या साळगराम ही साध्यो अर काटाँ री जाग्याँ सोरम रा सोणा फुलडा ही । काँई ठा तूँ ही, बिया ही कोई रस्तो पार करती हुवैं ? केठा करलिया हुवैं–का एकाध ढिस्सो ही बाकी हुवैं, पण गा हूँ तनैं आज कँऊँ कैं, है तूँ अबैं नैंडी ही । थारो साँवरिया अबैं तैसूँ अळगो को रयोनी । म्हारैं जचैं है कै थारो घणखरो काट थारैं साँवरियैं सिवलीगर काट दियो ।"

हूँ सुणती रही । 'देख, ओ थाणैंदार म्हारो पिता है । म्हारी मा नैं भण नहीं देणा है जिता दुख देदे आधी ऊमर मे ही आगैं भेजनी । ओ म्हारा डेरो है । काको सा है दो छोटा भाई है–पढै । दरवार री माजी 'राजमाता' म्हारी दादी सा पर बडा मैरवान है ईं खातर ही म्हारैं पिता नैं काम चलाऊ पढयोडा हू तो ही थाणैंदार वणा राख्यो है । वैं चोरी दावैं ओसर करता हुसी पण म्हारैं सू डरैं, कारण हूँ राजमाता ताँई पूगूं ।

मनै ठा नाग्यो कै ईं ढग सूं थाणे मे दो लुगाई आई है। बापडी वठी वैठी आखती हुगी—बां नै ग्रोजूं को छोडी नी, कुण जाणैं काईं हुवै वां मार्गै ? हूं इत्तै मे ही समझगी अर बी बेळा ही टुरगी। बिना बीरै हुकम ही, की हुवै गुंगी। अबै तूं बता सावरियो थारै नैंडो हुयो का अळगो ?

नैंडो वाई सा, घणो ही नैंडो। दोरा नहीं हुवो तो एक बात पूछूं वाईसा ?'

'एक नही, दो पूछ भला ही ?'

'ग्रै लाबा चौडा मैल माळिया जठै, हरचन्द द्वारा लाग्योडा है बा नै थे डेरो ही बताग्रो ? डेरो तो वाई सा, सैंस्या साटिया रो हुवै ?'

मुलक्या वैं। मैं देग्यो मन सावळ पूछणा को ग्रायोनी। म्हारो की मूं उतरग्यो। फेर वाल्या, गूंगी, ग्रा ही नही, राजा वादस्या जिता ईं धरती पर है, सगळा रा डेरा ही है ग्रठै, घर की रो ही नही। ग्राज ग्रठ, कुण जाणैं काल कठै ? डेरै म भळे क्सर है ? डेरां मे रैव जिका सैंसी साटिया हुवै तो सगळै मानख नै सैंसी साटिया ही तूं समझ भला ही किसो फरक पडै ?'

'समझगी,—ग्रर ग्रापरो सासरो वाई सा ?'

भळे मुळक्या एकर वै। 'सासरा म्हारो ग्रळगो, घणो ग्रळगो है ए, ग्रर नैंडो इत्तो कै, ग्रठै पीरै मे ही सासरो।'

'हूं तो कीं समझीनी बाई सा ?'

'धणी म्हारो सांवळ सा है ए। सासरो हरदम साग ही रवै का नही ?' मैं सिर हला'र हैंकारा भर दियो। मैं भळे कैवण लाग्या, 'एकर पठै कण ही धिंगाणियो धणी लगायो हो ए। बो ठडै दिना ही गया बापडा। ग्रमर सिंघ क्वता लोग बी नैं, पण एक फेरा री रात ही बी सू तो सावळ को नीसरी नी। इस सिंघा सागै ग्रापणी डार बाळन न लागै

ही अर साची पूछं तो म्हारो मन इसै भडमला सूं वी दिन सू ही फाटग्यो। मनै बो कदेई चेतै ही को आवैनी । विपाया चेडा तूं जाणै किताक ठैरे ?'

सात पूणी सात री वेळा ही । गोखां मांखर मधरी मधरी पून आवै ही । म्हारो मन अपार हरख मे डूब्योडो हो । वाह् सावरा, कठै ला परा भेटा कराया है तै है तो तूं वडो बेपरवा, पण है म्हारै पर बडो मैरवान आ म्हारै सोळै आना जचगी ।

'ठीक है तो, तूं अठै ही वैठी रह, हूं थोडी पाठ पूजा करलूं ।' हूं ही जिया ही वैठी रही । वा उठी । छाटी सी एक उठाऊ अलमारी खोली । अलमारी क्यारी, मनै ग्याने बो चालतो फिरतो एक छोटो सो मिन्दर हो । एक फोटू हो—स्याम सुन्दर री । चादी रै फूठरै फ्रेम मे मॅढयोडा । बसी होठा कनै । वडी-वडी आंख्या कमल सी कोरयोडी । एक पग रै ताण । कदम रै नीचै । डाळा पर छोटा छोटा भोळा पछी, जाणूं वसी सुणता हुव वडै ध्यान सू । ऊपर गर गम्भीर वळायण, जाणू बादळ च्यारा कानी सू खाथा-खाथा आ आ, एकै जाग्या भेळा हुवै—कुण जाणै वसी सुणन खातर का स्याम पर बरसण रै कोड मे ? कनै ही जमना । परियां गायां चौकन्नी सी जाणूं बार काना मे की भणक पडगी हुवै बसी री, केई उगाळी सारती सी कनै ही वैठी । आसै पासै रग विरगा फूल खिल्योडा । वां फूला मांकर एक नाग आवतो सो दीसै, बसी रा सुर सुण जाणूं काळ सॅदे आवतो हुवै इं नै । एक छाटो सो हिरणियो । मधरी पून म हालतै पीताम्बर रो पल्लो वी रै लिलाड सू लागै । कोरणियै चितराम काइ कारचो कूंची सू जादू कोर दियो । कसर ही तो एक मूंढै सूं बोलण री । कित्ती जुगत अर सावळ चेत हुय बण कूंची फेरी है । जाणूं देखती रहूं बी कानी । अबै ही बोल्यो, अबै ही टेर कानां मे पडी, इयां लागतो हो बा मनै । बी वेळा तांइ मैं इसो चितराम सपनै म ही को देख्यो हो नी बस धोती जोडा, का लट्टू दोवटी र थाना पर चिप्योडा चितराम ही म्हारी माळ म दो च्यार

चेप्योडा हा अर व म्हानैं घणा ही आछा लागता । इण्डिया ही र'स हो म्हारैं ।

बी रैं आगैं दा वडी वडी अगरवती रेई अर धूप दानी मे रोपदी।

घी सूं चांदी रो दियो सँजोयो । मैं ल सुगन्ध सू भरीजग्यो । मकार री लपट उठ री । म्हारो नाक जिको आंज ताइ दारू री दुरगन्ध, मसाणा री मुरदाण सूं दटघोडो हा, अवार खुलग्यो अर सुगन्ध सूं सचनण हुग्यो ।

खूणै म मखमल री खोळी चढयोडी कोई चीज पडी ही मेज माथैं। खोळी उतारी, मैं देख्यो कोई मोटो तँदूरो हुवैतो पण पछै टा लाग्यो कै आ सितार वज ।

वा बैठगी तँदूरै आळै जियाँ डाँडी नैं काळजैं रैं चिपार । जद बी री आँगळी वी पर चाली म्हारैं काळजै री सगळी कोरा, जिकी आज ताईं जगत रैं कोभैं भूंडै कारैं सू बेचेत सी पडी ही एकै सागैं ही भणभणा उठी । वा मे सास वावडग्यो । ज्यूं ज्यूं वी री आँगळयाँ तारां पर फिरी, म्हारी चेतना रो इसो कोई खूणा अळगा अर अछूतो को रयोनी, जिको आणन्द रैं फवारिया सू ईलो नहीं हुग्यो हुवै। आँगळयाँ और लाथी हुई अर बी रैं पतील मीटै, महीन कण्ठाँ सू अवाज नीसळी, महल मे आणन्द रा बादळ ही औसरग्या समभ तूं । हूं सोचूं म्हारैं भो भो रा काळमिस आज धुपग्या । पापा रैं ओग सू भूळस्योडी, मैं पापण रो रूं रूं हियाळै सो टण्डा टीप हुग्यो । मैं म नुवा जमारो बापरग्यो ।

जियाँ कुसस्कारां मे पडयोडो जीव, अनेक जियाजूण भोग, कदेई सतसग र पुनपरताप प्रभुलोक म परवेस करैं वा ही हाल हो म्हारो । आई तो कैंद भोगण अर मिलग्यो राजस ।

मनै इया लाग्यो जाणूं ईं री आंगळयां मे ही कोई जादू है अै ही सागी तार अवार मरघोडा सा वेचेत पडया हा । ईं री आंगळया लागता ही आरा प्राण इयां बावडग्या जियां इमरत छिडक्ता ही मुरदै रा सास । अर भाग रा बोलै किस्याक मीठा । इ रै आगळयां रै पोरवां सू काई ठा किनीक प्राणा री पून नीसरै, आ जठै आगळी लगावै तार बठै सू ही बोल उठै । जादू ही काई करै वी आगै ? का हूं देखूं सितार री रीढ बीरै काळजै सू चिप्याडी ही, बठै स्यूं बा वी नै प्राण पोखती हुवै अर बी रो तार तार बोलतो हुवै । कुण जाणै काई बात ही, हूं तो अण समझ सी बैठी ही बी वेळा । एक हाथ सूं प्राण अर दूजै सू बाणी देंवती तारा नै—हाथा मे ही करामात लागी मन ।

धीरै धीरै वा भाव समन्दर मे डूवण लागी । वा आपनै भूलण लागगी, हूं जाणूं बी नै ओ ठा को हो नी कै हूं ही वी कनै बैठी हूं । कदेई वीं रै मूंढै कांनी देखूं अर कदेई बी री आंगळया कानी । मनै लागी जाणूं बा कोई नाग क्या है । वाजतां बी रै कण्ठां सूं कोयल सू ही जादा मीठी अर तारा सू ही घणी पतील सुर लैरी फूटी —

'चाला वाही देस प्रीतम, पावा चाला वाही देस,
कहो कसूमल साडी रगावा कहो तो भगवा भेस
कहो तो मोतियन माग भरावां, कहो छिटकावां केस
मीरा के प्रभु गिरघर नागर, सुणज्यो विडद नरेस ।

* साचेली इ नै वस री चिन्त्या का ह नी । गाभा रा काई, आछा भूंडा है जिसा ही ओढूं, पण तूं मिलणो चाईजै । सवारी री लोड कोनै पगा म फाला हुवै तो पडया हुवो, हूं देखूं कदेई आ भाग'र जल्दर वीं

---

* फाडि पुटोला धज करूं, कामडली पहराऊं
जिहि जिहि भेषा हरि मिलै, सोइ सोइ भेष कराऊं । (कबीर)

प्रापर प्रीतम सू भेट करसी, करली हे तो ही सुरा जाऊँ, गूँगे रो गुड है बोतो।

वी र कँठा मे जिको लोच अर मिठास ही थी सूँ इयाँ जचो म्हार क इ रै कँठा आगै मौ सौ सितार फीको है। इ री होड वै तार बापडा कद कर इ रा घाल्योडा सास ही तो वै लेवै। किता सुरीला हा कँठ वीरा ? मनै वैगो ही तो को आवैनी अर न लिखणा ही। वा रस म डूब्योडो अर हूँ गूँगी—भाव जीभ वायरी। मेळ सफा माडो को होनी। वारो फाडयाँ—वागद मे काम्योडी सी बैठी ही हूँ। ठा नहीं, वी वेळा मन सा.म आवै हो का नहीं। एकर तार बन्द हुग्या—एक आध मिण्ट खातर जद मन ठा लाग्यो कँ हूँ जीवती हूँ। कमरै मैं टगी फाटुवाँ मन इयाँ लागी जाणू व सगळी एका ही वाइसा रै मूँढ सामी झाक, भई कदास भळे की आ गाव नी। मनै इयाँ लाग्यो जिया ईलीड म पडी सिसक्ती कुत्ती नै कण ही ठरड परी, जेठ रै वळनै तावडियै री ताती धूड म नाखदी हुवै।

> तारा पर भळै आगळयाँ दौडन लागी बियाँ ही। गावण लागी—
> दरस बिण दुखण लाग नैण !
> जबके तुम बिछुरे प्रभु मोरे कबहु न पायो चैण ॥
> सबद सुणत मोरी छतियाँ काँपे, मीठे मीठे बैण।
> कल न परत पल हरि मग जोवत भई छमासी रैण ॥
> बिरह कथा कासूँ कहूँ सजनी बहगई करवत ऐण।
> मीराँ के प्रभु कवर मिलोगे दुख मेटण सुख दण ॥

हूँ एकर भळै बिरमानन्द म डूबगी। अबकै मैं एक और चीज देखी, बडी ही बिलच्छण। हूँ वी रै मूँढ सामी जोवै ही,—आँख्या फाट्योडी सा। वहरो वी र ही बाकै कानी जोवतो हुव जियाँ। अळसायोडी हिरणी री सी वी री अध खुल्याडी आँख्या सू टप टप आँसू पड हा, जाणू वरसत स्वाती नखत म दो अध खिल्यै कमला सूँ उजळा अणमोल कण

टपकता हुवै ज्याही । साचेली, ई री आँख्यां पाणी सूं भरी है तो ही तिस्सी है अर दरसरण बिना इसी दूखे है कै आ रो रो आंधी हुसी । तीखी करोत चालगी है इ रै काळजै पर अर चाले ही जावै । जाणूं समन्दर मे लाय लागी है वो सगळो ई री आंख्या मारफत नीकळसी । डूब्योडै नै जीवता अर रोवतै नै राजी मैं आज ही देख्यो। केसा री दो एक लट बी रै गोरै चिलकतै लिलाड पर इयां लागै ही जाणूं सरद पूनम रै चाँद माथै सजळ स्याम, मेघरी कोई दो लीकटी आयगी हुवै । मैं सोच्यो म्हारा सावरिया मिनख देही हुवै तो आ ही, बाकी तो जूरण पूरी करणी है । आ दीखत म मिनखा देही हुवा भलां ही, पण है आ काई सरग री चीज ही । अठै तो आ रस्तो भूल'र आयोडी है । कुण जाणै मनै सुणावण खातर ही आ इत्ता दिन अठै रुक्योडी हुवै, कांइ ठा धरती नै सरग बणावण नै आयोडी है आ । जो ही हुवै, आज म्हारो जीवण तो किरतारथ हुग्यो । मैं म्हारै मन मे ही कैयो, 'लै सांवरा अबै भला ही अबार ही मारदे तू'—अर मारदै सौख सू चू ही करू तो धिरकार है मनै । जीवण रो लाहो तो मैं लूट ही लियो । चितामणि ही काइ करै ईं सुख आगै ।

एक बात म्हारै जी म उठी कै हूं अबै म्हारी जाग्या जास्यूं जद एक बधिया फोटू—बाई सा कनै सू लेजासू वी रै आगै बैठपरी इसो मीठो तो गा नही सकू तो कांई—रोस्यूं ता जरूर । रोवती नै मनै कुण पालै अर की कनै सू मनै सीखणो ? पण प्रभु आगै रोणो, गाणै सू घणो दोरो हुवै आ मनै ठा को ही नी ।

'देख आ है बा फोटू—हूं लाई जिकी ।'

'देखली नानी, अर रोजीनै ही देखूं, फोटू कांइ चीज है जीभ री ही कसर है खाली ।'

"धत्तथारी, भोजूं की समझ्योनी, जीभ तो आपांन आपणी तरफ सू घालणी पडै । कोरणियै रो कांइ दोस ? ईं खातर ही तो 'मूरतीपूजा

सगळा सूं चोरी है। जडनैं पिघाळनो काई सैंज काम है। निरगुण म लागै काईं है। माटी मोटी कोरी वाता भला ही छमरो।"

"नानी अठै तोडै म्हारी पूग को ही नीं–अबै हूं समझ्यो। वात न टार आगीनै, उमगनैं आनन्द रा पग धीमा मत घाल।"

बाई सा उठ्या। सितार ही जिमा ही राखदी। अलमारी बन्द करदी। मनै बोल्या, 'तूं आजूं अठै ही बैठी है। हूं तो भूलही गी ता।

'मैं वा रै पगा र हाथ लगायो। बोल्या, 'आ काईं करै तूं ?'

हूं बोली, म्हारै कुकरमा मे कठै ही एक मोटो पुन लुकयोडो हो वा आज औसर देन उघडग्यो। बी रै परताप हूं अबार सरग म ही का'और कठै ही कुण जाणैं बाकी ही कोई इसी जाग्या जठै रस ही रस बरसै हो। हूं जुग जुग री तिस्सी, जगन री लाय सूं मुनळीज्याडी भीजै ही—जाणूं भीजती ही रहूं। बडा आणन्द आवै हो। जाणूं कठै ही कळपबिरछ री गैरी सीतळ निरमळ छाया मे ही इसा सुख को मिलतो हूसी नीं। थारो ओ बाजा बन्द हुता ही ठा लाग्या कै हूं ई सागण धरती पर ही भास लूं—वो पुन तो इसो ही हो दीसै। अबै ? राम जाण पण हूं किरतारथ हूगी–इ म मीन मख नै सरी कठै ?' बाई सा मन्द मन्द मुस्काया, बोल्या, 'प्रभु सगळै है अर सगळै ही सरग है बावळी।"

□

|

आठ

नीचै आयो । सिरावणो कियो । दिन भर रसोरो बीत्यो । सिञ्या पाँच बजी सी वाँरी दादीसा, काको, एक दरागा रो टाबर अर दो जणी म्हे ठेसण आया, गाडी मे बैठग्या । वी वेळा हूँ तीस बत्तीस बरसा री ही । गाडी चढणो तो कुम्रै मे गयो मैं गाडी रा दरसण ही का किया हानी । हाँ वळधा गाडी घणी ही देखी अर घणी ही चढी ही । ठेसण पर चैल पैल भीड भाड देख म्हारी तो बाख फाटगी । धुँवो छोडतो अँजण अर लैणसर लाग्योडा डब्बा देख, वी बेळा म्हारै आ जची, कै आ है ज्यूँ री ज्यूँ इत्ती लाबी अर एकल कियाँ ढाळीजी है अर पछ चौला पर कियाँ चाडीजी है । वाह भई बणावणियाँ लखदाद है थारै मात पिता नैं कियाँ बणाई है तैं ? लुआर कन एक छुरियो करावा बोहो बीसूँ चार छव घडी तावै वो आवैनी, ईं मे तो हजारूँ लुआर सागै लाग्या है तो ही पार को पडी हुसी नी ।

गाडी मे बैठी जद जाण्यो कै आ गाडी थोडी है—ओ तो घर है— घर सू भळे वेसो । बीजळी, पखा, न्हावण निबटण नैं जाग्यां । न नाथ न मोरी, किसीक साथी चालै पूनसो । मैं जाण्यो इत्ती साथी गाडी मे मिनख भगवान कनैं क्यो को पूगैनी । आ तो कठै री कठै ही लेजावैं परी ।

'वाह नानी म्राछी ही वाता करै है। इसी ईं मे काईं वात ही अचम्भै री ?'

'वखत री वात है रे। तूं साचै आ म्हारै सागै ही हुई है, आ वात को है नी। आ तो एक साच है रे, की रै सारै ? नुंइ नुंईं गाडी चाली ही जद काईं ठा किता रै मन म इसी अर ईं सू ही जादा उदबुदी वाता, उठी हुसी, अपढ रै मन मे तो ओर घणी। विस्वास नहीं हुवै तो सुणाऊँ ? "जरूर सुणा नानी।" लोग बतावै कै मगरै म एक्र एक डणियै नै पैली दफै, गाडी देख र बडो इचरज हुयो। वो ठेसण पर खडो हो। लोगा नै पूछयो वण,

'आ, काईं वला है ?'

'गाडी'

'बळध केथिए इ रा ?'

आ पाणी अर कोयलै सू चालै बाबा।'

'विना ही बळध, कोई बांटो लाग न फूरु * ! वाह, भई वाह,

'ओ आगै कांइ है इ रै ?'

'अंजण'

ऐ लोह री लीका सी कांइ है ?'

'बाट है वावा–ईं पर चाल आ—'

अठै' आ ठैरी कीकर ?' खोटी हुगी दी सैं।

'ठैरी है ठेसण है जिकै सू'—

वाह, भई' भई वाह —ऐडो कुण नीवडियो है—वैंडी हातरी गाडी घडी है ?'

---

* फूस

"नानी, बात नैं ऊंधी टोरदी पैला थारैं पोळायोड़ै पैण्डै नै तो पूरो कर।"

"हाँ सुणरे! हूँ वठै डोढेक मईनो रई हुस्यूं। जद बाईसा न श्रो ठा लाग्यो कै हूँ की भण्योडी हूँ तो वडा राजी हुमा अर वाँ मनै दो दो तीन तीन घण्टा वठै पढाई। हूँ क्ल्याण रा छापा बाँचती, रामायण रा दूवा चौपाई वाँचती अर वारैं अरथ नै पकडन री चेप्टा करती, श्रो मन बडो मोटो फायदो हुयो। दिरूगं म्हारमाया रो सतसग सुणती। वडी मौज लूटी वठै।

मिन्दर वठै एक एक मू आला,-मूला अर भाक्या देखपरी छकडीकम हुगी हूँ तो। च्यारूं मेर घणी अर गगी हरियाळी–बडी मन हरणी। जमना देखी, करडी खाथी, जाणू किसन रैं कोड मे गूंगी बावळी सी एका ही दोडै ही। केई केई जाग्या तो इसी मन भावती लागी, जाणूं अठै ही भगवो पैर, माळा रा गिडका दूं। इसी सोवणी, मन मावणी अर रिझावणी भोमि नै छोड, बी लाय मे बाळन नैं जाऊँ। जठै उवकी रा घर खोखा श्रांख्या रा ताप, सँताप कीडां रा वूचा कुचमादी गाधडा, कोभा अर कोठा विगाड खेलरा फोफळिया, दीखत'रा सिरोली श्राब सा पण साव अकँकारा अकडोडिया, जठै गिरमी मे लाय बरसै, सियाळै मे सी री पोटा पडै–टाळै रामजी, श्रांख कढावै पाळो, बाळै अर उकाळै ऊनाळो।

श्रा सजळ धरती इसा इसा फळफूळ श्रठ जिका नैं जीभ पर राख्या ही, डील मे इमरत रो सँचार, जीम्या जीवण सफळ अर चारयां चोरासी कटै। जामन[१] देख्या बडा अचूंभो हुयो। बाई सा बोल्या, "तूं काल कैवे ही नी क कुख घणी लागै मनै, लै खा अ। मन मे करी 'टागा टूटयोडी टीटणा सी कौन भाव श्र पण ऊपर सूं ही कैई, 'ना बाई सा तीरथ श्रा'र हूँ श्रै खाऊँ ना, थे ही चाखो था बडै मिनखां नै ही सावै श्रै।"

---

(१) जम्बू सग्राहिणी रूच्या कफ पित्तास दाहजित् (निघण्टु)

बाई सा हँस्या, बोल्या "चाख तो सरी मोथी, कुख रो काळो काटै, काळा तो ईं खातर है—जैर थोडा ही है, श्रं देख हूँ खाऊँ हूँ नी।"

डरती डरती चारया, खटमीठा, माय गुठली ही खासी मोटी। साचेली गुण रा घर। पछै बोरिया[1] याद श्राया सुरगा सरूपवान। मांय गुठली, साव ठगोरा। खावै नही जद ताँई तो देखै काइ ठा किसा ही हुवैला। निरणै कालजै घणा खायाँ उल्टी नही तो जी दोरो जरूर। काचो एक ही खायलै तो श्रास्या मीचीजै, बिना मीच्या ही। श्रापरै नाव सू श्रोळ खीजै। गावा मे एक सावण भादवै नै छोड, काग लडै कुत्ता मुसै। मैं बाई सा नै कैयो, 'ईं राम रमै जिसी जाग्या नै छोड, हूँ तो वठै को जाऊँनी। वठै म्हारै काईं बूरघोडो है?" बाई सा बोल्या, "गूँगी, सुख जाग्याँ मे थोडो ही है—सुख तो है मन मे, बो महल माळिया मे ही मिल सकै श्रर मसाणा[2] मे ही। मन रोगी हुव तो सुख भळै सरग मे ही को है नी।

बत्तीस भोजन श्रर तेतीस तरकारी सामा पडचा हुवै श्रर पेट मे गिटघोडो थूक ही को पचनी तो वै काइ काम रा?'

'हाँ बाई सा' बात तो ठीक है।'

रई भोमि रै फुठरापै री बात, तू साची है। तूँ देखै, खाली हूँ ही ईं धरती पर लट्टू हुई हूँ, श्रा बात को है नी ए विलायताँ तकातक रा लोग गाँवता नदीनाळा, पून सूँ नाचता रूँख राम, ताळ देंवता समदर श्रर निरखतै डूँगरा नै देख ईं देव दुरलभ धरती पर, इसा रीझ्या जिया साप पूँगी पर जद ही तो एक गोरै रै मूँढै सूँ एक दिन श्रा श्रापे ही नीकळगी

(१) 'कुपथ्य बदरी फलम् लोके प्रसिद्ध।'
(२) श्मशानेष्वा क्रीडा स्मरहर! पिशाचा सहचरा
(शिव महिम्नस्तोत्र)

कै 'कुदरत री किरपा कोर सू भरयो पुरयो, सावण मनभावण सा सुग्राणा, रूप रै हीण्डै हीडतो सदा सजोरो, ग्रर सुख सम्पत सू हलाहलार भरयोड़ा जे कोई देस इ धरती पर है तो एक ही है ग्रर वो है ग्रापणो ग्रो देस ।'*

'ग्रा इसी फूठरी बात कंवण ग्राळो कुण हो बाई सा ?'

'नाव सू किसो माथो फोड़नो है तनै ?'

'तो ही ।'

बा, बो नाव लिया तो सरी म्हारी समझ म की ग्रायानी । नानी की सोच'र बोली हूँ देखू वा सायत मुलमुल सा कैयो हुसी ।'

मुलमुल ग्रा सुणता ही हूँ एकर खासो ग्रसमजस मे पडग्या क नानी बूड बोलै ग्रा म्हारै कम जचै ग्रर साची है तो समझ मे को ग्रावैनी जरूर मूळ म कठ ई गळती है । मैं कैया 'नानी ! तनै मुलमुल सा कियाँ याद रैया गोरा रा ता इस्या नॉव ही को हुवै नी ?'

'मुलमुल तो इ खातर रे कै बी रो काळजो मुलमुल सो मुलायम हो जद ही बण इसी ग्रोपती ग्रर ग्राछी बात कई ।'

मन म सोची डोकरडी किसीक फबाई है—है तो पछै, टाळै जिसी । हूँ हँस्या, 'नानी ग्रा तो म्हारै की जचीनी ?'

तो मुसमल सा हुवलो ।'

'कैवता ही म्हार मन म एक इसी लैर दौडी कै ससे जिक ग्राग भागतो दीस्यो । मैं कैया, 'नानी म्हारै स्याल सू वो थारो मुलमुल सा,

---

* If I were to look over the whole world to find out the country most richly endowed with all the wealth power and beauty that Nature can bestow I should point to India

(In a letter to queen Victoria in the year 1858)

ग्ररथ सागै मोकळो मेळ है ।

मुखमल सा, मैक्समूलर साव हुणो चाई जै, मोक्ष मूलर तो याद रैसी ही ?'

'तो हुवै ही लो बीरा ! मैं तनै कै दियो हो नी कै श्रीगणेस मे ही हूँ को समझी नी, पण खर, श्रा म्हारै सोळै श्राना जचगी रे गोरधन ! कै गोरधन री श्रा भोमि है बड भागण ।

बाई सा नै मैं एकर पूछ्यो, 'श्रठै श्रो कीरो रजवाडो है बाई सा ? बाई सा हँस्या, मैं देख्यो मनै पूछणो को श्रायो हुसी नी ।'

वै बोल्या, "श्रो थारै सावरियै रो देस है, श्रापा बी री रैत हा श्रापा ही नही, श्राखी जियाजूण । गूंगी श्रापा रै बठै जिया गाँव धणी, ताजीमदार, राव राजा, जाग्या जाग्या श्रापरा बाडिया छाप राख्या है, इया ही श्रठै हुदेला पण वैनडी श्रै छोटा मोटा बाडिया पक्का श्रर थिर थोडा ही है । लौंठा, नागा जठै जठै पोल पट्टी देखी, श्राप श्राप रै माजनै सारू कब्जो करलियो । केया श्रापरै हां हजूरां नै इया ही, वगम दी पण इया करघोडा कब्जा साचा श्रर श्राछा कदेई को हुवैनी । राड रा घर हुवै । ऊमर श्रां श्रापस मे लडायां करी, ईसकै सू पूरा हुया, श्रारो कळै सू तीजै रै ताव लागी, ई सजळ सजीवण भोमि पर घणो ही लोही खिडायो तो ही श्रोजूं श्रकल श्राव किसी पोल पडी है ? श्रबै तो कदेई, ईं भोमि रो मानखो मिल र चेतै तो श्रां बाडोटिया नै भजा ही उठावो सुगनी !

श्रापा रो देस श्रो इत्तो ही को है नी बैन ! भळै कदेई तूं जे जगन्नाथ, सेतबँध रामेसर श्रर द्वारका जासी तो तनै इया ठा लागसी क श्रठै ही श्राखी भोमि रो छेडो है—इत्तो लांबो चौडो देस है श्रापा रो बदरीनाथ जासी जद तूं देखसी कै ईं सू ऊँचो बस रामजी रो नाँव है— चठै ही श्रापणो ही देस है । श्रै रजवाडा, श्रै ठाकर ठरडा केठा रैसी, न रैसी पण श्रा धरती श्रापा री कठै ही को जाव नी । श्रापणो नेह तो इ

धरती सारी है। दस तूं आ धरती किती पवितर है जिकै पर गंगा अर जमना जिसी नद्या, हरियाळी अर अन्न धन बांटती बिखेरती, किती खार्यां चालै, जाणूं खेत खेत म आंन टैम सूं पैला पूगणो है। भूपं तिरसै मानखै री जाणूं सा चिन्त्या आं नैं ही है। आ, आपरी काया रैं स्सारैं ओपता अर आछा गाव बसा राख्या है। आपरै वाळका सूं ही बेसी वाँ नैं प्यार करै। आपा न अठै जीवता नैं जीवण मिलै अर मरथा नैं मुगति। इ भोमि रा उपगार आपा किया भूला चेंडी। ओ साळा देस आपणा ही ता है गू गी—आपा ही इ रा टाबर हा—गोरा काळा सगळा ईं एक मावडी रा जायोडा। आपा आपण मन मे अगा समझ सूं दुभात भना ही राखो, पण मार तो मैं सरीसा है। लाडू री कोर मे किसो खारो किसो मीठो ? अवै बता, आ रजवाडो की रो ? आपणो का और की री ही ?

अँ बातां म्हार काळजै म इया जडीजगी जिया क ई ढींगी पाती नैं खीला ठाक, जन्म कन्दे। म्हारै आ जची कै 'जीवण मे ने पाँच पइसा हुया तो जरूर, इ धरती री गोदी म दूर दूर ताँइ खेलस्यूं अर इ री गोदी म खलणिया अण गिणा बाळ वचियाँ न निरख परस सुख पास्यूं'। म्हारै किस पोता नैं धन्न करणो है।

हूं घूमघाम, पाछी आयगी। जावता म्हारैं स्यामसुन्दर रा फाटू वाईसा कनै सूं लेवती गई। मन वै बीस रुपीया और देवण लाग्या हूं बोली, 'वाई सा! मनै अठै नुवो जमारो मिल्यो है—जिकै रो ब्याज ही मैं सूं ता भौ भौ म चूकणो आसो है अर थे उरटा मनै देवा हो। थाँन म्हारै साँवरिय री सौगन, मनै जे राजी राखो चावो ता हूं मइसो ही को लूं नी। रुपीयाँ रो मनै किसो डान लेणा है। म्हारी ता एक ही गरज है कै भटै कदेई ज स्सा मौको मिलै तो मन ही चेत न्यिा।' ठीक है सुगनी! जे भगवान री किरपा हुई तो जरूर तन बुलास्यूं।।

कँठ पर चढा—वाँ मनै पुगाय दी । पो आई । मा सू मिली । इसी ट्री हुई कै मत पूछोना—बळती बेल नै जाणू धाप'र पाणी मिलग्यो हुवै । आस्या मे डोढ मईनै रो भेळो हुयोडो नेह एकै सागै ही ऊमड्यो अर काळजै गी कोमळ केवळी भीता तोड आख्यां रै रस्तै धरती पर पडग्यो । "ओदरगी मुगनी थारै बिना ।"

'तू आयी ही को रही नी मा—रोटी खावती ही, का नही ।' पण मा रै तो एका ही आंसू ही आंसू पडै ।' 'तू आयगी सुगनी—म्हारो रू रू राजी हुग्या । मैं परसाद रो मोटो सारो एक टूंगो अर एक चंदण री माळा मा न दिया म्मी राजी हुई वा जाणू भगवान आप वी नै भेज्या है ।

घावो जाणू मनै ही अडीकै हो । दूजै दिन मरग्यो । खाली दरसण करावण खातर ही इता दिन राख राम्यो हो रामजी । बी रा पडयै पटयै रा पग गळग्या हा । पगा मे कीडी नगरै सी लट्टा क्लिबिलै ही । लारै मारा म चामडी गळगी ही । हाडा री छांया सी पडी दीसै ही—देखता ही काळजो बारै आवै हो । गळयोडै काकडियै मे लटा वभ्र करदै जिया डील हुग्यो । ओय हाय कर पूरा हुयो । म्हारै मन म विचार आयो कै दख सोनै सी मानखा देही सावरियो देवै अर किते चोरां सू देवतो हुवलो—वो चावी तरै सू समभ्र'र ही भेजतो हुवैला अर अठै जगत नै देख-देख, भोग भोग वी नै की थोडो घणो ग्यान तो हुतो ही हुवैलो—पण अठै आया पछै काई ठा वी रै भोड मे किमै कुसरवाग रा बुग वडै जिका ऊमर भर गूंगो हुयो फिरै । देम री भोमि नै भूल—सावरियै नै विसार—चितगैलो हुयोडो फेर पछतावतो इया सिड सिड मरै । काई ओ मिनख हो ऊजळो चिलकता—काई ई रा काम, काळा किचाण आवै जिसा । अठ रो अठै ही परमात्मा किमोक परचो दियो—वाह सावरिया !

डैण मरघा पछै—म्हे मा बेटी गाव मे ई जाग्या आयग्या । अठै आया पछ सात आठ बरस मा री सेवा करी । आपरा चलण चाल्या

धरती सार्ग है । देस तूं आ धरती कित्ती पवितर है जिकै पर गगा अर जमना जिसी नद्या, हरियाळी अर अन्न धन बाटती बिखेरती कित्ती साथी चालै, जाणूं खेत खेत म आरै रम मूं पैना पूगणा है । भुवै तिस्सै मानख री जाणूं सा चिरया आं नैं ही है । आ, आपरी काया रैं स्सारैं ओपता अर आछा गाव वसा राख्या है । आपर बाल्का सू ही वैसो वो न प्यार करै । आपा नैं अठै जीवता नैं जीवण मिलै अर मरया नैं मुगति । इ भोमि रो उपगार आपा किया भूला वैगडी । ओ सगळो देस आपणा ही तो है गू गी– आपा ही इ रा टाबर हा—गोरा काळा सगळा ईं एक मावडी रा जायोडा । आपा आपणै मन मे अण समझ मूं दुभात भला ही राखो, पण मार तो मैं सरीसा है । लाडू री कोर मे किसो म्हारो कित्तो मीठो ? अब बता, आ रजवाडो की रो ? आपणा का और की रो ही ?

औ बाता म्हारै काळज मे इया जडीजगी जिया क'ई ढीली पाती नैं खीला ठोक, जरू करदै । म्हारैं आ जची क 'जीवण म ज पाँच पइसा हुया तो जरूर, इ धरती री गोदी मे दूर दूर ताइ खेलस्यूं अर इ री गादी म खेलणियाँ अण गिण वाळ वचिया नै निरख परख सुख पास्यूं' । म्हारै किनैं पोता न घन करणो है ।

हूँ घूमघाम, पाछो आयगी । जावती म्हारै स्यामसुन्दर रो फोटू बाईसा कनै सू लेवती गई । मनै व बीस रुपीया और देवण लाग्या हूँ बोली, बाई सा ! मनैं अठै नुंबो जमारो मिल्या है—जिकै रो व्याज ही मैं सूं तो भौ नी मे चूकणो आसा है अर थे उल्टा मनैं देवा हो । थांनै म्हार सावरिय री सौगन, मनै जे राजी राखो चावो ता तू पइसो ही को लूं नी । रुपीया रो मन किसो लाभ लग्यो है । म्हारी तो एक ही अरज है क भळैं कदेई जे इसा मौको मिलैं ता मन ही चेतै दिया । ठीक है सुगनी ! जे भगवान री किरपा हुई तो जरूर तनैं बुलास्यूं ।

ऊंठ पर चढा—वां मनैं पुगाय दी । पो आई । मा सूं मिली । इसी हरी हुई कै मत पूछोना—बळती वेल् नैं जाणूं धाप'र पाणी मिलग्या हुवै । आंख्या मे ढोढ मईनैं रो भेळो हुयोडो नेह एकै सागै ही ऊमडयो अर काळजै गी कोमळ कंवळी भीता तोड आख्या रै रस्तै धरती पर पडग्यो । "ओल्गी सुगनी थारै बिना ।"

'तूं आधी ही को रही नी मा--रोटी खावती ही, का नही ।' पण मा रै तो एका ही आंसूं ही आंसूं पडै ।' 'तूं आयगी सुगनी—म्हारो रूं रूं राजी हुग्या । मैं परसाद रा मोटो सारो एव टूंगो अर एक चंदण री माळा मा न दिया, इमी राजी हुई बा जाणूं भगवान आप वी नैं भेज्या है ।

बाबो जाणूं मनैं ही अडीकै हो । दूजै दिन मरग्यो । खाली दरसण करावण खातर ही इता दिन राख राख्यो हो रामजी । वीं रा पडय पडय रा पग गळग्या हा । पगा मे कीडी नगरै सी लट्टा किलबिलै ही । लार मोरा म चामडी गळगी ही । हाडा री छाया सी पडी दीसै ही—देखता ही काळजो बारै आव हो । गळयोडै काकडिय मे लटा वेभ करदै जियां डील हुग्यो । ओय हाय कर पूरो हुयो । म्हारै मन मे विचार आयो कै दस मान सी मानखा देही सावरियो देवै अर कित प्यारा सूं देवतो हुवलो—वो चोखी तरै सूं समझा'र ही भेजतो हुवता अर अठ जगत न देख दख, भाग भोग बी नैं की थोडो घणो ग्यान तो हुतो ही हुवैलो—पण अठै आया पछ काई ठा वी रैं भाड म किसै कुसम्कारा रा बुग बडै जिको उमर भर गूंगो हुयो फिर । देस री भोमि नैं भूल—सावरियै नैं बिसार—चितगैलो हुयोडो फेर पछतावतो इया सिड सिड मरै । काई ओ मिनख ही ऊजळो चिलकतो—काई ई रा काम, काळा किचाण आवै जिसा । अठै रो अठै ही परमात्मा किमोक परचो दियो—वाह सावरिया ।

डण मरधा पछै—म्हे मा बेटी गाव मे ई आग्या आयग्या । अठ आया पछै सात आठ बरस मा री सेवा करी । आपरा चलण चाल्या

जदताई मनै ऐल ही को आवणदीनी । एक दिन वण ही आपरी डाई पूरी करी । अबै हूं रही घडी छटांक एकली । चाळीस कनै पूगी हुस्यूं । दिन मे अठै, रात नै थार घरे । वडी मौज है वेटा । की रो ही लेणो न की रो ही देणो । डाई पडै जिनै तो काढणी ही पडै—हँस'र काढो भावै रा'र ।

□

नौ

एव दिन हूँ नानी कनै बठो हो । म्हारै अर नानी रै अवै हेत करडो गैरो हुग्यो हो । गरो काई, बो बिना घर म एकरी नै कम ही आवड ता— दो दिन वठ ही जावतो तो रळी आवती, मैं पूछचो नानी ! 'थारी राम कथा सुण म्हारो वडो जी सारो हुया । तूँ कैवै तो, इ नै पोथी म छपवा नाखूँ । लोग पढमी,' कैणै रै सागै ही नानी रै लिलाड मे सळ पडग्या, बोली ।

'तो आखै मुलक मे तूँ मनै भाडी चावै । तूँ कैवै होनी कै बामण नै कवण म की दास वो लागनी । बामण की रो बुरो कर—पण म्हारै स आ जच्योडी है क कुचमाद री जड ही बामण है ।'*

एकर हूँ चुप हुग्यो जिया बीजळी गयोडो रेडियो । बोलतै नै बोल को आयो नी । काई ताळ सूँ तार भेळा कर'र बोल्यो, 'नानी ! न मैं थारो पीर सासरो ही पूछयो, न थार मोटयार रो ही मनै ठा, कुण थारा

---

* काळ वाघड सूँ ऊपजै, बुरो बामण सू होय ।

मा बाप, बुण ठाकर अर कुण ही थारी बा बाईसा–साची पूछूँ, तो तैं थारा सागी नाँव ही ग्रोजूँ को बताया है नी भला—सुगनी तो थारो कूडियो नाम है। पछै तूँ क्याँ भाडीजी बता देती ?

'नानी तूँ एक गाँव मे नी अर न एक घर म ही। तूँ तो पून ग्राळै जियाँ ग्राखी धरती पर है। थारी ग्रा बात एक थारै कनै ही का है नी गूँगी ? कुण जाणै कित्ती घू या म ग्रोटी पडी है। व सगळा इ नै पढसी जद बारी ग्रापरी बात ही मिलाण लासी। थारी नणद, थारो ठाकर, थारो पी ग्राळो बाबो, ग्रर थारी बाई सा–इ धरती सू वदेई ना मरै नी। तूँ तो ग्रा रो कैवै गूँगी—थारी कुतडी ग्रर थारी गाय–जिसा ग्रादमी रा हेतुला जिनावर ही का मरै नी। छोटी सूँ छोटी वस्ती मे ही ग्राँ मायलो कोई न कोई तो लाघसी ही ग्रर लाध तो ही र सी। कित्ता ही लोगबाग, थारो ईं बात रूपी काच मे, ग्राप ग्रापरो उणियारा देखसी तो यान ठा लागसी कै म्हे किसाक हाँ–कोई ठा किताक नै ग्रापरो ग्रणखावणो उणियारो देख, सूग ग्रावै ग्रर बै मूँडै रो मैल धो, बी नै चमकावण री चेस्टा करै। जिका सू ग्रागै चाल समाज रो सोभा बधै ग्रर समाज मे काढ को पनपै नी, किताक ग्रापरो चिलकता चेरो देख, इसी सावधानी बरत क बी मे की तर रो न दाग लागै न कोई काळमिस ही–पछ बता नानी, समाज रो रूप किसोक फूठरो ग्रोपै ? सुगनी जिसी केई दुखियारण ग्रापनै ग्रापर सावरियै नै सूँपसी। केई जगदम्बा रा भगत वण भोमि रो कळक मेटसी। केई बाईसा बण, धरती रै खाटै खारै जीवण मे मिसरी घाळसी। तैं जिसी रै, काळजै री भूखी तिरसी उजाड धरती पर, मस्ती ग्रर मौज री मन्दाकणी चालू करसी। बता तूँ ई मे कठै भाण्डी जी ?

बता की रो हियो फूटचो है कै *थारै ग्राळै बाबै जियाँ बूढ़ बारै* ग्रापरी दाढी खोसासी, ग्रर रूँ रूँ म कीडा घलावण सूँ राजी हुसी। थारी नणद जिसी नणद बण किसी लुगाई सुखसोमती घासी ? मसाणिया

घर मिनख मन मरणिया रो मानखो घट आदर करसी ? दार अर धूम सोर, गुल्ली घर जुआरी नौकरी मैं मिरकार माण देसी सिरकार रा पूटपोछा है ? अबै तूं मनैं सावळ समझा कै तूं ईं मे कियां भांडीजो ? हूं थारी दोईतो हूं, तनैं भांडणी चाऊं मा थारैं जचगी ? आपरी जांघ उघाड़ूं तो आप ही लाज मा मरूंनी ?

नानी बोली 'तो थारी मरजी है—थारैं जचै जियां कर । म्हारी तरफ सूं छुट्टी है तनैं ।'

इत्तो कैवता ई म्हारो दुगा जीगोरो हुयो जियां सूतनैं टावर नै घण हीं सुण गुणियों काढ'र ल्यो हुवै ।

वा उठी । पोथी म दियाड़ो एक कागद काढ्यो । आपरी जाग्यां रो पट्टा हा, 'लै घो लजा—सावळ राखदे । वा म्हारै नांव सूं हो । गाव रै दो मातबर मिनखां री साख ही । नाम टच करा राख्या हा ।

"इ रो हूं कांई करूं नानी ?"

'हा भर'र नटै, बोल मत ना—आ जवान पान सावण हुवै वा बूढ सावण ? नानी रै घर रो मालक दोईतो हुवै वा और कोई ?

मैं कागद लेतियां—विना मनस्या रै । सोच्यो मौज मालर री । कागद नैं राख दियो सान'र । अबार मईनै बीस दिन सूं हूं नानी कन को गयो हो नी । बागठ मे जद चीण भारत पर हमलो कियो वा दिना री बात है । दियाळी ही देस म सुस मोमती सूं को मनाई जी नी । देस री जीभ पर एक, चीण री ही चरचा ही । नेरजी गळगळै कण्ठां सूं आखै देस नैं अवाज दी —

'हे मावडी रा जाया ! आ मैं सपनैं में ही को सोची ही नी क ईं धरती पर आपां नैं ही एक दिन, आ अणचीती वेळा देखणी पडसी । वेळा दख, थांनै बतळाऊं पग पाछो मत सिरकामा, आपां मरा मिटा परबा

नही, परवा लाली एक ही बातरी है कै आपणै जीवता ई धरती री कोर ही खोटी न हुवै। किरसाण अर मजूर, भूखो अर भागवान, सिपाई अर सिरदार, हरक जिको इ मावडी री कोख मे जलम्या है इ रो टाबर है अर मा रो स्नेह, वा सगळा पर एक सो है। आवैनी किराडूं टाबरा थका मा कानी काई टढी निजर सूं दखलैं। आप आप रै मोरचै पर स पक्का रैया।"

देस मे एक तैर चाली नो इसी चाली कै भीता अर भाखरा सू नही रूक। मिन्दर अर मैजीद गिरजा अर गुरुद्वारा सिरक सिरक, नैडा आयग्या। किसाण अर मजूर कगलो अर किरोडपति, विधवा अर सुहागण अठै ताइ क देस रो कच्चो बच्चो आपो साभ, त्यार हुग्या। साना, चादी, रिपियो पइसो ससतर पाती, अठ ताइ कै आपरै काळजै रा खून काइ प्राण ही समझोनी—सगळो की दियो अर दियो ही उछल उछल बूद बूद आपस म होडा कर कर। आपा देस इ धरती र प्यार म इयाँ डूबग्यो जाणूं कूंकूं रा पगलिया माडती इसी सान री बळा भळै काइ ठा आवै का नही। लार रह्या, तो पिछतावो ऊमर की मिटनी।

हू नानी कन गयो तो सरी पण डरतो डरता क उणती की न श्री ओळमो देसी जिकै में फरक नही देसता ही बानी 'गारधन! करडो मोह 'चोर हुयो र ?'

"कांइ बताऊँ नानी एक इसै ही उळझाड म पजग्यो—आंवता ही, भोरा भोर पलां थारै कन आयो हूं।"

क्यूँ रे ?'

नानी न सा वात मांडर समझाई। वा वही राजी हुई। बोली, हूँ इसै मानखै रा दरसण करती रे। इ धरती न घणी ही फिर फिर देखी, आ लदाख थारी भळै लार ही रैगी कांइ?" की लाँबो सासले'र बोली चोखो।

- 'नानी ! किसी किसी-बात बताऊँ तनै, सूरदासा अर कोढियाँ तकातक आपरी भीख, कूद कूद धरती खातर ऊँधी करदी । खैर, बा नै ही जावण द नानी ! तीन तीन घरा बिचाळै एक ही जवान अर बी नै ही मा आसरीवाद दियो अर वैंना तिलक काढ, बिदा कर दियो । मोरचै पर प्राण भला ही पडो पण पग पाछा पडै किसी पोल पडी है ।

गोरधन ! आज धन घडी धन भाग । सुवेळारी मालाळी म्हारै जीवणँ अर भाग रो चन्दरमा सामो । पच बळी मूँ ही जादा जवरो जोग मिलायो है सावरियै । कोई पूरबलो पुन ही उदै हुयो है म्हारो का दीनानाथ ही अपार किरपा करी है मैं पर । म्हारी घणखरी बासना आज सस है । म्हारी ममता री गाँठ अबै खुलगी समझ । पाच सात दिना म ही जाणूँ, पीनरियै रो ओ पछी अणन्त अजाण आभै मे ईं भोमि री आसीस ले आपरै साँवरियै कानी उडसी रे !

'आ काँईं कवै नानी ?'

क ऊँ काइ—गोरधन ! सावरियै री मैर हुवै, जद इया ही हुव । कुण टाळै—हुव तो हर री चीन्ती, पण म्हारै की इसी ही जच्याडी है । माणस मे इसी ही फुरणा हुवै । अर बा साँवरियै री ही समझ ।

'आज काईं तिथ है—बीरा ?'

'बारस नानी ।'

'तो समझलै पूयूँ न मनै लाँबी जात्रा पर टुरणो है-दस बजी सी-वाह म्हारा साँवरा, हूँ ओजूँ कितै ऊँडै कादै मे पज्योडी ही—म्हारो जी घुटतो हो-आँत आँत अमूजती ही । आँख्या बारै आवती ही पण प्राण बारै निकळै किसी पोल पडी है !' एकर आख मीचली अर थोडी सी मुळक दी । बी रै मूँढ पर चिन्ता रो एक ही सळ मनै को दीस्योनी, निरदोस

अर निस्छळ सांति वी पोपलै मूँढ पर खेनै ही जिया कोई नान्ही बाळकी भोर री टँम नदी री बेकलू रेत म आपरी धुन मे रमती हुवैं।

'लैं, इ नै आ,—एक माटा गूणियो है बी घट्टी नीच। बा खूण मे वस्सी पड़ी-काढ'र ला देखा। घट्टी नै छेड़े करी। जाग्या खोदी थोडी—एक गूणियो खासो भारी—ऊपर बोरी रो तापड—मै नानी आग धर दियो।

नानी बोली—'लै गिण देखा।'

चाँदी रा एक हजार रिपिया—विक्टोरिया अर पचम जाज र सिक्कै रा। पतळी पतळी पगाँ री कडी—आवळा पाती,—चाळीसेक रूपीयारी पावली-आठानी। गिण र पाछा गूणियै मे घाल दिया। हूँ वी रै मूँढै कानी देखै हो। धीरै धीरै वा बोली।'

'गोरधन ! तै म्हारो आज कितो उपगार कियो है, इँ नै हूँ ही जाणू। खैर, हूँ मरती तो सरी पण दुरासीस सी दोरी। म्हारो मन आँ काँकरा मे रैवतो अर मनै इ धरती री काया पर साँप बिच्छू बण, फिरणो पडतो-कुण जाणैं कितै जुगा ताँइ मैं इ भोमि री चीज नै लुकोई जिक रै अपराध सूँ सायत केई मनवन्तरा ताइ मुगत को हुती नी। धरती री चीज रो मैं धिगाणै धिणियाप कियो-ईं खातर म्हारो सावरियो कितो नाराज हुतो-मिनखा देही सू साँप बिच्छू बणती जद। आ ही कारण है कै आज ताँइ हूँ म्हारै सावरै नै साकार को कर सकी नी—अवै हूँ जाणू बो म्हारी आँख्या आगै ही खडो है-हँस अर मुळकै है म्हारो रूँ रूँ इसो राजी है जिया तीजा पर हीण्डती तीजणी रो।'

अै तै देख्या अर गिण्या है जिका रपीया अर गणो को है नी भलो—आ म्हारी चाळीस साल सूँ बेसी री भेळी कियोडी वासना है। जे आ अठै,पूरी रैवती तो आग जा, आ पडव्याज आळै जिया सौ सौ

गुणी पळती भर म्हारै जूण जूण मे सागै छिपी रैवती । इ मे एव म्हारी ही वासना को है नी—म्हारी मा री-ही वावै री भर कुण जाणै भळे ही की री हुवै तो, पण था मावडी तो मनै संभळा'र समभलै नीती हुगी-भवै समभनै इ पाप रै बाप री भागण हूँ ही तो हुई । हे भागण भोमि ! तै म्हारै पर भात भवारण किरपा करी-भर किरपा करी तै, गोरधन भाज हूँ समभो कै तू विराट रो मूँडो है-भर विराट रै मूँडै सूँ वी रो ही बुरो को हुवैनी ।

नानी मँचली पर बैठी रई । हूँ बी रै मूँढ कानी भावै हा जियां जगत भगवान सामी ।

नानी बोली साढी पाँचसै रुपिया थारी मा कनै है रे—म्हारा दियोडा ।

'थे न्यारा किया नानी ?' मैं पूछ्यो ।

'इँ री कथा ही की इसीसी है रे, भापणी चोकी रै सामनै, बा ऊँची सी साळ दीसै तनै ?

'हा नानी ।'

'भाज सूँ पाच सात सारा पैला बी म कुण रैवतो ठा है तनै ?'

'गाँव मे हूँ कम ही भाया जाया करूँ, मनै तो की ठा नी ? एक लुगाई हुती तो सरी ।'

'दरोगी ही रे या । भै रूपीया बी रा है भलो ।' हूँ इचरज सूँ नानी सामी देखण लाग्यो ।

'जवानी जिया जूण नै ही भावै रे—बी नै ही भाई-कोई नुइ बात को ही नी—पण सभळ को सकीनी । नींवा फाडी भौख, गाळ मूँ, गोरी निछोर मैम सी फूठरी रूप छुळै भर ऊपर सूँ जवानी—कोई बँवण भाळो न सुणन भाळो-फेर सुभो चालण रो रस्तो ही कठै ?

जवानी अर बूढापै री मिलए बेळा मे, सगळै सरीर मे बीर धोळी बभूती उधडगी । बभूती क्या री एक रकम रो कोढ हो रै । होठ धोळा हुग्या—कुरूप ओगण लागगी । धीर धीरै अकूण्या कनै सू की पोचण लागगी । साथळा गळन लागगी–डील, रह रह बेकार हुवण लागग्यो अब कुण सू घै हो–देख दुनिया नै–ओ रूप निक्ळयो तो बी मे सू ही हो, पण ई जगत री रीत ही इसी है पण आधा आदमी तो ही को समझैनी ।

एक दिन बण मांचा झाल लियो । मनै ठा लाग्यो । हूँ जावती वठै–डोढ दो मईना गई हुस्यू । डील चूंवता आला गाभो चोव जियाँ । हूँ राख कपडछाण करती–बीरै डील पर बुरकावती की गूदडता नीच विछावती । दो घण्टा न राख आली गार हुज्यावती । फेर बिया ही करती । रू रू फूटग्यो बीरो ।

एक दिन बण मनै कैया । 'दादी मैं डील वेच्यो,–जवानी वेची, इ नै आखो गाव जाणै—अबै लुकोऊँ तो किसी लुकू । बदळै मे दादी ! मैं ओ कोढ लियो–क़िसोक स्याणो सौदो कियो मैं, हूँ भोगू म्हारा कियोडा ।'

थाडी ठैर, भळै बोली, 'दादी म आरया र स्सारै ई धरती री उठती जवानी लूटली–मूंछ्यां आळा जोध जवान म्हारी हाजरी भरता—वै दिन मन याद आवै–दादी ! पण रह रह म्हार ई डील मे नहीं–काळज मे अबार ही एक इसी टीस उठै जिकी म्हार सू बरदास्त को हुवैनी–मनै सूती सूती नै चमक्रो ऊपडै–डर लाग–ई खातर हूँ दादी आज थार आगै परकासूं ।'

मैं कैया तूं डर मत गूंगी–पाप पुन परकास्यां ही आधा पड । बो बा को समझीनी—पुन परकास्यां आधो पडै—अर पाप ही परकास्या आधो पडै इ खातर पुन नै-बताणो नही अर पाप नै कणो जिकै सू बो ओछो हुवै ।

दादी मनै एक लुगाई दीसै जाणूं मनै कैवै थारो रूं रूं नहीं सिडै ता मनै कैए । ठीक ही कैवै वा दादी । बीरा धणी हुनो-आछो पूठरमल । देख्या ही भूख भागै इसो । मैं वी न फमा लियो । म्हारै अठै पैला ता रात बिरात आवतो—पछ चौडै धाडै । इ री लुगाई नै ठा लाग्यो-एक दिन वा म्हार अठै आई—आपरो आचळ पसार, मन कैयो 'हूं भिख्यारण हूं थारी-म्हारो छोटो सो ससार है तूं बी नै मत बिखार—म्हारो जीवण मत बिगाड । लुगाई स्याणी ही पण हूं बी बेळा म्हार गाप पर ही-एक गूंग ही म्हारै मे, बीनैं हूं को जाणती ही नी । मैं कैयो बी न, 'निकळ म्हारै घर सूं-भीख री भूखी रांड-धूड खांवती फिर जाग्या-जाग्या-अर मनै कैवण आई है ।' दादी बी बेळा बी रा धणी म्हारी मळ म ही हो—बारै निकळयो-बी नै घणी दोरी कूटी । वा रोवती वसरमीजती गई, पण कैवती गई—तूं याद राखे थारो रूं रूं नहीं सिडै तो । मनै ठा लाग्यो बा पेट सूं ई ही । बी रात नै ही दादी वा कुअै म पडर पूरी हुई । च्यार छव मईना पछै-बी रै धणी नै मैं छोड दियो—बा दारू पीवतो । एक दिन हिडवाव ऊपड बो ही पूरा हुयो । आज मन काइ ना दीसैनी—खाली बा एक लुगाई म्हार चरै आगै चौईसूं घण्टा घूमै, कय थारो रूं रूं सिडसी ।'

"संसार दिरखत री डाळी पर, दो भोळाभाळा पखेरू आपरै आळै मे सुख सूं बैठा गुरबत कर जीवण बितीत करै हा । तै बांरो आळो ही को खिडायोनी, बी री मालकण न मार ही नांखी—गरभवन्ती नैं । किता किता अरमान बी रै अन्तस म उछळता हुवैला । तै माडा काइ-माडै सूं माडो काम कियो । अबै तो एक ही उपाव है कै बो कर जिकै नैं जे मन सू करै कबूल तो बो करडो राजी हुवै ईं रातर तूं मन सूं कूक कूक, भगवान नै कह कै, म्हारो रूं रूं सिड ही नही— वां मे कीडा भळै पटक प्रभु मन चीती कर थारी । अठै रो अठै ही भुगता मन' मैं कयो बी नैं ।

गारधन ! तूं मानै लो नही, मरणै सूं पाँच सात दिन पैला बीं रै पगाँ म बीडा पड़ग्या–या वेचेत रैवती ! थोडो घणो ईलापण बी रै सरीर म रैया वी नै वै लट्टा चाटगी । वण मनै एक दिन भैं साढी पाँच सैं रिपिया दिया । वाली, म्हारै टील नै वेच वेच भ्रो पुन मैं भेलो किया है । म्हारो नी भला हुवै इसी जाग्या तूं लगादिए ।'

'गोरधन भ्राज बी री ही टैम भ्रायगी बी रो भ्रो पाप पुन मे न्तऊज्यामी—धरती री मैर सूं' कह'र नानी एकर मरयोडी सी निढाळ पडगी ।

मैं नानी रै मूं ढ सामो भाई ताळ देख्यो । मनै भीं इसो वैम हुया क भ्रावैनी भ्रा साचेली कठै ही 'बूढी भारत माता' ही भ्रो खोळियो धार र इ भोमि पर, मैं जिसै डरपोक भ्रर डैठी चूक, स्य थीं सरधाहीण भ्रर सभाव रै मूगल कुमाणस बेटा नै जगावण भ्राई हुवै । जे गाव वसणी (गाम वासिनी) बी मावडी रो भ्रो ही सरूप है तो वा बडी दोरी भ्रर दुनियारण है पण सागै सागै वी नै भ्रापरै किरोड़ बेटी वेटा पर गुमान है भ्रर वा पर वेमरजाद नेह भळै । म्हारै भ्रा जचीं कै वी रै प्यार रै भ्रागै सरग रो सिंघासण की नी, पण धरती रै पदलोलुप भ्रर धय भ्रौंध मानवाँ नै जे ईं री दुरासीस लागगी कठै ही तो, वो काळी धार डूब जासी ।* राम गी धरती रै भ्रादमी, जे राम री रीत छोडदी तो भलाई भळै भी नी मे है कठै ? स्यो भीं गमार ही, इ रो प्यार, इ री भ्रासीस लेणै मे ही लाभ है ।

नानी भ्राँन्यी खोली का हूँ बोल्या' नानी, भ्रासी भळै वण भेळी कर राखी दीस ही त तो ?'

---

*लक्ष्मण ! भ्रपि स्वर्णमयी लङ्का म न रोचत
जननी जन्म भूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी ।

"अळेवण नही, ओळपचोळो अळसीडो हो रे । अळसीडो नही हटावै तो घर कद ओप्यो, गुवाड कद दीप्यो अर कद खेत ऊँचो आयो ? ओ म्हारै काळजै रै खेत मे बाँठ बूजां सो इसो हो कै अण बीरी, सगळी सरसता अर सजळता चूसनी । इत्ता दिन तो गोरधन हूँ कुवेर ही रे कुवेर, आज हूँ कचन हुगी–भागवान हुगी भलो ।"

"कुबर ही अर आज कचन हुगी, ओ गडबड गोटाळा किया नानी ? अब तो कगाल हुगी, आ कणी धाईज तनै ?"

"कबूतर नै कुओ ही दीसै रे, तनै तो कगाली ही चेतै आवै— असली कचन तो हूँ आज ही हुई हूँ ।"

मैं देख्यो, खामै दिरा पछै डेणती आज भळे कान भाल्या दीसै, अ स्मोरा सा छूटएा आखा है ।

मैं क्यो, 'नानी समझा तो सरी ।'

'घणो कोढ भेळो हुयाडो हुवै, बी नै काइ कसी तू ?"

'कोढियो ।'

* 'कुवेर रो मुतळब याढिया हुवै, ओ तनै ठा है का नही ?'

'ठीक है नानी, मैं कान पकड्यो, इत्तो ऊँडो हूँ को गयोनी ।'

'अर कोढ मिटया, कचन* हुई का नही ?'

'नही भळे वया, 'कचन जिकै न वैवै जिसी ।'

नानी की ठैर'र बोली, 'गोरधन ! इ सजळ स्यामळ भोमिरी उरवरता देख, इँ रै लाड प्यार नै निरख, म्हारो इत्तो जीसोरो हुव जाणू

※ कुबेर–कु 'कुत्सित–बेर शरीर यस्य, कोढी—

* कचन हुणो–साव सुद्ध, नीरोग—

हूँ प्रठै ई भोमि पर सरग सूँ ही नोरी हू पण ईं भोमि र वटी वटीं र माणस म जोऊँ ता कठै वठै ही बी रा पाणी वरडो गन्ळीज्याडा दीस । बी म मिस्टाचार रा भैंसा राफडराळ वरैं, कुसुवारय रा वाळो वोभो वादो इसी सिडै वैं देवणा नैं जो ही का वरैंनी, बी वेळा म्हारैं रूँ रूँ म इसी पीड हुव जाणूँ एकै सागै सो सो बिच्छू डक मारता हुवैं । गोरधन, ग्र बटा वेटी ग्रा क्या जाणैंनी वैं सोनैं चाँदी सू, धामैं गू ग्रेटमेल वरत ग्रावासा सू, माटर बगला हवाराज्या सूँ, वाँरी भूख वदेई वो मिट सवैंनी, ग्राज ताइ ता कीरी ही मिटी सुणी नी ।

ग्रण धरती जे थाडो सो ही पसवाडो फोरलिया तो ग्रापा ग्रर ग्रापा रा ग्रै घर गुवाडी रत रैं रमतिया सूँ वगा बीसर जासी, पछ काँई हुयो वाँरो ? जे ग्रण थोडी सी ही फूँक मारी तो ग्रापाँ वागद रा टुकडा ग्राँधी म उडै ज्यूँ कठै ही उडता दीखस्याँ । घणी ही दफै इसी हुई है– ग्रोजूँ जे भळै हुवै तो कुण रोकैं ? इ र एक हलर्क म ही मानखो प्रल री गाद म पूगैं । सागर जे दो पाँवडा ही ग्राग बधजावैं ग्रर नद्या जे च्यारागळ ही मूँ फोरलैं तो मानखैं री चीख बी री वळभळ को सुणीज नी । फेर ही ग्रापा इस्या वेपरवा वैं जूत पडैं पूछा काटवाळी कठ ! गोरधन ! ग्रापा ग्रापणी स्याणप सूँ ही वा जीवा हाँ नी भला । मौत सू डरचाँ बा छोड देसी, ग्रा स्याणप नहीं, गूँग है पण खैर, ग्रबार री घडी इ देस रैं मानखैं री भेळप ग्रर भाइचारो देस, म्हारैं इया जचैं कं इ देस री भोमि वानी कोई वाणी ग्राँख सूँ ही को देख सकनी । जगदीस ग्रर रामेसर रा ग्रापा क्रिरोडूँ चेला चाटी हा रे । इसी बेळा री मौत न ग्रापा बरदान सी वारही समभा ग्रर जीवण न राजगिद्दी सूँ ही बसी । ग्रापणी ग्रा मा वडभागण है–सूती सुख री लराँ लेवो, पण एक बात सूँ ग्रोजूँ डरूँ रे गोरधन ! ग्रापा म ही काई फूट घाल, लालच रो टुकडो नाँख ग्रापरो सिट्टो नही सक्ल । जे इसी बात कठै ही हुगी तो—ग्रापण मूँ रो काळमिस भळै लाख सेवा री साबण लगायाँ ही को ऊतर नी

भलो, अर, वीं काळमिस री सूग सूँ, इतियास रै वा पाना नै, आवण आळी पीढी रो देखण नै जी ही को करैलो नी। इ वेळा तो आ ही बात सोचण री है रे। बारलै वैरी सूँ इत्तो डर को हुवैनी, जित्तो ग्दळया पछै घर आळै सू।' लिलाड पर हाथ राख'र नानी एकर चुप हुगी, जाणूँकी थरगी हुवै। थोडी ठैर, भळै बाली, 'अच्छा, बता गोरधन, आपा नै घणा डर की सू?'

'चीण सूँ।'

'जा, रे जा तै तो साचेली वामण सपमपाट आळी ही कर दिखाई। हूँ पछै इत्तीताळ म्हारै माईता नै इया ही रोई?'

मैं की थावस सूँ काम लेंर कैयो, "किया नानी?"

किया काई म्हारो सिर, आपा नै न डर चीण रो अर नै बापडै पाकिस्तान रो ही—अर भळै जूँ जित्तो ही नही। आपा नै ता ग्दवद सगळा सूँ मोटो डर है एक आपा सू ही।'

'आपा नै आपा सूँ ही डर, नानी म्हारै ता की समझ म आईनी?

'नहीं समझ मे आई तो चोखी ही बात है, म्हारो तो दूखै है सिर, लारै सूँ लगा'र अबार ताइ तो देखलै, आँख खोल'र, अर आगै टैम आवै ज्यूँ ज्यूँ देखतो जाए, अर समझतो जाए।'

'नानी, आज थारै मूँ सू इसी, सतोल बाता सुण म्हारो इस्यो जी सोरो है कै तूँ पूछ मत।'

'ओ तो थारो प्रेम है रे, नानी तो कुमाणस सागण ही मर।'

"मेवै अर मिसरी आळै ईं देस री होड हुवै? अठै री माटी री तो मैक ही छोड दे तूँ। ईं रै कण कण रो मोल अर मिठास ही अनोखी अर अलबेली है। कित्तो लाबो चौडो अर रूप रो रूडो ओ देस है गोरधन?

मनै ठा है ई रो । मैं देख्यो है—म्हारी आंख्या सूं इ नैं । कळपना करता ही म्हारै चैरै आगै देस रो मुळक्तो मटकतो, चालतो चिलकतो चितराम घूमे जाणै देखती रहूँ बी नैं ।

बरफाण सूं ढक्योडा, आभै सूं बाता करता, दीपता अर दमदमावता पाड, मनै ईं धरती रा अडिग अटूट, सायर सपूत बेटा सा लागै जाणूं वै आपरा ऊजळा अभै माथा, माण सम्माण अर स्यान सूं ऊँचा कर कर बखाण करता हुवै कै की री मा सूंठ खाई है जिका बिना म्हासूं दो बात किया, इ धरती नैं तकै। बारा माथा कुण नीचा करै बता। कदे कदेई हूँ सोचूं, वा बरफाण को है नी वा तो औघड अवढर, कुपित महाकाळ रो विकराळ जटाजाळ है—कुण है इसो जिको जाण बूझ वीं लाय मे पगदेवै पण मनै तो बा डूंगरा रो चिलक्तो चैरो ही घणो चोखो लागै। वां रै नीचै ढाळा पर सावणी मनभावणी रूं रूं मीठो अर मस्त करती, मन रो ताप सताप हरती, गाम रमै जिसी चीड अर देवदार, साल अर सीसम री हरियाळी अर बी माकर गगा अर जमना सी गूंजती गावती 'हरहर' करती कित्ती ही नद्या ईं धरती रो कोड करती उतरै अर ईं सुदर समतळ भोमि पर मटक्ती मुळक्ती अटखेल करती अपसरा सी दोना हाथा सूं सुख सम्पत री सीरणी बाटती चालै। मैं ई देस री बा भोमि देखी है बेटा, एक बार नहीं तेरै तरै बार। इ अदरी आसण पर म्हारो बदरी विसाल है जिकै नै देख देख हूँ किरताय हुगी।"

मैं देख्यो नानी री सूनी आंख्या एकर इया सजळ हुगी जियां ना'ही सीपटी रा दो पाट आंसुवा री गगा म डुबोर काढया हुवै। मनै पिरतक मालम पड्यो, कै डोकरी रै जराजीण ई जूनै काळज रै कूंपल म, धरती रा अण मोवतो अथाग प्यार उमड उमड ऊंचो आवै, बो प्रीत रो दरियाव ई री आंख्यां रै कमजोर बांध सूं किया रुकै? दो मिनट नानी रुकी जाणूं आपरी थाकल कळपना नैं की विसराम दियो हुवै।

नानी आपरी आटी भळे उधेडन लागी जाणू अण आपरा टूटघोडा तार इतीताळ मे पाछा सांध लिया हुवै । बेटा ! हूं पुरी अर सेतबंध रामेसर गई हूं एकर नहीं च्यार च्यार दफै अर मईना मईनो वठै ठरी हूं । जाणू बी जगदीस रै तीर समदर मे साख्यात जगदीस सूतो है अर बीरा पग चापती लिछमी हर छोळ सागै दोना हाथा सू ईं देस री धरती धांती रातदिन, अणगिण अणमोल मोती उछाळै अर वा मोत्या नै मेळा कर कर बादळ, जिता वां सूं चालै ले ले टुरै अर ईं देसरी धरती पर उछाळ कर । जगदीस जावणियो जात्री वी समदर री भावना नै को समझै नी रे । वी र किनारै तू खडो हू तो तनै ठा लागसी कै वो थारै सागै गेडतो उछळतो कितै हेत सू बाथा घाल घाल मिलण नै आवै । ईं भोमि र मानखै पर वी रो प्यार तनै देख्या ही ठा लागसी । तू ईं धरती कानी मूं कर खडा हू तनै धक्ल ही को देवै नी–तू इ धरती ने पीठ दे, बी रै सामा खडो हुय तनै इसो गोतो देसी गिळचू पकड'र–कै पाछो घूड मे आवतो ठैर सी–आ पिरतख बात है बूड को बोलूं नी ।

दिक्खण रो समदर म्हारी मावडी रा पावन पूत पगलिया धोव—दिन रात एक सै प्यार सू —एक सी भाव भगति सूं—न कदेई थम्यो अर न कदेई थमण रो नाव लेव । उल्टो, रह रह, दूणै वेग सू —अथाग उमग सूं इया जोर चढै जाणू किया कुमारी सू लगा ठेठ हिमाचळ तांई एक बार बूढी मा नै साम्रीडो सिनान करा जीवण सफळ करूं । वो आवै पण इ विराट् वेस मे किया–अणमावतो मानसो वसै है नी अठै–ईं सातर मरजादा में ही मौज मानै बो, पण मन रो उफाण रूकै कदेई ? बी री बीं साधनै ले, मोती सो निरमळ जळ भर भर वेसुमार मुळकता मध उठै, अर जिया रामेसर नै जळधारा सींचण तीरथ जात्री ऊबड खाबड धरती नै पार कर, गगा रै पाणी री कावड भर भर कांधै लेजावै, ठीक बिया ही अै जळधर जात्री आपरै पिता सागर री साध नै ढावै । बी री बी साध नै

ˀारयात रूप म ही समझ, मा री काया किती हरी भरी अर सोरी हुव आ
तै सूँ छिपी थोडी ही है ? देख मा बटा रो इस्यो प्यार देस्यो त और
कठै ही धरती पर ?"

सजळ बादळी री दो टीकी सी, नानी री आँख्या एकर भळे बरसगी अर रमगी काना रै नीचक्र हु, गूदडती री धरती पर । आँख्या एक बार इया व द करली जाणूँ मामनै बी रै दिक्खण रो सम दर प्यार रा हबोळा दे गैंगावै अर वा ध्यान लगाया थी म डूबगी हुवै—सातवी भोमि नै पूग्योड स यासी सी ।

पळका पाछी खुली—फेर बोलण लागी धीरै धीरै, ई धरती री काया पर हूँ सगळ फिरली—मनै इसी काई जाग्या को लाधीनी—जठ इ भोमि रा प्यार मनै न मिलमो हुवै—मा है नी गोरधन ! माँ । असली मा तो आ ही है । अै नदी अर झरणा काँई है । मा रै अ तस रो अणमावतो प्यार—जको एकै जाग्याँ को मा सकनी—ईं खातर ही वो पत्थर री छाती न फाड बार आवै अर इ भोमि रै बाळक बाळका सूँ मिलण नै च्यारा कान फट । इ मा रा हाँचळ हमेसा जीवण रै, प्यार सूँ ऊफणै —आपर बेटी बेटा खातर अर जगत रै दूसरै भूखा तिस्सा खातर ! आ इसी है—ई खातर ही इ नै जगत प्यार करै । आपणी भोमि ! आज आ आपरो, प्यार पाछो मागै ईं खातर नही कै ई नै जरूरत है, नही, ईं म आज पैला सू सतगुणो स्नेह भळे भेलो हुग्यो—पलो पुराणो प्यार ले, बी रो सौ गुणो नु वो आपानै देणो चावै । बासी अर बोदी चीज ले—नुँई देवै—आपा समझा नही—गूँगाहा—ई सौदे मे आपणै काँई घाटो ? बता ? आपर बेटी बेटा नै आ अमर करणो चावै—आ मोटी है—मैमा इ री अपार है ।

गोरधन ! उतराधी काँकड पर बदरी बिसाल-आपरी बिसाल भुजावा सूँ आखै देस नै आप कानी बुलाव—गगा जमना बी री आरती करै—बाँरा गीत तूँ को सुणनी ? अगूणी पर जगतपति जग नाथ—सम दर

जिकै रो नगारा—ओळा रा डका, पून रै रूप म पवन पुत्र जिकै नै रातदिन बजा बजा आपा नै जगावै–पेर ही आपा सूता रैस्या । दिक्खण म भोळै नाथ रो डरू समक वेळा बाजै अर आथूणी सीव पर द्वारकाधीस रो बिसाल सख घूघाट करै । ब्यारू दिस मे भगवान खुद खडा ई भोमि रो पोरो देवै अर गगा जमना री आ विचली धरती जोगेसर री चित्त बिरती सी क्सीक समतळ अर स्सोरी है—म्हारै सावरियै री बसी वाजै वठै—इसी वेनीड व्यवस्था हूं जाणू गोरधन ! धरती पर शायद ही कठै ही हुवली ? तूं भण्योडो है रे—तनै ठा है इसो मनै थोडो ही है ।'

'नानी तूं धरती री वात करै–इसी व्यवस्था सग मे ही सायत् को लाधनी–इ खातर ही तो देवता ई भोमि पर आवण नै तरसै ।'

नानी आरया बन्द करली ही । बोलता बालता बी नै आज की थावेला आव हो–पण मनै इया लागी कै बा आज जिसी पैला कदेई को बालीनी । जाणू आज सुरसती सग सू उतर ई, रै कण्ठा मे वासा लिए बठी है–ई री पवितरता अर ई रै प्यार मे भीज'र । मैं देख्यो कै ई रै काळजै री कॅवळी भोमि म देस–प्यार रो बूरधोडो बीज आज एकै सागै ही रूख बण ऊंचा आयग्यो हुवै–जिक र भावा रा फूल आपरी भीणी सुगध म्हार कानी फैक्ता हुवै, अर म्हारै रूं रूं मे मिठास भरता हुवै । बी दिरस्त रै स्सारै हूं एक पखेरू बैठो हो । मनै इया लागती ही वै आ फूला री बा सौरम, इ साळ री सोव नै तोड, ठेठ समन्दरा पार, मैदान अर मरुथाम, पाड, पठार अर पगडाड्या मे हुती, ई देस अर ई देस सू वारै फर जासी । नानी री आरया बन्द ही । हूं वी र सान्त मुंढ कानी तकै हो—कदास बा वीं भळै वोलै तो ।

□

दस

हूँ नानी रै जुग जुग री कमाई थो गूणियो लियायो, मवै वीं कन न तो कोई मांयली गुराण ही अर न बारली ही। पट्टो म्हारै कनै हो ई। इ धरती सातर नानी रा इण प्यार दस, हूँ बोल्यो 'नानी ! जो पट्टो जे तूं चावै तो वीं नै कन वद, रुपीया रक्षा कोस म वां रिपियां सागै ही जमा करा नौंपूं ?'

नानी बोली 'किसी चीज री वडी पैला ही कटगी वी पर हूँ तुध सिरै सूं बा गानूं नी गिर जावै अर टावरा, थारो रूपो नुकसाण तूं सोच। थारी चीजां मार हूँ कद मांचस्यूं। क्या तूं पढ लिखो साव ही धान रो गोटलियो है ? थनैं इत्तर तूं जा भला ही।'

"नानी ! तनै साची कैऊं कै थारी आ बात सुण म्हारो वडो जीसोरो हुयो अर सागै चेतो न्यारो ।"

"आछी बात है बीरा हैंकारचा पछै ओगुण माफ हुया करै, तूं विराट रो मूंढो है—मूळ म मैं त सूं की को लुकोई नी—ओ ध्यान राखे, बात नै परवासै तो मूळ नै मत बीसरे अर न बीनै विगाडे–डाळा नै तोडे मोडे जे थारै कठै ही अडता हुवै तो । अवै तूं जा भाई, वोलण री म्हारी सरधा को है नी ।"

'नानी ! बीनो सो और पूछूं, चिडै नही तो ?"

"बोल ?"

"थारै बी बापूरी की सीध है तनै–मिली कदेई वां सूं तूं ?"

"मैं सुणी कै जोधपुर म्हाराज परताव सिघजी वां न सात गुना माफी करा आपरै गाज वमणो वगस दियो । वा वठै ही सरीर छोड्या बताव । हूं वां सू चावै ही तो ही को मिल सकी नी रे ।"

'ठीक', हूं आयग्यो ।

एक दिन दफ्तर म वैठो फाइलां रा माथा इया फिरोळतो हो जिया पावली गम्याडो काई कजूस, जाग्या जाग्या कियोडा धूड रा दूम्बा फिरोळतो हुवै । अचाणको हो एक छोटो वावू म्हारै कनै आयो–एक मईना री रियायती ड्यूटी मजूर करावण । चाळीस पैंताळीस सू कम नही हुणो चाईज—म्हारी जाण मे । नाम गोरधन राम सुथार । सुथार देखता ही, म्हारै मन रै तारा मे एक हळको सो दसो हलको लाग्यो, जिया आगणै, मे बाव्योडी तणी थोडी पून सूं हाल उठै । मनै नानी याद आयगी । नानी एकदिन आपरै वेटै रो नाव गो लेवती लेवती गिटगी । बी रै लिलाड म लोटै री लाग्योडी, दूज रै चाद सी एक सैंनाणी ही—वो गोरा हुतो ।

वी रै चैरै सामी दखता ही म्हारै मनमे एक सागी किता ही विचार आया अर गया क्दास हूँ सोचूँ जिवो ही हुव अर वा सुभती दिस्टी जुगा सू विछोडो हुयोड काळजे री कोर नै देख, एकर भळे ब्रह्मानन्द में डूब'र धन हुवै—सावरा थारी लीला रो पार, तूँ ही जाण ।

हूँ बोल्यो 'था रो सागी नाम गारधन ही है का भळे ही की ?

'छोटै थकै न मन गोधियो कैवता–अवार गोरधन है ही ।'

हूँ समझ्यो कै गोधियो, गारधनियो अर गोरधन किया हुया ?

मैं कैयो 'ठीक ।'

'ब्याह करधाडो है ?'

'हा सा'ब ।'

'मा बाप है ?'

'नही गा'ब ।'

'कितक बरस हुग्या बाप नै मरथा ?'

हूँ दस इग्यारै बरस रो हो जद ही ।'

'अर माँ न ?'

हूँ वी नै इया पूछण लाग्यो जिया अरुनी पुलिस आळो काई बिना परमिट रै पाकिस्तानी नै पूछता हुवै, का काइ बीमा कम्पनी एजेन्ट फारम भरावती बेळा की रा ही खोद-ब्याद सिर चाटतो हुवै । बण म्हार चैरै सामी इया देख्या जियाँ म्हारो पूछणो वीं नै अचरो अरण आवणो लागतो हुव । मैं वीं नै कैयो, 'हूँ पूछूँ जिकै नै बाबूजी, थे वावळ मत मान्या–वाँइ ठा थारै सूँ म्हारा कोई मोटा मुतळब सरन आळो हुवै । ध्यावस सूँ बठो अर पूँछूँ जियाँ बतायो–जिसो मॉन ठा हुवै ।

'मा तो म्हारी छोटे थकै नै ही छाड बीनै ही गई परी ही। आ बखनी वेळा, वी रै चैरै पर की लुगान दीस्यो,-वो देजा को हो नी। जे साची ह आ तो म्हार तारा मैं एकर करण्ट मो दौडग्यो—ताी एकर "यात हुग्यासी आ सोचर।

'आपरै मनै ही ?'

'नहा वा नै वाटदी ही, साग पचै म्हारी मुआ री वी पर हुमाकरी ही।"

'मन में सोच्या ठीक-भळे ईं सू ठीक और कांई ? गाडी एकदम नग पर है, बस लचाला इ नै-मन ब्यावस छोडए लागग्या। तो ही मी धीरज सू काम लियो—

'मुआ मरगी का जियै ?'

'मरगी।'

'याद आवै था नै—किया मरी वा ?'

'हा-चोखी तरै सूं—ऊंट सूं पडगी ही वा एकर—बीरा तिग टूटग्यो चालीज तो को होनी,-पून घिस।ळिय चालती-दो च्यार घरां सूं अडोई सी मांगती, दिन मे बासळ म नीमडै री छांयां पडी रैवती। छोरा चिगावता 'कट्टी कोवला रो साग'—चिडती गाळ काढती-भाठा बगावती। माथो खराब हुग्यो, छोरा किसा समझै हा ? बैतो और घणी चिगावता। करमा री बात-लार सूं गळगी—राध पडगी ही एक दिन पूरी हुई।

मन म सोच्यो 'ठीक, जिसी हुणी चाईज—वाही हुई। 'देर है थारै ठाकुरजी पण अघेर नहीं।'

'देर किना तो घडो भरीज कीकर ?'

'ईं री ग्रा ग्रवस्था देख, गाव रो कोई बूढो ठेरो की चर्चा करतो है लो ?'

'ग्रापरा वियोडा भोगै—एक दिन ग्रण, वापडी एक सूधी सुवावडी गऊ रो टोघडियो टाळ, वी नै कूटर कठै ही ग्रजाण दिस मे काढो ही—कुण जाणै वापडी वा कठै ही किया सिर फोड-फोड मरी है।'

'थारी पढाई लिखाई ?'

म्हारै वाप रो एक बामण धरम भाई हुतो—केई दिन वी रै ग्रठै रैयो—पछ, एक दिन वण मनै ग्रापरै कोई सगै परसगी एक मास्टर कनै छोड दियो। हूं दिनूगै सिझ्या वी रै घर की काम धघो कर दवता ग्रर दिन म पढतो। ग्राठवी ताई पढ'र नौकरी करली।'

ग्रवै थारी मा हुव तो थे ग्रोळख लो ?'

नही।'

नाव गाव मन ग्रौर की को पूछणा हा नी—कारण नानी रै म्हार पैला वाचा टुयोडा हा। हूं बोल्या, 'बाबूजी ! थे म्हारा मामा लागो हो, किया ग्रर कद पछ ग्र वाता ग्रापा पछै कदेई करस्यां। ग्राज सिझ्या थांनै म्हारै साग गाव चालणा पडसी—ग्रठै सूं ग्रक्रा सा कासडा दो एक है कवळा समझो ता तीन समझ लो वां हा भरली।

चवदस री सिझ्या ही। ग्रामै री जड मे ग्रगूणं पास चांद निकळग्या हो। म्हे मामो भाणजो धीमै धीमै साइकला पर वगै हा। चाद न देख नानी री राम कथा रा पाना म्हारी ग्रांख्या ग्रागै नाचता हा। म्हारो मन कैवतो हो देख, प्रभु रो मगळ विधान कितो विचित्र है—पैंतालीस साल पैला जिकी चीज मे वी रो जी ग्रटक्यो हो-जिक खातर वा रात दिन रोवती विलताप करती ग्राज या ही चीज वी कन ग्रापे ही जाव

अर वा ही बी वेळा मे, जद लौ बुझण आळी है। बी रो ई नै काई स्वाद आसी ? नाक गळ्या पछै नथ काई कामरी ? नानी ठीक कैवती, 'गोरधन! आदमी चावै जिकी को हुवैनी—नही चावै बा हुवै'—आदमी री आ कमजोरी जितै ताई रैसी—बठै ताई भाग अर भगवान दोनू रैसी र ।' ज आ वात सई है ता हूँ देखू—बी री प्राथना मे किती ताक्त ही वा आख्या सू देख ले सी।

मोडा सा म्हे पूग्या। खा पी, आडा हुग्या। दिनूगै सूरज ऊग्या सू पला नानी कानी टुरचा। एक कानी चाद रा मूँढो पीळिय रै रोगी रा सो-तारा बुझता सा बापडा, तो दूजै कानै-चूँ कूँ रा पगलिया करती ऊपा-अर बी रै स्वागत सत्कार मे प्रीत रा गीत गावता पछी। मस्त मधरी जीवण बाटती पौन। एकरै सोच अर दूजे रै हरख-आ ही दुनियाँ री रीत है अर जिको हरख सोग सू यारो वो दुनिया र धरातळ सू इतो ऊँचो जठ बी नै अठली लाय री झळ को पूगैनी। बी रा दरसण करण नै देवता धरती पर उतरै। जे नानी आज जात्रा पर टुरगी तो बा इ कोटि सू कम किया ?

मैं बतळाई—'नानी ?'

म्हारै सामनै आँख करी, होळै सै कँयो, 'हाँ भाई ! टमसर आयग्यो तूँ।'

हा नानी !'

'गगाजल मगा अरकी तुळछी ?'

'इसी काई बात है नानी ! इया काई हुवै ?'

नानी को बोली नी। आख्या बन्द करली—जाणू म्हारी अणसमझ पर—आख मीचण मे ही बी नै लाभ लाग्यो। 'अबार मँगाऊँ नानी ?' मैं कयो। इत्तै मैं म्हारी मा—गाव री और लुगाया पताया आवण लागगी। ठा तो हो ही लोगा नै।

'नानी ! आंख खोल तो ? खोल ली वण । बी रै सामनै पताळीम साल रो एक आदमी खडो हो–सात–सीधो । 'नानी ! थारो गोधियो है भो ।' देव तो ईं नैं । वण एकर सामो देख्यो । आपरो कापता सो हाथ ऊंचा करचो । बी री आगळया चैरैं रैं दूज रैं चांद सैं निसाए पर जा'र ठरगी–फेर जीवएै कान ऊपरनैं पासै–मैं देख्या वठै चिणैं जितो एक मस्सो हो–नानी एकर भळै आंख खोली–पाछी बन्द करली–आख्या में सूं च्यार आसू निकळया अर गूदडतो म रमग्या । जाणूं बस अ इता ही आंसूं बी र बाकी बच्योडा हा जिका नाख दिया अठ ही । सायत राई जिती सी ममता री आ गाम ही, बी रैं माणम मे तिरै ही बा ही निकळगी । माणस अब दपण सो हुग्यो हा जिकै म आपर सावरियै नैं आंख माच माय री माय दसो भला ही । हँसी री एक झीणी सी लकीर बी र होठा पर खिची अर सगळै चैरै पर रमगी ।

हूं देखूं आ लकीर ई बार री ही कै जुगा पैला एक दिन वण आपरैं गोधियै खातर, आपरैं माळाराम नैं घणी घणी विणतीकरी–रो रो'र, आज वण आपरी आंख्या सूं बी बिणती नैं फळती फूळती न्वली अर बी नैं नचा हुग्यो कै बाळजै सू निधोडी विणती कदेई कूडी का हुवनी । वा लालसा ओज्ं माणस म पळै ही–बी नैं आज वार काढ, बा नियां राजी को हुवै नी–जरूर बी रो रूंरूं आज हंस्यो है अर इसा हंस्यो है क जीवण म विसा कदेई नही ।

एकर भळै आख खुली—आपरैं सावरियै रैं पगा कानी । भळै बन्द हुगी ।

तुळमी गगाजळ दियो ।

आंख्या बायरो चिडियो चाच खोलैं नियां मूं खोल दियो वण ।

'नानी ?'

एक अधूरी सी हिचकी आई वीनै ।

'नानी ?'

नानी भळे को बोलीनी ।

एक अचल साति अर अखण्ड सतोष वीर चैरै पर रमै हो । च्यारा कानी गाव रो मानखो भेळो हुयोडो कीरतन करै हो-'जय सियाराम, जय जय सियाराम'—लागवाग आणन्द मे आपो भूल्योडा सा लागै हा—एक आदमी पगाणै खडो हो—वीरी आख्या सू मोती पड पड नानी रै चरणा पर चढै हा ।

□

'कीं अणचींती औरʼ

गुलाब रै गुच्छ सी नानी झडगी अकाळ मे ही नही पूरी पकर। पण, ही जिकै सू ही घणी मीठी बा आपरी मैक छोडगी, खाली म्हारै मन मे ही नही—ईं विसाल धरती री नाचती कूदती माणवी चेतना म न्यारी। ईं खातर, कै वीनै झडया पछ जीएँ री जुगती आवै ही। स्याणी ही, इ वास्तै जीरण रो जावतो पैंडा करगी बा। सुवास छोड अर जाणो ही तो झड्याँ पछै जीणो है।

व द गूँघटै बा आई, अर लोकलाज रो गूँघटो लारै मेल, खुल्लै मूँढ गई आपरै मालक वनै। साव अडोळी, उदास, दुराँ सूँ दाझ्योडी, नाड नीची निया, वा आई पण गई जद माळ माळ मोती, सोळै सिंगार कियोडी हँसती मुळकती, रमती खेलती नैणा मे नेह, पाना-फूला, कितीही सहेल्या सायै ले रमक भमक करती, आपरै मालक कनै गई। वी सिंगार अर साज सजावट खातर, वण अठै साधना करी जुगा ताँइ एक सिरीसी। मळ-मळ न्हाई—रगड रगड मैल उतारघो, घणी उमाई, पछै गई बा सुरग सासर, वीनै आपरै मालक नै रिभाणो अर राजी करणा आवतो हो।

राजी हुयोडो–वीरो मोटयार वी नै बाथां मे भर, बी पर प्यार सूं ढुळ-ढुळ पडसी—सावण रै लोर सो। गमगमाट करतै फूला रो एक गजरो,– इसो गजरो, बीरै गळै मे घालसी जिकै री मैक दिस–दिस फूटसी। कैसी, बीन, माग–जी भर मांग। काइ देऊं तनै म्हारी चिर सायण अमर सुवागण स्याणी—धरती री ग्रासीस ले र ग्राई है तूं। तैं वठै धरती रै कोड मे उछळतै बूंदत समदर म, लील पडती ग्रर लैरावती धरती री ग्रगाडाई मे, परवता री चिलकती चमकती चोटघां म, वठै रै हर नद निरझर-रज रज मे, त म्हारा दरसण कर धरती रा गीत गाया है–ईं खातर तूं मांग माग म्हारी स्याणी! मन चीत्यो मांग–तनै कांइ देऊं?

बींर रै रू मे एकर सुख रा सो सो सागर उछळसी। वा इसी मुळकसी जिकै री वत्तीगी रो उजास दस देवता ग्रचूम्भो करसी ग्रर प्रीतम इसो लट्टू हुसी कै 'माग सोइ देऊं' तो ही थोडो। वा ग्रणभूली सी कैसी, उतावळ म नही, सोच समझ'र, कै पाछी थी धरती रै मुळकतै प्यार पर ही उतार मनै—वी सागण धरती रै ताळ देवतै प्यार रै सागर पर उतार मन–जठै हूं जुग जुग ताइ नाचूं—जी भर नाचूं–म्हारा लीला लैरी जीवण धन! प्यार रो सागर, इ धरती रा गीत गावती ग्रसरय मानवी चेतना री निरमळ बूंदा रो मेळ ही तो है। बां बूंदा सागै हूं नाचूं—जी भर नाचूं।'

'धरती पर पडता ही वा बूंदां रो वेस वदळै ग्रणगिण रूपा म। बूंद एक बेस ग्रणगिण। कोई बात नी भेज भला ही, तूं मनै सगीन लिया सिपाई रै वेस मे, हळ पर हाथ दियां हाळी रै बेस मे, दिन रात मैनत करणिय मजूर रै वेस मे वा सघ ग्रणविधवा रै वेस मे। थारै गाभो किसो एक है तूं कैसी बो ही पैर सूं ग्रर राजी राजी पैर सूं पण पाछी धिरती इयां ही सजधज हरखे कोडे हँसती मुळकती ठमक ठमक ठमकै सूं बी धरती

री आसीस लेर, जे थारै कनै आऊँ तो अठै पग धरण दिए नही तो पाछी वठै ही पटकै बोढ रो बीडो कर, अणन्त-अणन्त जिया जूण म। प्रीतम कैवी, 'तथाऽस्तु' अर नानी पाछी इँ धरती पर कुण जाणै किस्य गाभा मे है, पण है जरूर—इ धरती रै कण कण सूं हेत हो बीनै।'

इँ धरती री आसीस ले जिको विदा हुवै जाणो नाम ही बीरा है नही जिक न तो बिदा करणो धाडो ही है—छूट'र काढणो है, आवनी भलै इसी अळवत वठ ही पाछी अठ ही नही आ वळै।

मैं बी सागै धुळ धुळ घणी ही वाता करी पण एक दा वात हूँ इसी पूछणी भूलग्यो जिकै बिना नानी री राम ज्या रै सुवाद मे मन की फीकास लाग्यो। नानी किती'र भणीगुणी ही आ पूछण री तो मन जरत की ही नी। इत्ती हूँ जरूर जाणग्यो कै बा म्हारो सेर पकड सूँ दा आँगळ ऊँचो भलां ही हुवो, नीची को ही नी। कंई बार तो बण मनै की सायरो दियो जद ही बठै ताई नावडघो हूँ, अर केई बार बण साव अनफिट ही कर दिया मनै, म्हारो मूँ' सूक्य.८ सिकळियै सो उतरग्यो बीरो सज गाभा आगै। पछ फेर, हूँ बीरै ग्यान रो थो मा लेवतो ही किंयां?

नानी री कथा सागै एक पात्र बूढो भोफरो वालो कुत्ता हो—धरमराज सागै जिया सदेह साच हुता। बीनै साव सूको छोडणो ठीक को होती। अचूम्भै री वात आ हुई कै नानी री रथी जिया ही ऊँचाई कुत्ता ही मसाणा वानो सागै भूँकतो वहीर हुयो—कुण जाणै बा रोवै हा का कीरतन करै हो—वठै ताइ तो म्हारै मन म इसा की उथळ पुथळ मचानी, म्हारै मा ही जी म रई कै जिनावर मे किसी अपणायत को हुवनी। बाळ पणैं सूँ बूढापै ताँइ जिक साग रैया आज विछोड री वेळा, बी खातर जे रोनै रिणकै तो अचूंभै री काँई बात? घणी उथळ पुथळ तो जद मची कै नानी नै म्हे दाग देयर जिया ही टुरघा मनै कण ही कैयो कै, 'गोरधन! कुतियो तो आप मरग्यो दीसै।'

'है।' मैं कयो।

मैं ही नहीं, म्हे सगळां ही अचूंभो कियो—आंकी नानी री मौत सागै इ रो कांई सम्बन्ध—ओ की ठा लाग्योनी। लागण रो रस्ता ही कांई ?

नानी रै हिडदै म हूं देखूं भगवान सूं ही बेसी—भगवान री रम्योडी इ भोमि रो हेत हो—इ।रै कण कण सूं बीनै अणमांवतो अथाग सनेव हो—कारण जाग्या जाग्या बीनै इ धरती रो सनेव खूब मिल्यो हो—या मिल्याडो पवितर प्यार ही तो सौ सौ गुणो बी म बध्यो अर गौरीशंकर सू रामेसर तांइ बधतो ही गयो। इ खातर ही मैं बीरै दियै पट्टै नै पैला तो बीरै बेटे नै थाम्यो, पण साव नैकारा करदियो जद मैं बीनै बेचवट रकम नै 'रक्षाकास' म जमा करा दी, बी पळोथण घर रो भेळ'र। नानी तो लेणदेण गी ईं धरती मूं ऊंची उठगी ही। बी री साळ म जितो ही अडगो हो वेचवट पर्म्या ठौडमर पुगा दिया। इ सूं म्हारो जी मोरा तो हा ही, हूं देखूं ईं सू नानी री मूळ मनस्या नै की पोखण ही मिल्यो है। वियां समझो जणा घन धण्या रा हा गुवाळियै रै हाथ मे तो गडियो हो। हिसा-वमर म्हान्ने मीर तो सोभा मे ही नहीं हुणो चाईजै। नाली, टेण री एक अधग्वळ पेई बचगी। बीनैं मैं नॉटरी रै लिफाफै घाळै जिया या कोई मारगू मारग मे मिल्यै बटुवै नै खोलतो हुवै जिया—बडै हरख सूं खोली। गोच्यो इ म भत्रे की न वी सुरत्खण मिलली का कांई पूर-पल्ला का कोई कोई दूम-छल्लो। वी मे पैमसल रा दा टुकडा—को च्यार तिरयोडा पुस्टाबाट अर खामा सारा पाना जिका मे केई पमसळ सूं अर केई स्याई सूं लिख्योडा हा। पानां ढगसर तो जचायोडा को हा नी पण वां म सू घणाखरा मे, नानी आपरी कथा हो मांड राखी ही। केई केई थळ तो हुबहू बै ही हा जिका मनै सुणाया हा। केई पाना इसा हा जाणूं बण बीन

जीवण रै लारलै एक दो बरसां पैला ही लिख्या हा, कारण बां मैं बीर हाथ री धूजणी, सामी चिलक ही। केई इध्याव अधूरा हा। कोई पाव पाती पाना अग्यात री आख्या हुठ हा। सोचूँ, का तो नानी बांन कठ ही टेर दिया हुवैला अर का आजू वै वठै ही खूणैं खचूणैं काई बुगचियैं म बांध्या पड्या हुवैला कुण जाणैं कसारया दोपारो करगी हुवैं तो ही ठा नी। ऊपर ही ऊपरलैं पानैं पर लिख्याडो हो 'हैं जिसी श्री किसनारायण।'

□